कार्यालय, मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी
समग्र शिक्षा, ब्लॉक–भीण्डर (उदयपुर)

संकल्प-2022

(एक अभिनव पहल)

प्रश्न बैंक

हिन्दी साहित्य

कक्षा - 12

बोर्ड परीक्षा परिणाम में गुणात्मक एवं संख्यात्मक उन्नयन
हेतु अभिनव कार्ययोजना के तहत् निर्मित

मुख्य संरक्षक

कानाराम , IAS

निदेशक, माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

एन्जिलिका पलात
संयुक्त निदेशक
स्कूल शिक्षा, उदयपुर

ओम प्रकाश आमेटा
मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी
उदयपुर

संरक्षक

रमेश सीरवी पुनाड़िया, RAS
उपखण्ड अधिकारी
भीण्डर,उदयपुर

श्रवण सिंह राठौड़, RAS
उपखण्ड अधिकारी
वल्लभनगर, उदयपुर

मार्गदर्शन

महेन्द्र कुमार जैन
मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी, ब्लॉक भीण्डर, उदयपुर

भेरुलाल सालवी
अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

रमेश खटीक
अति.मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी

गिरिश चौबीसा
संदर्भ व्यक्ति

महेन्द्र कोठारी
संदर्भ व्यक्ति

संयोजक

दिलराज सिंह राजावत , व्याख्याता, रा.उ.मा.वि. मेनार , उदयपुर

CBEO BHINDER

अनुक्रमणिका

S.NO.	TEACHER NAME	SCHOOL	TOPIC
1	DILRAJ SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MENAR (223199)	संयोजक
2	ARUNA JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL ADINDA (223191)	कहानी नाटक रचना प्रक्रिया
3	SUMITRA SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AMARPURA JAGIR	काव्यांश परिचय
4	SALIGRAM SINSINWAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AMARPURA KHALSA	केदारनाथ सिंह
5	DINESH CHANDRA CHOUBISA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BADGAON	कच्चा चिट्ठा
6	PAWAN KUMAR SEN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NARAYANPURA (223160)	असगर वजाहत
7	GOVERDHAN LAL CHOUBISA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BAGGAD (223189)	विष्णु खरे
8	ANIL RAGHAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL PURIYA KHEDI (223209)	रचना खण्ड
9	VINOD KUMAR GANGAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BANSDA (223155)	पत्रकारीय लेखन
10	YOGENDRA SINGH BHATI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BARODIA (223157)	संयोजक
11	VEENA ARORA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BATHARDA KALAN	तुलसीदास
12	TULSI RAM JAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BATHARDA KHURD	संवदिया
13	LATA SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL BHOPA KHEDA (223172)	कविता नाटक
14	LALIT SEN	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL CHARAGDIA	काव्य गुण
15	UPMA JOSHI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DAROLI	सुमरिन के मनके
16	KAILASH CHANDRA MEGHWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHAMANIYA (223211)	छंद
17	PRAHALAD KUMAR CHOUBISA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHARTA (223153)	आरोहण
18	HEMLATA AMETA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHAWA (223196)	रामचन्द्र शुक्ल
19	SANJAY PRAKASH JHALAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL DHAWADIYA (223168)	विशेष लेखन
20	CHANDRA BHANU VYAS	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL GUNPADI (223180)	विद्यापति
21	KAMALA SHANKAR MEGHWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL HINTA (223169)	अलंकार
22	PREMLATA AMETA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KARANPUR (223206)	अपना मालवा खाऊ उजाडू सभ्यता
23	RADHA KRISHNA CHOUBISA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KEDARIA (223154)	छंद
24	VIJAY LAXMI RAJPUT	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHARSAN (223194)	काव्य दोष
25	DURGA CHOUBISA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KHERODA (223197)	पत्रकारीय लेखन
26	DEVI LAL MEGHWAL	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL KUNDAI (223173)	सूरदास की झोपड़ी
27	BRAJPAL SINGH	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL MAL KI TOOS (223182)	अपठित काव्यांश
28	ISHWAR LAL DAULAWAT	GOVT. SENIOR SECONDARY S. MODI	अपठित गद्यांश
29	NAVAL CHAND PRAJAPAT	GOVT. SENIOR SECONDARY S. MOTIDA	जयशंकर प्रसाद
30	ROMA KUMARI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL AASAWARA (223186)	विचार अभिव्यक्ति के माध्यम
31	NEHA RATNU	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL NANDWEL (223185)	दूसरा देवदास
32	RAJENDRA PRASAD VYAS	CHATUR GOVT. S,S,S.KANORE (223217)	अपठित गद्यांश
33	AKHILESH KUMAR SHARMA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL RUNDERA (223201)	अंतराल
34	MOHAN LAL CHOUDHARY	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SALEDA	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
35	MUKESH KUMAR DHAKAR	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SARANGPURA	निबंध
36	ARUN KUMAR SAINI	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL SAVNA (223175)	अज्ञेय
37	RANJEET SWAMI	GOVT. SENIOR SECONDARY SINHAD	निर्मल वर्मा
38	KAMAL KUMAR JAIN	GOVT. SENIOR SECONDARY TARAWAT	अंतरा
39	SHAEED HUSSAIN PINARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL VANIYA TALAI (223177)	पत्रकारीय लेखन
40	ROSHAN LAL SARGARA	GOVT. SENIOR SECONDARY SCHOOL - GOTIPA (223207)	अलंकार

CEO BINDER

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान

परीक्षा 2022 के लिए संक्षिप्तिकृत पाठ्यक्रम

हिन्दी साहित्य

कक्षा 12

इस विषय की परीक्षा निम्नानुसार है–

प्रश्न–पत्र	समय (घंटे)	प्रश्न–पत्र के लिए अंक	सत्रांक	पूर्णांक
एक पत्र	3.15	80	20	100

अधिगम क्षेत्र	अंक
अपठित बोध	12
रचना	16
काव्यांग परिचय	8
पाठ्यपुस्तक : अन्तरा भाग–2	32
पाठ्यपुस्तक : अन्तराल भाग–2	12

समय 3.15 घण्टे **पूर्णांक :80**

इकाई का नाम **अंक**

अपठित बोध : **12**

1. काव्यांश पर आधारित 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 1X6 = 6
2. गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनांतरण, शीर्षक आदि पर 6 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न 1X6 = 6

रचनात्मक एवं व्यावहारिक लेखन **16**

1. निबंध (किसी एक विषय पर विकल्प सहित) चरु0 6

अभिव्यक्ति एवं माध्यम पाठ्यपुस्तक पर आधारित'–

2. कविता/नाटक/कहानी की रचना प्रक्रिया पर आधारित प्रश्न (60 शब्दों में उत्तर) 1 प्रश्न X 3 अंक 3
3. पत्रकारीय लेखन के विभिन्न रूप और लेखन प्रक्रिया (30–40 शब्दों में उत्तर) 2 प्रश्न X 2 अंक 4
4. विशेष लेखन–स्वरूप और प्रकार (20 शब्दों में उत्तर) 3 प्रश्न X 1 अंक 3

काव्यांग परिचय **8 अंक**

(क) काव्य–गुण, काव्य दोष 2
(ख) छन्द 2
(ग) अलंकार 4

पाठ्यपुस्तक – अन्तरा भाग–2 32

(1) 1 व्याख्या गद्य भाग से (विकल्प सहित) 5
(2) 1 व्याख्या गद्य पद्य से (विकल्प सहित) 5
(3) 2 निबंधात्मक प्रश्न से (1 प्रश्न गद्य से एवं 1 प्रश्न पद्य भाग से विकल्प सहित) (100 शब्दों में उत्तर) 2 प्रश्न X 5 अंक 10
(4) 2 लघूत्तरात्मक प्रश्न से (1 गद्य से एवं 1 पद्य भाग से) (30–40 शब्दों में उत्तर) 2 प्रश्न X 2 अंक 4
(5) 4 अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न से (2 गद्य से एवं 2 पद्य भाग से) (एक पंक्ति में उत्तर) 4श्न X 1 अंक 4
(6) किसी एक कवि या लेखक का साहित्यिक परिचय (80 शब्दों में उत्तर) 1 प्रश्न X 4 अंक 4

पाठ्यपुस्तक अन्तरा भाग –2 से परीक्षा 2022 के लिए सम्मिलित अध्याय कविता खण्ड आधुनिक

जय शंकर प्रसाद (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेत (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
केदारनाथ सिंह (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
विष्णु खरे (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)

कविता खण्ड प्राचीन
तुलसीदास (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
विद्यापति (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
केशवदास (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)

गद्य खण्ड

रामचन्द्र शुक्ल – प्रेमधन की छाया स्मृति (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी – सुमिरिनी के मनके (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
ब्रजमोहन व्यास – कच्चा चिटठा (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
फणीश्वरनाथ रेणु – संवदिया
असगर वजाहत– शेर, पहचान, चार हाथ, साझा (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
निर्मल वर्मा – जहाँ कोई वापसी नहीं (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
ममता कालिया – दूसरा देवदास (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)

पाठ्यपुस्तक – अन्तराल भाग–2 **12**

(1) 1 एक निबंधात्मक प्रश्न (विकल्प सहित) 4
(2) 4 लघूत्तरात्मक प्रश्न (30–40 शब्दों में उत्तर) 4 प्रश्न X 2 अंक

पाठ्यपुस्तक – अंतराल भाग–2 से परीक्षा 2022 क लिए सम्मिलित अध्याये
सूरदास की झोंपड़ी – प्रेमचन्द (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
आरोहण – संजीव (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)
अपना मालवा – खाउ–उजाडू सभ्यता में प्रभाष जोशी (सम्पूर्ण पाठ यथावत रहेगा)

CBSEBHINDER

पाठ– 1 लघु कथाएँ (असगर वजाहत)

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न –

प्रश्न 1. लघुकथा 'शेर' में शेर किसका प्रतीक है ?

उत्तर – शेर एक ऐसी व्यवस्था का प्रतीक है जो प्रलोभन एवं हिंसा के बल पर पूरे जंगल समाज में व्याप्त है।

प्रश्न 2. लघुकथा 'शेर' में शेर को किसका समर्थक बताया है ?

उत्तर – शेर अहिंसा और सह – अस्तित्ववाद का समर्थक है।

प्रश्न 3. 'साझा' कहानी का प्रतीकार्थ क्या है ?

उत्तर – पूँजीपतियों की नजर उद्योगों पर एकाधिकार करने के बाद किसानों की जमीन पर है। यह साझा कहानी का प्रतीकार्थ है।

प्रश्न 4. मिल मालिक ने दोगुना उत्पादन करने के लिए क्या किया ?

उत्तर – मिल मालिक ने दोगुना उत्पादन करने के लिए मजदूरी आधी कर दी और दोगुने मजदूर रख लिए।

प्रश्न 5. गधे ने शेर के मुँह में जाने का क्या कारण बताया ?

उत्तर – गधे ने बताया कि शेर के मुँह में घास का मैदान है और वहाँ मुझे घास मिलती रहेगी।

प्रश्न 6. असगर वजाहत के दो नाटकों के नाम लिखिए ?

उत्तर – असगर वजाहत के दो नाटकों के नाम – 'इन्ना की आवाज' और 'फिरंगी लौट आए'।

प्रश्न 7. अन्तरा पाठ्य-पुस्तक में संकलित असगर वजाहत की लघुकथाओं के नाम लिखिए ?

उत्तर – शेर, पहचान, चार हाथ और साझा

प्रश्न 8. हाथी ने किसान को क्या विश्वास दिलाया ?

उत्तर –हाथी ने किसान को छोटे जानवरों से खेती की रक्षा का विश्वास दिलाया।

प्रश्न 9. 'पहचान' कथा में राजा की सफलता का राज क्या है ?

उत्तर – यही कि अंधी, बहरी व गुंगी प्रजा एकजुट न हो पाए तथा प्रलोभन के आधार पर भुलावे में रहे।

प्रश्न 10. 'चार हाथ' कथा किस व्यवस्था को उजागर करती है ?

उत्तर – चार हाथ कथा पूँजीवादी व्यवस्था में मजदूरों के शोषण को उजागर करती है।

लघूत्तरात्मक प्रश्न –

प्रश्न 11. 'शेर' लघु कथा में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – शेर लघु कथा में लेखक ने शासन व्यवस्था पर व्यंग्य किया है। शेर व्यवस्था का प्रतीक है जिसके पेट में जंगल के सभी जानवर किसी प्रलोभन या लोभ-लालच के वशीभूत होकर समाते जा रहे है। शेर का प्रचारतंत्र मजबूत है। वह ऊपर से अहिंसावादी, न्यायप्रिय होने का ढोंग करता है किन्तु वास्तव में वह हिंसक एवं अन्यायी है। शासनतंत्र तब तक खामोश रहता है जब तक उसकी आज्ञा का पालन एवं स्वार्थ की पूर्ति होती रहे। जब लेखक शेर के मुँह में न जाने का संकल्प करता है तभी शेर दहाड़ने लगता है। इसके द्वारा लेखक यह व्यक्त करता है कि सत्ता तभी तक चुप रहती है जब तक कोई उसकी व्यवस्था पर उँगली न उठाए किन्तु जब कोई उसकी आज्ञा मानने से इन्कार करता है तब वह भयानक रुप धारण कर विरोधी स्वरों को कुचलने का भरपूर प्रयास करती है।

प्रश्न 12. 'साझा' लघुकथा में लेखक ने किसानों की बदहाल-स्थिति पर प्रकाश डाला है, स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – लेखक ने साझा लघुकथा के माध्यम से आजादी के बाद के किसानों की बदहाली एवं उसके कारणों पर प्रकाश डाला है। आजादी के बाद से ही उद्योगों पर कब्जा जमाने के पश्चात् पूँजीपतियों की नजर किसानों की जमीन एवं उन पर होने वाले उत्पादों पर जमी थी। प्रभुत्वशाली वर्ग अपनी कूटनीति द्वारा किसान को साझा खेती करने का झाँसा देता है। जिसमें मेहनत और लाभ साझा होने की बात करता है लेकिन जब लाभ लेने का अवसर आता है तब यह धनाढ्य वर्ग पूरी फसल हड़प लेता है। साझा कथा में हाथी उन्हीं प्रभुत्वशाली पूँजीपतियों का प्रतीक है जो साझा नीति पर अमल करते हुए सारी फसल खुद निगल जाता है और किसान अपनी बेबसी व लाचारी पर आसूँ बहाता है।

प्रश्न 13. लेखक जंगल में क्यों गया और वहाँ जाकर उसने क्या देखा ?

उत्तर – लेखक कहता है कि अचानक उसके सींग निकल आए, वह डर गया कि कसाई उसे जानवर समझकर काट डालेंगे। अतः वह उनसे डरकर जंगल की ओर भागा। जंगल में उसे एक पेड़ के नीचे शेर बैठा दिखाई दिया जिसका मुख खुला हुआ था। लेखक शेर से डरकर झाड़ियों की ओट में छिपकर बैठ गया। उसने वहाँ से देखा कि जंगल के जानवर पंक्तिबद्ध होकर शेर के मुख में चले जा रहे हैं और शेर उन्हें चबाए बिना ही निगलता जा रहा है। इन जानवरों में लोमड़ी, कुत्ते, गधे, उल्लू सब थे। जब उसने इन जानवरों से यह पूंछा कि आप लोग शेर के मुख में क्यों जा रहे हैं तो किसी ने उसे बताया कि शेर के मुख में हरी घास का मैदान है, किसी ने कहा वहाँ स्वर्ग है तो किसी ने उत्तर दिया कि

CBSE GURBHINDER

वहाँ रोजगार का दफ्तर है। इस प्रकार लोभ-लालच और प्रलोभन में फँसकर जंगल के जानवर शेर के पेट में समाते जा रहे थे।

प्रश्न 14. 'चार हाथ' लघुकथा में व्याप्त मजदूरों के प्रति हो रहे शोषण को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर – चार हाथ लघुकथा वर्तमान में पनप रहे मशीनी युग का जीता-जागता उदारहण है। चार हाथ कथा पूँजीवादी व्यवस्था में चल रहे मजदूरों के शोषण को उजागर करती है। मिल-मालिकों का लालच, मजदूरों के शोषण का प्रमुख कारण है। मिल-मालिक मजदूरों की स्थिति एवं हालातों का फायदा उठाकर एक के बदले में दो व्यक्तियों जितना कार्य ले लेते हैं। वे हर सम्भव प्रयास करते हैं कि मजदूर लाचारी और बेबसी में इतना दब जाये कि विरोध की स्थिति में न रहे और मिल मालिक के इशारों पर दुगुना उत्पादन कर दें। लेखक ने चार हाथ में मिल मालिक की इसी प्रवृति पर कटाक्ष किया है जो और ज्यादा उत्पादन के लालच में मजदूरों के दो अधिक हाथ लगवाना चाहता है। इस कार्य में सफल न हाने पर शोषण का दूसरा रास्ता खोज लेता है कि मजदूरी आधी करके दुगुने मजदूर रख लिये जाए।

प्रश्न 15. 'पहचान' लघुकथा में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – पहचान शीर्षक लघुकथा में निम्नलिखित व्यंग्य निहित हैं –

- हर राजा गूँगी, बहरी और अंधी प्रजा पसंद करता है।
- हर राजा चाहता है कि उसकी प्रजा बेजुबान हो और उसके खिलाफ आवाज न उठाये।
- प्रजाजनों के एकजुट होने से राजा को हानि होने की संभावना है इसलिये वह उन्हें एकजुट नहीं होने देता।
- राजा प्रजाजनों को यह झांसा देता है कि उसकी हर आज्ञा राज्य के हित में है और राज्य को स्वर्ग बनाने के लिये है।
- छद्म प्रगति और विकास के बहाने धीरे-धीरे राजा उत्पादन के सभी साधनों पर अपनी पकड़ मजबूत कर लेता है।
- राजा प्रजाजनों को यह झांसा देता है कि वह उनके जीवन को स्वर्ग जैसा बना देगा पर वास्तव में प्रजा का जीवन और भी खराब हो जाता है। हाँ, राजा अपना जीवन स्वर्ग जैसा अवश्य बना लेता है।

प्रश्न 16. खैराती, रामू और छिद्दू ने जब आँखें खोलीं तो उन्हें सामने राजा ही क्यों दिखाई दिया ?

उत्तर – खैराती, रामू और छिद्दू ने वर्षों तक आँखें बंद रखने के बाद जब आँखें खोली तो उन्हें अपने सामने सर्वत्र राजा ही दिखाई दिया। वे यह सोच रहे थे कि उनका राज्य अब तक स्वर्ग जैसा हो गया होगा किन्तु यह उनका भ्रम था। राजा ने अपनी स्थिति पहले से मजबूत कर ली थी और वही सर्वत्र व्याप्त था। यही नहीं वर्षों बाद आँखें खुलने पर वे तीनों एक-दूसरे को भी न देख सके। तीनों एक-दूसरे को भी न देख सके का आशय यह है कि उनको प्रजाहित का कोई काम दिखाई नहीं दिया सर्वत्र राजा का ही प्रभुत्व दिखाई दिया।

प्रश्न 17. 'शेर' लघुकथा में किस प्रवृति पर प्रहार किया गया है ?

उत्तर – 'शेर' लघुकथा में शेर व्यवस्था का प्रतीक है। शेर अंहिसावादी और न्यायप्रिय बनने का दिखावा करके चुप रहता है, और मुँह में प्रवेश करने वालों को निगल लेता है। शेर वस्तुतः सुविधाभोगियों, छद्मक्रान्तिकारियों, अंहिसावादियों और सह-अस्तित्ववादियों का भी प्रतीक है। प्रस्तुत लघुकथा में ऐसे लोगों की ढोंगी एवं स्वार्थी प्रवृति पर प्रहार किया गया है।

प्रश्न 18. 'पहचान' कथा आज के सत्ताधारियों पर कहाँ तक चरितार्थ होती है ?

उत्तर – पहचान कथा में राजा लोगों से आँखें बन्द रखने, कानों में पिघला हुआ सीसा डलवाने, होंठ सिलवाने को कहता है। आज के सत्ताधारी भी चाहते हैं कि जनता उनके कारनामे न जान पाए और अन्याय एवं शोषण का विरोध करने की स्थिति में ही न रहे। वे न देखे, न सुने और न ही विरोध कर सके।

प्रश्न 19. मिल मालिक के स्वभाव पर टिप्पणी करें।

उत्तर – मिल मालिक के दिमाग में अजीब-अजीब ख्याल आया करते है। जैसे सारा संसार मिल हो जाएगा और सभी लोग उसके नौकर हो जाएँ। वह लालची और निर्दयी किस्म का आदमी था। वह अपने मिल को सबसे बड़ा मिल और खुद को सबसे अमीर इंसान बनाना चाहता था। वह चाहता था कि काम खूब हो और उसके बदले मजदूरी कम देनी पड़े, ताकि उसका खूब मुनाफा हो सके। वह शोषण करने वाला व्यक्ति था।

प्रश्न 20. असगर वजाहत का साहित्यिक परिचय लिखिए।

उत्तर – श्री असगर वजाहत ने प्रारंभ में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेखन कार्य किया, बाद में जामिया मिलिया विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य करने लगे। असगर वजाहत ने कहानी, उपन्यास एवं नाटक आदि लिखे तथा नुक्कड़ नाटकों को नयी भंगीमा प्रदान की। इन्होंने 'गजल की कहानी' वृत्तचित्र का निर्देशन किया है और 'बूँद-बूँद' धारावाहिक का लेखन भी किया है। इनकी भाषा में गाम्भीर्य, सशक्त भावाभिव्यक्ति एवं व्यंगयात्मकता है। असगर वजाहत द्वारा रचित **कहानी संग्रहः–** दिल्ली पहुँचना है, आधी बानी, मैं हिन्दू हूँ आदि **प्रमुख**

नाटकः– वीरगति, समिधन, इन्ना की आवाज आदि **प्रमुख उपन्यासः–** रात के जागने वाले, कैसी आगि लगाई आदि। इन्होंने फिल्मों एवं धारावाहिकों के लिए पटकथाएँ भी लिखी है।

CBSEBINDER

पाठ 2 – कच्चा चिट्ठा

लेखक परिचय :– ब्रजमोहन व्यास का जन्म सन 1886 में इलाहाबाद में हुआ । आपने गंगानाथ झा एवं बालकृष्ण भट्ट से संस्कृत शिक्षा प्राप्त की वे 1921 से 1943 तक इलाहाबाद नगर पालिका के कार्यपालक अधिकारी रहे । सन् 1944 से 1951 के लीडर समाचार पत्र समूह के जनरल मैनेजर रहे 23 मार्च 1963 को इलाहाबाद में उनका निधन हो गया।

इलाहाबाद में नौकरी करते हुए वहाँ के विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय उनकी बहुत बडी देन है। संग्रहालय में लगभग दोहजार पाषाण मूर्तियाँ, पांच छह हजार मृण–मूतियाँ, कनिष्क के कार्यकाल की प्राचीनतम बौद्ध मूर्ति, खजुराहो की चन्देल प्रतिमाऐं सैकडो रंगीन चित्रों आदि का संग्रह है। उन्होने अनेक भाषाओं के लगभग 14000 हस्तलिखित ग्रंथों का संकलन इसी संग्रहालय के लिए किया । पंडित नेहरू को मिले मान पत्र तथा चन्द्र शेखर आजाद की पिस्तौल भी इस संग्रहालय में विद्यमान है। व्यासजी ने अपने परिश्रम एवं सूझ बूझ से कम से कम खर्च में अधिकाधिक प्राप्त करने के ढंग से पुरातत्व सम्बन्धी विभिन्न वस्तुओं के संकलन से विशाल संग्रहालय स्थापित कर अपने पुरातत्वीय ज्ञान एवं कौशल का परिचय दिया।

पाठ का सारांश

संकलित पाठ अन्तरा पाठ्यपुस्तक से लिया गया है। यह ब्रजमोहन व्यास की आत्मकथा का एक अंश है । इसका सारांश निम्नानुसार हैः–

1. लेखक द्वारा कौशाम्बी एवं पसोवा की यात्रा– इलाहाबाद के अपने कार्यकाल में लेखक ब्रजमोहन व्यास अपने अधीन संग्रहालय में पुरातात्विक वस्तुओं के संग्रह के लिए सदैव उद्यत रहते थे। वे जहाँ भी किसी स्थान की यात्रा करते वहाँ उनकी नजर हमेशा ऐसी ही वस्तुओं की खोज में रहती थी। वे ऐसी ही एक यात्रा पर पसोवा गये वहाँ से मिट्टी की प्राचीन मूर्तियाँ, सिक्के और मनके संग्रहित किये। वही उनकी नजर पत्थरों के ढेर पर रखी लगभग 20 किलो वजनी प्राचीन चतुर्भुज शिवजी की मूर्ति को भी लेकर आ गए। जब गाँव वालों को यह बात पता चली तो वे 15–20 आदमी अपनी मूर्ति को वापस ले जाने के लिए उनके दफ्तर पहुँचे । उन्होने न केवल मूर्ति वापस सौंपदी वरन् उसे बस अड्डे पहुँचाने की व्यवस्था भी कर दी। यह उनकी सहृदयता दर्शाने वाली घटना है।
   इसके दूसरे वर्ष पुनः कौशाम्बी यात्रा पर गये । वहाँ वे गाँव–गाँव नाले–नाले घूमे । एक खेत की मेड पर उन्हे बोधिसत्व की आठ फूट लम्बी सुन्दर मूर्ति दिखाई पडी थी, जो मथुरा के लाल पत्थरो से निर्मित थी । तब उसे दो रूपये का भुगतान कर मूर्ति को अपने साथ संग्रहालय में ले आये ।
2. फ्रांसीसी डीलर का आगमनः– एक दिन एक फ्रांसीसी – डीलर संग्रहालय देखने आया उसने बोधिसत्व की मूर्ति को देखकर उसे दस हजार रूपये में खरीदने की इच्छा जताई। लेखने मूर्ति नहीं बची । वह मूर्ति बोधिसत्व की उन मूर्तियों में से एक है जो संसार में अब तक प्राप्त सभी मूर्तियों से प्राचीन है। वह कुषाण सम्राट कनिष्क के राज्यकाल के दुसरे वर्ष स्थापित की गई थी। ऐसा लेख उस सिरविहीन मूर्ति के पाद स्थल पर उत्कीर्ण है। संग्रहालय के लिए नये परिसर का निर्माण :– लेखक ब्रजमोहन व्यास जी ने संग्रहालय में विभिन्न पुरातात्विक वस्तुओं का संग्रह अपने कार्य काल में निरन्तर जारी रखा जिससे अब भवन जो नगर पालिका में था, छोटा पडने लगा, अतः एक विशाल भवन की आवश्यकता होने लगी। लेखक ने अपनी सूझबूझ से एक संग्रहालय निर्माण कोष की स्थापना की जिसमें दस वर्षो में दो लाख रूपये की राशि एकत्रित हो गई। तत्कालीन जिलाधिकारी द्वारा कम्पनी बाग में भवन के लिए भूखण्ड लिया गया। इस कार्य का शिलान्यास पण्डित जवाहर लाल नेहरू से कराया गया। एक भव्य समारोह में पंडित नेहरू ने न केवल शिलान्यास किया बल्कि बम्बई के प्रसिद्ध इन्जिनियर श्री साठे द्वारा भवन नक्शा बनवाया एवं अपने विभागों द्वारा निर्माण राशि की कमी नही होने दी भवन बन कर तैयार हो गया । उसमें प्रदर्शित वस्तुओं का तत्कालीन मूल्य पन्द्रह लाख रूपये से अधिक ही होगा।
   इस प्रकार से अपनी दूरदर्शिता से लेखक महोदय ने एक नौकरशाह होते हुए भी पूर्ण मनोयोग से संग्रहालय का निर्माण कराने में अपने जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष व्यतीत किये । निश्चत ही यह हमारे देश की ऐतिहासिक धरोहर है।

अति लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1 " कच्चा चिट्ठा" आत्मकथा के लेखक का नाम बताईये।
उत्तरः– श्री ब्रजमोहन व्यास
प्र. 2 ब्रजमोहन व्यास किस पद पर कार्यरत थे
उत्तरः– ब्रजमोहन व्यास इलाहाबाद नगर पालिका के मुख्य कार्यकारी अधिकारी थे।
प्र.3 "कच्चा चिट्ठा" में श्री व्यास जी की किन– किन चारित्रिक विशेषताओं को अभिव्यक्त करता है
उत्तरः– "कच्चा चिट्ठा" आत्मकथाओं में लेखक की पुरानी वस्तुओं के प्रति पैनी दृष्टि मितव्ययिता, कार्य के प्रति निष्ठा, श्रम कौशल एवं वाक्पटुता आदि विशेषताओं को व्यक्त करता है
प्र. 4 कौशाम्बी एवं पसोवा नगर क्यों प्रसिद्व है
उत्तरः– कौशाम्बी एवं पसोवा नगर क्रमशः बौद्ध एवं जैन धर्मो के प्राचीन तीर्थो के लिए प्रसिद्ध है।
प्र.5 "कच्चा चिट्ठा" किस विधा में लिखा गया है

उत्तर "कच्चा चिट्ठा" आत्मकथा शैली की रंचना है।
प्र.6 आत्मकथा एवं जीवनी मे अन्तर स्पष्ट कीजिए।
उत्तरः– आत्मकथा मे लेखक स्वयं के जीवन में घटित घटनाओं का पूर्ण ईमानदारी से वर्णन करता है जबकि जीवनी में लेखक किसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा देश–समाज के लिए किये गए कार्यो का वर्णन करते हुए लिखा जाता है।
प्र. 7 ब्रजमोहन व्यास ने किन महापुरूषों की जीवनी की रचना की थी
उत्तरः– श्री व्यास ने लेखक बालकृष्ण भट्ट एवं पं मदन मोहन मालवीय की जीवनी का लेखन किया।
प्र. 8 इलाहाबाद संग्रहालय मे कौन–कौन सी भाषा के हस्तलिखित ग्रन्थ रखे गये है
उत्तरः– उक्त संग्रहालय में हिन्दी, संस्कृत, अरबी एवं फारसी भाषाओं में लिखे गये हस्तलिखित ग्रन्थ सहेजे गये है। इनकी संख्या चौदह हजार से अधिक है।
प्र. 9 संग्रहालय अवलोकन के लिए आए फ्रासिसी व्यक्ति ने क्या क्रय करने की इच्छा प्रकट की
उत्तरः– फ्रांसीसी दर्शक जो वास्तव में मूर्तियों का एक डीलर था बोधि सत्व को अति. प्राचीन सिर विहिन प्रतिमा दस हजार रूपये में क्रय करना चाहता था।
प्र. 10 लेखक का दक्षिण भारत यात्रा करने का मुख्य उद्देश्य क्या था
उत्तर :– लेखक ने सुन रखा था की दक्षिण भारत में ताम्र मूर्तियाँ एवं हस्तलिखित पोथियों की खरीद फरोख्त होती है। उन्हें किसी भी प्रकार से प्राप्त करने का मुख्य उद्देश्य था।

लधूत्तरात्मक प्रश्न

प्र. 1 "कच्चा चिट्ठा" पाठ के आधार पर बताईये कि लेखक ने संग्रहालय के लिए वस्तुऐं एकत्रित करने के लिए कहाँ–कहाँ यात्रा की थी
उत्तरः– लेखक ने संग्रहालय में प्राचीन वस्तुऐं एकत्र करने के लिए – कौशाम्बी, पसोवा, हजियापुर जैसे पडौसी गाँवो के साथ–साथ दक्षिण भारत के मैसूर, रामेश्वरम् तथा मद्रास की यात्राऐं की।
प्र. 2 इस पाठ में आए मुहावरे " मुंह में खून लगना " का अर्थ स्पष्ट करो–
उत्तर :– " मूंह में खून लगना " मुहावरे का शाब्दिक अर्थ है लालच आना। पाठ के सन्दर्भ में लेखक को कोई पुरातात्विक वस्तु मिलने पर वह उससे सम्बन्धित अन्य वस्तुओं को खोजने का लोभ करने लगता है।
प्र. 3 हजियापुर गाँव से भद्रमथ शिलालेख प्राप्त करने में लेखक को किन कठिनाईयों का सामना करना पडा
उत्तर :– हजियापुर गाँव से "भद्रमथ " शिला लेख को पुरातत्व वाले उठाना चाहते थे, लेकिन गाँव के मुखिया ने यह कह कर मना कर दिया कि यह शिला लेख इलाहाबाद संग्रहालय को 25 रूपये में बेच दिया गया है । पुरातत्व विभाग के मजुमदार ने इसकी शिकायत दिल्ली मुख्यालय में की गई तो वहाँ से लेखक को सरकारी कार्य में बाधा डालने की चेतावनी दी गई।
प्र. 4 जमीदार गुलजार के कुँए से लेखक ने कौनसी पुरातात्विक वस्तु प्राप्त की
उत्तर :– जमींदार गुलजार मियाँ के सजिले कुँए से लेखक को ब्राहमी लिपि में लिखा गया लेख दिखाई दिया। लेखक के निवेदन से जमींदार ने अपने कुँए की बँडेर से निकाल कर दे दिया।
प्र. 5 " मैं तो निमित्त मात्र था। अरूण के पीछे सूर्य था। " ब्रजमोहन व्यास के कथन का आशय स्पष्ट करें। इससे उनकी कौनसी चारित्रिक विशेषताऐं प्रकट होती है
उत्तर :– प्रयाग (इलाहाबाद) संग्रहालय के पुरातत्व की वस्तुओं को एकत्रित करने एवं उन्हें संरक्षित करने में व्यास जी ने बहुत परिश्रम किया। परन्तु इस कार्य का श्रेय स्वयं न दे कर उन्होने इसे प्रभु की कृपा का परिणाम बताया। उन्होने स्वयं को अरूण अर्थात सूर्य का सारथि बताया एवं इसके पीछे का सूर्य ईश्वर को बताया। एवं ईश्वरीय प्रेरणा से ही वे कार्य कर सके।
प्र. 6 लेखक द्वारा मद्रास से ताम्र पत्र पर लिखी गई सामग्री क्रय करने में क्या अडचन थी
उत्तर :– मद्रास में ताम्रपत्र पर लिखी गई पुस्तके नही खरीद सकने की अपनी विवशता वर्णित करते हुए कहा कि उनकी कीमत ढाई–तीन सौ रूपये से कम नहीं है। यह कीमत उनके बजट से बहुत अधिक थी। साथ ही ये तेलगु व तमिल भाषा मे लिखी गई थी।
प्र. 7 श्री ब्रजमोहन व्यास का साहित्यिक परिचय दीजिये–
उत्तर :– श्री ब्रजमोहन व्यास लम्बे समय तक इलाहाबाद नगर पालिका में मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में सेवाऐं दी। इसी दौरान इन्होने अपनी सूझ बूझ एवं वाक पटूता द्वारा कई पुरातात्विक वस्तुओं का संग्रह किया। एवं एक विशाल एवं प्रसिद्ध संग्रहालय की स्थापना की। इसी संग्रहालय मे हिन्दी संस्कृत एवं अरबी फारसी को 14000 पाण्डूलिपियों का संग्रह प्रमुख है। उन्होने अपनी साराधन और जीवन पुरातात्विक वस्तुओं के संग्रहण में लगाकर अपने श्रम कौशल एवं कार्य के प्रति निष्ठा का परिचय दिया।
व्यास जी ने कुमार दास कृत जानकी हरण का अुनवाद किया तथा पं. बालकृष्ण भट्ट एवं मदन मोहन मालवीय को जीवनी का लेखन कार्य भी किया।

निर्मल वर्मा 3– जहॉ कोई वापसी नहीं

प्रश्न–1. निर्मल वर्मा का जन्म कब व कहॉ हुआ?
उत्तर– सन् 1929 ई. शिमला हिमाचल प्रदेश में।
प्रश्न–2. निर्मल वर्मा किस कहानी आंदोलन से सम्बन्धित है?
उत्तर– नई कहानी आंदोलन से।
प्रश्न–3. निर्मल वर्मा के प्रमुख कहानी संग्रहों के नाम लिखिए।
उत्तर– परिंदे, जलती झाड़ी, तीन एकान्त, पिछली गर्मियों में कव्वे और काला पानी, सूखा आदि।
प्रश्न–4. निर्मल वर्मा के प्रमुख उपन्यासों के नाम बताइए।
उत्तर– वे दिन, लाल टीन की छत, एक चिथड़ा सुख, अन्तिम अरण्य आदि।
प्रश्न–5. निर्मल वर्मा के यात्रा संस्मरण व निबन्ध संग्रह कौन–कौनसे हैं?
उत्तर– 1. यात्रा संस्मरण– हर बारिश में, चीड़ों पर चॉदनी, धुंध से उठती धुन
2. निबन्ध संग्रह– शब्द और स्मृति, कला का जोखिम, ढलान से उतरते हुए।
प्रश्न–6. निर्मल वर्मा को साहित्य अकादमी पुरस्कार कब व किस रचना के लिए मिला?
उत्तर– सन् 1985 ईस्वी में कहानी संग्रह 'कव्वे और काला पानी' के लिए।
प्रश्न–7. 'जहॉ कोई वापसी नहीं'– यात्रा वृत्तांत निर्मल वर्मा के किस संग्रह से लिया गया है?
उत्तर– धुंध से उठती धुन।
प्रश्न–8. जहॉ कोई वापसी नहीं यात्रा वृत्तांत में वर्माजी ने प्रमुखता से किस समस्या को उठाया है?
उत्तर– पर्यावरण विनाश व विस्थापन सम्बन्धी मनुष्य की यातना की समस्या को।
प्रश्न–9. जहॉ कोई वापसी नहीं यात्रा वृत्तांत में हिमाचल के किस क्षेत्र का वर्णन है?
उत्तर– नवॉ गॉव–सिंगरौली क्षेत्र।
प्रश्न–10. सरकार के द्वारा क्या घोषणा की गई?
उत्तर– अमरौली प्रोजेक्ट के अन्तर्गत नवॉ गॉव के अनेक गॉव उजाड़ दिये जावेंगे।
प्रश्न–11. नवॉ गॉव क्षेत्र में लगभग कितने गॉव है व इनकी जनसंख्या कितनी है?
उत्तर– इस क्षेत्र में लगभग 18 गॉव हैं व इनकी आबादी 50,000 से भी ज्यादा है।
प्रश्न–12. अमझर से आप क्या समझते हैं?
उत्तर– आम के पेड़ों से घिरा गॉव जहॉ आम झरते है, इसी को अमझर कहा गया है।
प्रश्न–13. प्राचीन दन्त कथा के अनुसार इस क्षेत्र का नाम सिंगरौली क्यों पड़ा?
उत्तर– श्रृंगावली पर्वतमाला के कारण।
प्रश्न–14. सिंगरौली को काला पानी क्यों माना जाता था?
उत्तर– इस क्षेत्र को घने जंगलों व यातायात के साधन सीमित होने के कारण।
प्रश्न–15. लेखक के सिंगरौली जाने का कारण था?
उत्तर– लोकायन संस्था दिल्ली की ओर से अमरौली प्रोजेक्ट से होने वाले प्राकृतिक नुकसान का जायजा लेने।
प्रश्न–16. आधुनिक भारत के नए शरणार्थी किन्हें कहा गया है?
उत्तर– आधुनिक भारत में नए शरणार्थी वे हैं जो औद्योगिकरण के झंझावत द्वारा अपनी घर–जमीन से उखाड़कर हमेशा के लिए विस्थापित कर दिये गये हैं। इनकी जमीन सरकार ने अधिगृहित कर ली है। ये लोग अब अपने घरों को, अपने मूल स्थान को कभी नहीं लौट सकते।
प्रश्न–17. लेखक के अनुसार स्वातन्त्र्योतर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' क्या है?
उत्तर– लेखक के अनुसार स्वातन्त्र्योतर भारत की सबसे बड़ी 'ट्रेजडी' है कि हमारे सत्ताधारियों का ध्यान प्रकृति, मनुष्य और संस्कृति के बीच के नाजुक सन्तुलन नष्ट होने से बचाए रखने की ओर नहीं गया है, यही ट्रेजडी है।
प्रश्न–18. प्रकृति के कारण विस्थापन और औद्योगीकरण के कारण विस्थापन में क्या अन्तर है?
उत्तर– बाढ़ या भूकम्प के कारण लोग सुरक्षा की दृष्टि से अपना घर–बार छोड़कर कुछ समय के लिए चले जाते हैं और आफत टलते ही दोबारा अपने परिवेश में, अपने घरों में लौट आते हैं, किन्तु औद्योगीकरण के कारण विस्थापित किए गए लोग फिर कभी अपने घर नहीं लौट पाते हैं।
प्रश्न–19. सिंगरौली क्षेत्र के प्राकृतिक सौन्दर्य को अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर– सिंगरौली क्षेत्र की प्रकृति में पेड़ों के घने झुरमुट, साफ–सुथरे खप्पर लगे मिट्टी के झोंपड़े और पानी। चारों तरफ पानी। अगर मोटर–रोड की भागती बस की खिड़की से देखो, तो लगेगा जैसे समूची जमीन एक झील है, एक अंतहीन सरोवर,

CBSE BINDER

जिसमें पेड़, झोंपड़े, आदमी, ढोर–डॉगर आधे पानी में, आधे उपर तिरते दिखाई देते हैं, मानो किसी बाढ़ में सब कुछ डूब गया हो, पानी में धँस गया हो।

प्रश्न–20. लेखक के अनुसार आने वाले वर्षों में सिंगरौली क्षेत्र की स्थिति क्या होगी?

उत्तर– लेखक के अनुसार आने वाले वर्षों में सब कुछ मटियामेट हो जाएगा– झोंपड़ें, खेत, ढोर, आम के पेड़–सब एक गंदी, –आधुनिक' औद्योगिक कॉलोनी की ईटों के नीचे दब जाएगा– और ये हँसती मुस्कुराती औरतें, भोपाल, जबलपुर या ैढ़न की सड़कों पर पत्थर कूटती दिखाई देगी। शायद कुछ वर्षों तक उनकी स्मृति में अपने गॉव की तस्वीर एक स्वप्न की तरह धुँधलाती रहेगी, किंतु धूल में लोटते उनके बच्चों को तो कभी मालूम भी नहीं होगा कि बहुत पहले उनके पुरखों का गॉव था– जहॉ आम झरा करते थे।

प्रश्न–21. जहॉ कोई वापसी नहीं पाठ का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– प्रस्तुत पाठ पर्यावरण तथा औद्योगीकरण से सम्बन्धित है। इसका प्रतिपाद्य यह है कि देष की प्रगति के लिए औद्योगीकरण जरूरी है, परन्तु औद्योगीकरण की अंधी दौड़ में प्राकृतिक सौन्दर्य को नष्ट करना तथा पर्यावरण को हानि पहुँचाना गलत योजना है। औद्योगीकरण से विस्थापित होने वालों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इस सम्बन्ध में सन्तुलन बनाये रखने की जरूरत है।

प्रश्न–22. सिंगरौली की सम्पदा ही उसके लिए अभिशाप बन गयी, सिद्ध कीजिए।

उत्तर– सिंगरौली की भूमि इतनी उर्वरा और घने जंगल अपने आप में इतने समृद्ध एवं वन सम्पदा से पूर्ण थे कि उनके सहारे शताब्दियों से हजारों वनवासी और किसानों ने अपने परिवार का भरण–पोषण किया है। आज सिंगरौली की वही अतुलनीय सम्पदा उसके लिए विकास के नाम पर अभिशाप बन गई। दिल्ली के सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की ऑखों से सिंगरौली की अथाह सम्पदा छिप न सकी। सिंगरौली जो अब तक अपने सौन्दर्य के बैकुंठ और अकेलेपन के कारण कालापानी माना जाता था, वही प्रगति के मानचित्र पर राष्ट्रीय गौरव के साथ प्रतिष्ठित हुआ। विकास के खेल में प्रकृति और मानव का कितना विनाश हुआ, वह किसी ने नहीं देखा।

प्रश्न–23. लेखक के अनुसार सिंगरौली का ऐतिहासिक परिचय दीजिए।

उत्तर– लेखक के अनुसार 1926 से पूर्व यहॉ खैरवार जाति के आदिवासी राजा शासन करते थे, किंतु बाद में सिंगरौली का आधा हिस्सा, जिसमें उत्तर प्रदेश तथा मध्य प्रदेश के खंड शामिल थे, रीवॉ राज्य के भीतर शामिल कर लिया गया। बीस वर्ष पहले तक समूचा क्षेत्र विंध्याचल और कैमूर के पहाड़ों और जंगलों से घिरा हुआ था, जहॉ अधिकांशतः कत्था, महुआ, बॉस और शीशम के पेड़ उगते थे। एक पुरानी दंतकथा के अनुसार सिंगरौली का नाम ही सृंगावली पर्वतमाला से निकला है।

पाठ 4 संवदिया

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को हल कीजिए

1. **संवदिया कहानी के रचनाकार है–**
   अ. रामचन्द्र शुक्ल ब. निर्मल वर्मा स. फणीश्वर नाथ रेणु द. प्रेमचन्द (स)
2. **"और कितना कड़ा करूँ दिल ? माँ से कहना" ये शब्द किसने कहे ?**
   अ. बड़ी बहुरिया ने ब. हरगोबिन ने स. माँ ने द. देवरानी ने (अ)
3. **बड़ी बहुरिया के कितने देवर थे?**
   अ. चार ब. दो स. तीन द.एक (स)
4. **फणीश्वर नाथ "रेणु" का जन्म इस राज्य में हुआ–**
   अ. पंजाब ब.केरल स.राजस्थान द. बिहार (द)
5. **काबुल से कपड़ा लाकर गाँव में उधार बेचता था–**
   अ. मोहसिन ब.रहीम स.गुलमुहम्मद आगा द. आमिर (स)

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न

6. **संवदिया का क्या अभिप्राय है?**
   उत्तर–किसी के द्वारा संदेश पहुँचाने के लिए बोले गये संवाद को उसी भाव में, उन्हीं शब्दों में अभिव्यक्त करने वाले संदेशवाहक को संवदिया कहते है।
7. **बड़ी बहुरिया की कैसी स्थिति थी?**
   उत्तर–बड़ी बहुरिया अकेली,असहाय व दयनीय स्थिति में थी।
8. **फणीश्वर नाथ "रेणु" की दो महत्वपूर्ण रचनाओं के नाम लिखे।**
   उत्तर–फणीश्वर नाथ "रेणु" की मेला आँचल और परती परिकथा महत्वपूर्ण रचनाएँ हैं।

9. हरगोबिन ने मोदिआइन के व्यवहार पर क्या किया?
उत्तर–हरगोबिन ने मोदिआइन को खरी–खरी सुना दी।

10. "नहीं माय जी ! जमीन–जायदाद कुछ कम नहीं।" ये शब्द किसनें किससे कहें?
उत्तर–ये शब्द हरगोबिन ने बड़ी बहुरिया की माँ से कहे।

11. बड़ी हवेली से बुलावा किसने, किसको तथा क्यों भेजा?
उत्तर –बड़ी बहुरिया ने संवदिया हरगोबिन को अपना संदेश माँ तक पहुँचाने के लिये बुलावा भेजा।

लघुत्तरात्मक प्रश्न

12.काबुली की मरम्मत से संबंधित घटना को स्पष्ट कीजिये।
उत्तर –पाँच साल पहले काबुली से गुल मोहम्मद आगा ने गाँव में आकर मीठा–मीठा बोल बोल कर लोगों को उधार में कपड़ा बेच दिया। वसूली के समय जोर–जुल्म करने लगा। उसके बुरे व्यवहार से तंग आकर लोगों ने मिलकर उसकी पिटाई कर दी थी अर्थात मरम्मत कर दी थी।

13.संवदिया के बारे में लोगों के क्या विचार थे ?
उत्तर –संवदिया के बारे में लोग कहते हैं कि न तो इसका कोई आगे है न ही पीछे है। औरतों की मीठी बोली में आ जाता हैं, बिना मजदूरी लिये ही यह गाँव–गाँव संदेश पहुँचाता हैं। अतः निठल्ला, कामचोर और पेटू आदमी ही संवदिया का काम करता हैं।

14.मोदिआइन को काबुली नाम से चिढ़ क्यों थी?
उत्तर – काबुली गुल मुहम्मद आगा मोदिआइन के बरामदें में दुकान लगाता था। वह उधारी करता था। वसुली करते समय लोगों से जोर–जुल्म करता था। लोगों ने उसकी पिटाई करदी थी। मोदिआइन भी उसी की तरह वसूली करने लगी , तो लोग उसे काबुलीवाले का नाम लेकर चिढ़ाते तो बहुत चिढ़ने लगी।

15.हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संवाद क्यों नहीं सुना सका ?
उत्तर –गाँव की लक्ष्मी के समान बड़ी बहुरिया के गाँव छोड़कर चले जाने पर विचार किया। जिस संवाद को सुनाने पर सुनने वाले उसके गाँव के नाम पर थुकेंगे, धिक्कारेंगे। इसलिये हरगोबिन गाँव के गौरव की रक्षा करने के विचार से दुखद संवाद को नहीं सुना सका।

16.बड़ी बहुरिया का संदेश पहुंचाने वाला संवाद क्या था?
उत्तर – "और कितना कड़ा करू दिल ?..... माँ से कहना मैं भाभियों की नौकरी करके पेट पालूंगी। बच्चों की झुठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, लेकिन यहाँ अब नहीं रह सकूँगी। कहना यदि माँ मुझे यहाँ से नहीं ले जायेगी तो मैं किसी दिन गले में घड़ा बाँध कर पोखरे में डूब मरूँगी.....बथुआ साग खाकर कब तक जिऊँ ?किसलिए.....किसके लिये..... ।

17 हरगोबिन को हवेली से बुलावा आंने पर अचरज क्यों हुआ?
उत्तर – हरगोबिन ने सोचा आजकल गाँव–गाँव में डाकघर खुल चुके हैं। डाकघरों से चिठ्ठी–पत्री दुर–दुर तक भेजने और पाने की पूरी सुविधा हैं। तो कोई आज भी संवदिया के द्वारा संदेश क्यों भेजेगा। इसलिए हरगोबिन को अचरज हुआ।

पाठ 5 सुमिरिनी के मनके

प्रश्न 1. 'सुमिरिनी के मनके ' शीर्षक पाठ के लेखक कौन है?
उत्तर ' सुमिरिनी के मनके ' शीर्षक पाठ के लेखक पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी है।
प्रश्न 2. ' सुमिरिनी के मनके 'शीर्षक पाठ किस विधा में लिखा गया है?
उत्तर 'सुमिरिनी के मनके ' शीर्षक पाठ निबन्ध विधा में लिखा गया है।
प्रश्न 3. लेखक 'गुलेरी' द्वारा रचित रचनाएँ किन–किन पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई है?
उत्तर पंडित गुलेरी द्वारा रचित रचनाएँ समालोचक, मर्यादा प्रतिभा और नगरी प्रचारिणी पत्रिका में प्रकाशित हुई है।
प्रश्न 4. लेखक 'गुलेरी 'द्वारा रचित प्रमुख कहानियाँ कौनसी है?
उत्तर पंडित गुलेरी ने 'सुखमय जीवन', 'बुद्ध का काँटा,' और 'उसने कहाँ था' ये तीन कहानियाँ लिखी।

CBEO BHINDER

प्रश्न 5. 'बालक बच गया' निबन्ध का मूल प्रतिपाद्य क्या है?
उत्तर 'बालक बच गया' निबन्ध का मूल प्रतिपाद्य शिक्षा ग्रहण की सही उम्र तथा रटन प्रवृति शिक्षा की दोषपूर्ण प्रणाली है।
प्रश्न 6. 'बालक बच गया' निबन्ध में लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है?
उत्तर लेखक गुलेरी ने अपने समय की शिक्षा प्रणाली और शिक्षकों की मानसिकता पर व्यंग्य किया है।
प्रश्न 7. 'घड़ी के पुर्जे' निबन्ध का मूल उद्देश्य क्या है?
उत्तर 'घड़ी के पुर्जे ' निबन्ध का मूल उद्देश्य धर्म के रहस्यों को जानने पर धर्म उपदेशकों द्वारा लगायें गए प्रतिबन्धों को घड़ी के दृष्टान्त द्वारा प्रस्तुत करना है।
प्रश्न 8. 'ढ़ेले चुन लो' निबन्ध में लेखक ने किस विषय पर प्रकाश डाला है?
उत्तर 'ढ़ेले चुन लो' निबन्ध में लेखक ने लोक विश्वासों में निहित अन्धविश्वासी मान्यताओं पर चोट की है।
प्रश्न 9. 'बालक बच गया ' निबन्ध में बालक ने इनाम में क्या माँगा?
उत्तर 'बालक बच गया ' निबन्ध में बालक ने इनाम में लड्डू माँगा।
प्रश्न 10. 'शेक्सपीयर ' के किस प्रसिद्ध नाटक में पोर्शिया अपना वर बड़ी सुन्दर रीति से चुनती है?
उत्तर 'शेक्सपीयर' के किस प्रसिद्ध नाटक मर्चेन्ट ऑफ वेनिस में पोर्शिया अपना वर बड़ी सुन्दर रीति से चुनती है।
प्रश्न 11. वैदिकाल में हिन्दुओं में पत्नीवरण के लिए कौनसी प्रथा मान्य थी?
उत्तर वैदिकाल में हिन्दु मिट्टी के ढ़ेले छुआकर स्वंय पत्नीवरण करते थे।
प्रश्न 12. 'मिस्टर हादी के कोल्हू की तरह ' की उपमा लेखक ने किसे दी है?
उत्तर लेखक ने वार्षिकोत्सव में प्रधानाध्यापक के आठ वर्षीय पुत्र को मिस्टर हादी के कोल्हू की तरह की उपमा दी है। जो रटन प्रवृति का अनवरत प्रदर्शन कर रहा था।
प्रश्न 13. बालक द्वारा इनाम में लड्डू मांगने पर लेखक ने सुख की साँस क्यों भरी?
उत्तर बालक द्वारा इनाम में लड्डू मांगने पर लेखक ने सुख की साँस भरी क्योंकि जो आठ वर्षीय बालक अपनी उम्र और योग्यता से ऊपर के प्रश्नों के रटे रटाए उत्तर दे रहा था, उसने जब इनाम में कुछ सकोंच करते हुए लड्डू मांगा तो लेखक को लगा कि अभी बालक की सभी इच्छाओं का गला नहीं घोटा गया है। अभी बालक को शिक्षा देने, उसकी छिपी हुई प्रवृतियों, क्षमताओं को विकसित करने की संभावना विद्यमान है।

प्रश्न 14.''बालक बच गया। उसके बचने की आशा है क्योंकि वह लड्डू की पुकार जीवित वृक्ष के हरे पत्तों का मधुर मर्मर था, मेरे काठ की अलमारी की सिर दुखाने वाली खडखडाहट नहीं'' कथन के आधार पर बालक की स्वभाविक प्रवृतियों का उल्लेख कीजिए।
उत्तर बालक की स्वभाविक प्रवृति उसका कोमल व सरल स्वभाव है माता–पिता की आकांक्षाएँ और नवीन शिक्षा पद्धति ने बच्चों से उनका स्वभाविक बचपन छीन लिया है उक्त स्थिति में भी यही वर्णन है। कम उम्र वाले बच्चों से उसकी आयु स्थिति के विपरित भारी भरकम सवाल पूछे जाते है, जिनका वह रटा रटाया जवाब देता है, लेकिन जब उससे उसकी रूचिअनुसार सवाल पूछा जाता है तो वह कुछ भ्रमित होकर सरल इच्छा प्रकट करता है, जिसे सुनकर लेखक प्रसन्न होता है। लड्डू की इच्छा हरे भरे कोमल वृक्ष के पत्तों के समान है जिसमें ऊपर उठने की स्वभाविक इच्छा है और जो जीवन से परिपूर्ण होकर अपनी गति से फलने फूलने का सामर्थ्य रखते है निर्जीव काठ की अलमारी समान यन्त्रवत कार्य कर सिर दुखाने वाली खडखडाहट उत्पन्न नहीं की। अतः लेखक बालक की जीवित स्वभाविक वृति देखकर प्रसन्न हुआ।
प्रश्न 15. 'बालक बच गया' कहानी के माध्यम से क्या संदेश दिया गया है?
उत्तर 'बालक बच गया' कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि शिक्षा ग्रहण करने की सही उम्र होने पर ही बालक पर शिक्षा का भार डालना चाहिए। शिक्षा का उद्देश्य 'रटने की प्रवृति' नहीं होना चाहिए, अपितु शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारारिक, मानसिक, तथा मूल प्रवृतियों का विकास होना चाहिए।
प्रश्न 16. 'बालक बच गया' निबन्ध की मूल संवेदना पर प्रकाश डालते हुए, लेखक के शिक्षा सम्बन्धी विचारों को प्रस्तुत कीजिए।
उत्तर वर्तमान समय में बच्चें रटकर परीक्षा उर्तीण हो जाते है। इस रटन प्रवृति के कारण व्यवहारिक जीवन में उस शिक्षा का उपयोग सहीं रूप में नहीं कर पाते। लेखक वर्तमान शिक्षा पद्धति के इस विकृत रूप को घातक मानते है। उनके अनुसार धर्म, विज्ञान, प्रकृति या पुराण शिक्षा का कोई भी विषय क्यों ना हो, ठोस शिक्षा एवं उनका गूढ अर्थ ही बच्चे के व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है, शिक्षा बच्चे पर लादनी नहीं चाहिए बल्कि उसके मानस में शिक्षा की रूचि पैदा करने वाले बीज डाले जाने चाहिए। लेखक बच्चों को उस फल के समान बताते है ' जो सहज पके सो मीठाा होये' के समान हो, यह स्थिति लेखक बच्चों के मस्तिष्क की मानते है।

CBSE BINDER

प्रश्न 17. निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए–

I. '' वेदशास्त्रज्ञ धर्माचार्यो का ही काम है कि घड़ी के पुर्जे जानें, तुम्हें इससे क्या''?

उत्तर लेखक ने अपने मत के समर्थन में घड़ी का दृष्टान्त दिया है। व्यक्ति घड़ी का उपयोग उससे समय देखने उन्हें जानने के लिए करता है। घड़ी के पुर्जे देखने उन्हें ठीक करने से उसका सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह उपदेशक द्वारा दिए गए धार्मिक उपदेशक को मानना, उसके अनुसार आचरण करना यही प्र्याप्त है। धर्म का रहस्य जानने की उसे आवश्यकता नहीं है। धर्म का रहस्य जानने का क्षेत्र वेदशास्त्र के सत्ता धर्माचार्यो का है।

II. '' अनाड़ी के हाथ में चाहे घड़ी मत दो पर जो घड़ीसाजी का इम्तहान पास कर आया है, उसे तो देखने दो।

उत्तर लेखक गुलेरी के अनुसार आम आदमी को धर्म का रहस्य जानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए, उसे तो केवल उपदेशों का ही पालन करना चाहिए अज्ञानी को नहीं परन्तु धर्म के ज्ञाता को धर्म का रहस्य जानने और जिज्ञासा व्यक्त करने का अधिकार मिलना चाहिए। घड़ीसाजी की जानकारी रखने वालो को तो घड़ी के पुर्जे देखने, उन्हें ठीक करने की अनुमति देनी चाहिए, इससे घड़ी का प्रयोजन और घड़ीसाज की अर्थवत्ता मजबूत होती है।

III. '' हमें तो धोखा होता है कि परदादा की घडी जेब में डाले फिरते हो, वह बन्द हो गई है, तुम्हें न चाबी देना आता है न पुर्जे सुधारना, तो भी दूसरों को हाथ नहीं लगाने देते''।

उत्तर उक्त कथन उन धर्मोपदेशको के बारे में है जो सतयुगी मान्यता का हवाला देकर श्रोताओं से कहते है कि आपका काम धर्मोपदेश सुनना है, जिज्ञासा व्यक्त करना या धर्म का रहस्य जानना नहीं, ऐसे व्यवहार से उपदेशक के ज्ञान के बारे में ही आशंका होने लगती है। सम्भवतः वे ही धर्म का रहस्य न जानते हो। बन्द घड़ियों की तरह वे केवल रूढ़ियों के समान चलते है। न स्वंय रूढ़ियों से मुक्त हो पाते है और न ही दूसरो को मुक्ति का रास्ता दिखा पाते है।

प्रश्न 18. '' घड़ी के पुर्जे '' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर '' घड़ी के पुर्जे '' कहानी का उद्देश्य यह है कि समाज में धर्मोपदेशक केवल यहीं चाहते है कि जनसाधारण केवल उनके उपदेशो को सुनो, धर्म का रहस्य जानने की चेष्टा ना करे। अपने कथन के समर्थन में वे घड़ी का उदाहरण देते है कि घड़ी के समय जान लो, परन्तु घड़ी के पुर्जे खोलने या जोड़ने की कोशिश मत करो, क्योंकि यह काम घड़ीसाज का है। परन्तु धर्म का मुल रहस्य जानने का अधिकार सभी का है, उसका रहस्य आम आदमी को ज्ञात होना चाहिए। जिससे धर्म तत्व को जीवन में उतार कर अपना जीवन सुखमय बना सके।

प्रश्न 19. जन्मभर के साथी का चुनाव मिट्टी के ढेले पर छोडना बुद्धिमानी नहीं है इसलिए बेटी का शिक्षित होना अनिवार्य है। ' बेटी बचाओं बेटी पढाओं ' के सन्दर्भ में अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर बेटियों को बचाने ओर उन्हें शिक्षित करने हेतु यह ' बेटी बचाओं बेटी पढाओं ' योजना प्रासांगिक है। शिक्षा मस्तिष्क का विकास करती है समझ विकसित करती है एवं सही मार्ग का चुनाव करने में सहायता प्रदान करती है लडकी या बेटी शिक्षित होने पर परिवार स्वतः ही शिक्षा के महत्व से अवगत हो जाता है और समाज में स्त्री व पुरूष दोनो के ही शिक्षित होने से देश की प्रगति का मार्ग स्वतः ही प्रशस्त हो जाएगा। शिक्षित लडकी कभी भी अपने जीवन साथी का चुनाव मिट्टी के ढेलो पर ना छोड़कर अपनी रूचि, समझ,व संस्कारों के आधार पर करेगी। समाज की झूठी परम्पराओं का विरोध कर उन्हें समाप्त करेगी तथा शिक्षित नारी ही देश को बुलन्दी पर पहुँचाने में मील के पत्थर साबित होगी।

प्रश्न 20. आशय स्पष्ट कीजिए–

अपनी आँखो से जगह देखकर अपने हाथ से चुने हुए मिट्टी के डगलो पर भरोसा करना क्यों बुरा है और लाखों करोड़ो कोस दूर बैठे बडे–बडे मट्टी और आग के ढेलो–मंगल, शनिचर और बृहस्पति की कल्पित चाल के कल्पित हिसाब का भरोसा करना क्यों अच्छा है?

उत्तर पंडित गुलेरी के अनुसार वैदिकाल में विभिन्न स्थानों से मिट्टी के ढ़ेले लाकर उनके चयन के आधार पर जीवन साथी चुना जाता था जो कि दोषपूर्ण प्रथा थी। ढेलो के आधार पर जो परख होगी वह सही और विश्वास योग्य नहीं होगी। क्योंकि एक बार एक व्यक्ति उन ढेलो के आधार पर लडकी को चुने जाने के अयोग्य सिद्व कर सकता है। दूसरा यही ढंग अपनाए तब हो सकता है लडकी शमशान की मिट्टी न छूकर वेदी की मिट्टी छू लेने से गुणवत्ती मान ली जाए। इस तरह परख के लिए ढेले विश्वसनीय नहीं हो सकते। दूसरी और लाखौ करोड़ो कोस दूर स्थित मंगल, बुध, गुरू आदि ग्रह जो

आग और मिट्टी के ही ढेले है, उनकी कल्पित चाल या ग्रह गति का हिसाब लगाकर वर कन्या का चयन किया जाता है, उस पर कुछ विश्वास किया जा सकता है, परन्तु उसी को आधार मानना भी बुद्धिमानी नहीं है। अतः हमें जीवन साथी का सही चुनाव करते समय उसके गुणो को ही प्राथमिकता देनी चाहिए।

GEOBHINDER

प्रश्न 21. ' ढेले चुन लो ' निबन्ध की मूल संवेदना व्यक्त कीजिए।
उत्तर पंडित गुलेरी द्वारा रचित यह निबन्ध 'ढेले चुन लो ' लोकजीवन में व्याप्त अंधविश्वासो पर व्यंग्य करता है। इस अंधविश्वास में लोग अपने जीवन साथी का चुनाव सोने, चाँदी व लोहे की पेटियों तथा विभिन्न प्रकार की मिट्टी के ढेलो के आधार पर करते है जो कि एक अंधविश्वास मात्र है, जिनका कोई वैज्ञानिक तथ्य नहीं है। जो समाज की दृष्टि से हितकारी भी नहीं है। लेखक का मानना है कि भविष्य की नींव कल्पना मात्र पर ना टिकाकार मजबूत धरती पर टिकानी चाहिए। वर्तमान के सत्य को अनदेखा ना करते हुए भविष्य की कल्पना को ही केवल सत्य नहीं मान लेना चाहिए। वर्तमान समाज अपने आप को आधुनिक कहते हुए भी कोरी कल्पना (जन्मपत्री, ग्रह नक्षत्र की चाल के आधार पर सुखद भविष्य का जो महल बनता है वो समय की आंधी (दुखः) से शीर्घ ही तहस– नहस हो जाता है। अतः लेखक के अनुसार हमें विचारों से धरातल पर रहते हुए उन्हें आधुनिक बनाना चाहिए। तभी सुखद भविष्य सुनहरा सपना साकार होगा।
प्रश्न 22. ' पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ' का साहित्यक परिचय दीजिए।
उत्तर ' पंडित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ' का जन्म पुरानी बस्ती जयपुर में हुआ। गुलेरी जी बहुभाषाविद् संस्कृत, पाली प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज, अवध, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी, बांगला के साथ अंग्रेजी लैटिन तथा फ्रेंच आदि भाषाओं में भी उनकी अच्छी गति थी वे संस्कृत के पंडित थे। उनकी गहरी रूचि भाषा विज्ञान में थी। उनकी सृजनशीलता का प्रकाशन समालोचाक, मर्यादा, प्रतिभा और नागरी प्रचारिणी पत्रिका में हुआ। उत्कृष्ट निबन्धों के अतिरिक्त तीन कहानियाँ– सुखमय जीवन, बुद्ध का काँटा व उसने कहाँ था भी उन्होंने हिन्दी साहित्य जगत को दी। उन्हें इतिहास दिवाकर की उपाधि से भी सम्मानित किया गया।

पाठ 6 प्रेमघन की छाया स्मृति

(1) प्रेमघन की छाया स्मृति पाठ के लेखक हैं
(अ) रामचंद्र शुक्ल
(ब) जैनेंद्र
(स) नागार्जुन
(द) प्रेमचंद। (अ)
(2) आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म स्थान है–
(अ) गुजरात
(ब) उत्तर प्रदेश
(स) दिल्ली
(द) मध्य प्रदेश। (ब)
3– प्रेमघन की छाया स्मृति पाठ किस विधा में रचित है
(अ) कहानी
(ब) निबंध
(स) कविता
(द) नाटक। (ब)
4– प्रेमघन का पूरा नाम क्या है?
(अ) हरीश चंद्र
(ब) वैद्यनाथ मिश्र
(स) इलाचंद्र जोशी
(द) बद्रीनारायण चौधरी। (द)
5– लेखक के पिताजी की बदली कहां हुई थी?
(अ) आगरा
(ब) दिल्ली
(स) मिर्जापुर
(द) कोलकाता। (स)
6– लेखक के पिता रात के समय घर के लोगों को एकत्र करके रोचक ढंग से क्या पढ़ा करते थे?
(अ) रामचरितमानस
(ब) रामायण
(स) रामचंद्रिका
(द) रामचरितमानस और रामचंद्रिका (द)

CBEO BHINDER

7– आचार्य रामचंद्र शुक्ल का बद्रीनारायण चौधरी 'प्रेमघन'से परिचय कहां हुआ?
उत्तर आचार्य रामचंद्र शुक्ल का बद्रीनारायण चौधरी प्रेमघन से परिचय मिर्जापुर में हुआ।
8– शुक्ल जी के सम वयस्क मित्रों की हिंदी प्रेमी मंडली का नाम लोगों ने क्या रख दिया था?
उत्तर–शुक्ल जी के सम वयस्क मित्रों के हिंदी प्रेमी मंडली का नाम लोगों ने निसंदेह लोग रख दिया था।
9– शुक्ल जी ने अपने पिता के बारे में क्या बताया?
उत्तर–शुक्ल जी ने अपने पिता के बारे में बताया कि वह फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुराने हिंदी कविता के प्रेमी थे।
10–लेखक की बाल बुद्धि किस में कोई भेद नहीं कर पाती थी?
उत्तर–सत्यवादी हरिश्चंद्र नाटक के नायक राजा हरिश्चंद्र एवं कवि हरीश चंद्र में लेखक की बाल बुद्धि कोई भेद नहीं कर पाती थी।
11–''लताऋ प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी दिखाई पडी ''
यह मूर्ति किसकी थी?
उत्तर– लता प्रतान के बीच एक मूर्ति खड़ी थी वाह चौधरी बद्रीनारायण प्रेमघन की थी।
12–लेखक का हिंदी साहित्य के प्रति झुकाव किस तरह बढ़ता गया?
उत्तर– लेखक के सयाना होने पर हिंदी साहित्य की और उनका झुकाव बढ़ता गया। उनके पिता साहित्य प्रेमी थे भारतीय जीवन प्रेस की किताबें उनके यहां आया करती थी । साथ ही मिर्जापुर में केदारनाथ पाठक ने एक पुस्तकालय खोल रखा था जहां से शुक्ला जी किताबें लाकर पढ़ा करते थे।
13–सम वयस्क हिंदी प्रेमियों की मंडली में कौन कौन से लेखक मुख्य थे?
उत्तर–बचपन में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के सम वयस्क हिंदी प्रेमियों की मंडली मै श्रीयुत काशी प्रसाद जायसवाल, बाबू भगवान दास जी हालना, पंडित बद्रीनाथ गौड़ और उमाशंकर द्विवेदी प्रमुख थे।
14–लेखक ने अपने पिताजी के बारे में क्या–क्या विशेषताएं बताई?
उत्तर–लेखक रामचंद्र शुक्ल ने अपने पिताजी के बारे में निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया है
1–वे फारसी के अच्छे ज्ञाता और पुरानी हिंदी कविता के बड़े प्रेमी थे।
2–फारसी कवियों की युक्तियों को हिंदी कवियों की युक्तियों के साथ मिलाने में बड़ा आनंद आता था।
3–वह रात को घर के सभी सदस्यों को एकत्र करके रामचरितमानस (तुलसीदास) व रामचंद्रिका(केशव दास) बड़े चित आकर्षक ढंग से पढ़ कर सुनाया करते थे।
15–बद्रीनारायण चौधरी से संपर्क बढ़ने पर शुक्ल जी को क्या पता चला?
उत्तर–शुक्ल जी ने लेखक की हैसियत से बद्री नारायण चौधरी के यहां आने जाने लगे थे। तब उन्हें पता चला कि चौधरी साहब एक अच्छे खासे हिंदुस्तानी रईस हैं ।बसंत पंचमी , होली के अवसर पर उनके घर नाच रंग की महफिल सजती है। वह लंबे बाल रखने के शौकीन हैं उनकी बातें मनोरंजक होती हैं वह घर में स्थानीय भाषा बोलते हैं वे विनोदी स्वभाव के हैं।
16–'चौधरी बद्रीनारायण दृढ़ मान्यता वाले व्यक्ति थे।''इस कथन को पुष्ट करने के लिए पाठ में आए प्रसंग तर्क सहित प्रस्तुत कीजिए।
उत्तर–चौधरी साहब दृढ़ मान्यता वाले व्यक्ति थे और अपनी मान्यताओं को तर्क से पुष्ट करते थे वह नागरी लिपि ना मानकर भाषा मानते थे और कहते थे कि'' नागर अपभ्रंश से जो शिष्टलोगों की भाषा विकसित हुई वही नागरी कहलाई।''इस प्रकार वे मिर्जापुर को मीरजापुर लिखा करते और उसका अर्थ करते थे लक्ष्मीपुर।इस संबंध में तर्क देते कि मीर= समुद्र जा=पुत्री अतःमीरजापुर का अर्थ हुआ समुद्र की पुत्री(लक्ष्मी) का पर अर्थात लक्ष्मीपुर।
17–बद्रीनारायण चौधरी के स्वभाव की तीन विशेषताएं बताइए जो इस पाठ से सामने आती हैं।
उत्तर–(1) बद्रीनारायण चौधरी एक हिंदुस्तानी रईस थे अतः रईसी तबीयत और रियासत उनकी हर अदा से व्यक्त होती थी। वे इतने आराम तलब और नौकरों पर निर्भर रहने वाले व्यक्ति थे की जलती भभकती लैंप के बत्ती को स्वयं कम कर देने की जगह नौकरों को आवाज देते थे भले ही चिमनी टूट क्यों न जाए।
(2) वह काव्यप्रेमी रसिक स्वभाव के बन ठन के रहने वाले व्यक्ति थे।
(3) वे अपनी दृढ़ मान्यताओं के लिए भी जाने जाते थे नागरी कोलिपि ना मानकर भाषा मानते थे और मिर्जापुर को मिराजापुर लिखते थे तथा उसका अर्थ करते हुए मीर =समुद्र जा =पुत्री अतः मिर्जापुर समुद्र की पुत्री(लक्ष्मी) का पूर लक्ष्मीपुर।
18–वामन आचार्य गिरी कौन थे? उनकी चौधरी साहब से क्या बात हुई?
उत्तर– वामन आचार्य गिरी मिर्जापुर में पुरानी परिपाटी के बहुत ही प्रतिभाशाली कवि थे। एक दिन वह सड़क पर चौधरी साहब के ऊपर एक कविता जोड़ते चले जा रहे थे ।अंतिम चरण रह गया था कि चौधरी साहब अपने बरामदे में कंधों पर बाल छिटकाए हैखंभे के सहारे खड़े दिखाई पड़े। वामन जी ने चौधरी साहब को नीचे से अपने कविता के जरिए ललकारा ''खंभा टेकी खड़ी जैसे नारी मुगलन की।

19– रामचंद्र शुक्ल का लेखक परिचय लिखिए।
उत्तर– आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म सन 1884 में उत्तर प्रदेश के बत्तीजिले के अगोना गांव में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू अंग्रेजी व फारसी भाषा में हुई थी। उनकी विधिवत शिक्षा इंटरमीडिएट तक ही हो पाई बाद में उन्होंने स्वाध्याय द्वारा संस्कृत अंग्रेजी बांग्ला और हिंदी के प्राचीन तथा नवीन साहित्य का गंभीरता से अध्ययन किया सन 1905 में वे काशी नागरी प्रचारिणी सभा में हिंदी शब्द सागर के निर्माण कार्य में सहायक संपादक के पद पर नियुक्त होकर काशी आ गए और बाद में काशी हिंदी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य करते रहे।
20–आचार्य रामचंद्र शुक्ल का साहित्यिक परिचय लिखिए ।
उत्तर– साहित्यिक परिचयआचार्य रामचंद्र शुक्ल उच्च कोटि के आलोचक ,निबंधकार, साहित्य चिंतक एवं इतिहास लेखन के रूप में जाने जाते हैं उन्होंने अपने मौलिक लेखन संपादन ,
अनुवादो से हिंदी साहित्य में पर्याप्त वृद्धि की।
भाषाऋआचार्य शुक्ल ने संस्कृत तत्सम शब्दावली युक्त तथा मुहावरेदार परिष्कृत खड़ी बोली हिंदी का प्रयोग किया है। आवश्यकता अनुसार वे अपनी भाषा में अंग्रेजी और फारसी के प्रचलित शब्दों का प्रयोग भी करते हैं।
शैली शुक्ल जी की गद्य शैली विवेचनात्मक है जिसमें विचार प्रधानता सूक्ष्म तर्क योजना व्यंगऋ विनोद का भी योगदान।
प्रमुख कृतियांऋचिंतामणि, रस मीमांसा (निबंध), हिंदी साहित्य का इतिहास,(इतिहास) तुलसीदास, सूरदास ,त्रिवेणी (समालोचना) जायसी ग्रंथावली, भ्रमरगीत सार, हिंदी शब्द सागर, काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका है।

पाठ 7 ममता कालिया – 'दूसरा देवदास'

प्र.1 ' दूसरा देवदास' पाठ गद्य की कौनसी विद्या में है?
(अ) निबन्ध (ब) कहानी
(स) संस्मरण (द) संस्मरणात्मक रेखाचित्र ( )
उत्तर – (ब) कहानी
प्र.2 निम्नांकित में से कौनसा पात्र पाठ में नहीं है?
(अ) पारो (ब) संभव
(स) मन्नू (द) लालू ( )
उत्तर – (द) लालू
प्र.3 'दूसरा देवदास' पाठ की लेखिका है–
(अ) ममता कालिया (ब) महादेवी वर्मा
(स) सुभद्रा कुमारी चौहान (द) मन्नू भण्डारी ( )
उत्तर – (अ) ममता कालिया
प्र.4 'दूसरा देवदास' पाठ में किस नदी का वर्णन है?
(अ) गंगा (ब) यमुना
(स) कावेरी (द) नर्मदा ( )
उत्तर – (अ) गंगा
प्र.5 'गंगापुत्र' किसे कहते है?
(अ) हरिद्वारा (ब) पुजारी
(स) भिक्षुक (द) गोताखोर ( )
उत्तर – (द) गोताखोर
प्र.6 'दूसरा देवदास' कहानी का मूख्य विषय क्या है?
उत्तर – इसमें युवामन की संवेदना, भावना और विचार जगत की उथल–पुथल को आकर्षक भाषा शैली में प्रस्तुत किया है।
प्र.7 संभव ने किस भीड़ की तुलना हर की पौड़ी की भीड़ से की है?
उत्तर – संभव ने दिल्ली शहर की भीड़ की तुलना हर की पौड़ी की भीड़ से की।
प्र.8 हर की पौड़ी पर 'स्पेशल आरती' से क्या तात्पर्य है?
उत्तर – 'स्पेशल आरती' आर्थत् जिसने भी एक सौ एक या एक सौ इक्यावन रूपये देकर आरती करवाई हो।
प्र.9 'दूसरा देवदास' पाठ की मूल संवेदना क्या हैं?
उत्तर – ममता कालिया की कहानी 'दूसरा देवदास' प्रेम के महत्व और गरिमा को ऊँचाई प्रदान करती है। कहानी से यह सिद्व होता है कि प्रेम के लिए किसी नियत व्यक्ति, स्थान और समय की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह स्वतः ही घटित हो जाता है।

प्र.10 पाठ में हर की पौड़ी का संध्या समय का मनोहारी दृश्य किस प्रकार बताया गया है?
उत्तर – हर की पौड़ी पर संध्या के समय गंगा की आरती का रंग ही निराला होता है। भक्तों की भीड़ मनोकामना

CBEO BHINDER

की पूर्ति के लिए फूल, प्रसाद आदि खरीदती है। उस समय पण्ड़े और गोताखोर सक्रिय हो जाते है। चारों तरफ पूजा का वातावरण है, पंच मंजिली निलांजलि में लगे सहस्त्र दीप जल उठते है और आरती शुरू हो जाती है। मनौतिओं के दीए लिए हुए फूलों के छोटे–छोटे दोने गंगा की लहरों पर इठलाते हुए आगे बढ़ते जाते है। पूरे वातावरण में चंदन और धूप की सुंगंध फैली हुई और भक्तजन संतोष भाव से भर उठते है।

प्र.11 गंगापुत्रों का जीवन परिवेश 'दूसरा देवदास' कहानी के आधार पर बताइए।

उत्तर – गंगापुत्र उन गोताखोर को कहते है जो गंगा में डुबकी लगाकर भक्तों द्वारा छोडे गए पैसों को इकठ्ठा करके अपनी आजीविका चलाते है। इनका जीवन गंगा पर ही निर्भर करता है। यह रेजगारी बटोरकर अपनी बहन या पत्नी को कुशाघाट पर दे आते हैं जो इन्हें बेचकर नोट कमाती है। कभी–कभी इनके साथ हादसा भी हो जाता है, किन्तु बगैर परवाह किए यह अपने कार्य में लगे रहते है।

प्र.12 संभव व पारो का प्रथम परिचय कैसे होता है?

उत्तर – कहानी का नायक 'संभव' व नायिका 'पारों' है। संभव कुद दिनों के लिए अपनी नानी के घर आता है। नास्तिक होते हुए भी अपने माता–पिता के कहने पर गंगा का आशीर्वाद लेने आता है तब नायक–नायिका का प्रथम परिचय गंगा किनारे के मंदिर में होता है। संभव मंदिर में पैसे चढ़ाने के उपरांत अपना हाथ कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ाता है, तभी एक नाजुक सी कलाई भी कलावा बंधवाने के लिए आगे बढ़ती है। संभव उस गुलाबी कपड़ों में भीगी लड़की का देखता है। पुजारी दोनों को दम्पति समझकर आशीर्वाद देता हैं।

प्र.13 पुजारी संभव व पारों को क्या आशीर्वाद देता है?

उत्तर – पुजारी संभव व पारो को दम्पति समझकर "सुखी रहो फले–फुलो जब भी आयो साथ ही आया। गंगा मैया मनोरथ पूरे करें।" का आशीर्वाद देता है।

प्र.14 "मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत, अनुठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है" कथन के आधार पर पारो का मनोदशा का वर्णन करो।

उत्तर – इस कथन से पारो की मनोदशा का पता लगता है। सम्भव से मिलने के लिए उसने मंशा देवी पर चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया था, क्योंकि पहली मनः कामना का फल तो उसने देख ही लिया था कि जिसके मिलने की संभावना न थी वह लड़का स्वयं चलकर उसके पास आया था।

प्र.15 'दूसरा देवदास' कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – कहानी में 'दूसरा देवदास' संभव नाम के लड़के के लिए आया है। यह शीर्षक कहानी के लिए सार्थक है। देवदास अपनी प्रेमिका के प्रति आसक्त था। यह संभव नाम का दूसरा देवदास भी पारो की खोज पागल की तरह करता रहा। उसकी दूसरी बार झलक पाने के लिए वह मंशा देवी के मन्दिर गया, वहाँ उसने मनौती और मनोकामना पूरी देखकर उसने संभव नाम के साथ देवदास जोडकर पारो को अपने प्रेम का संकेत भी दे दिया इस दृष्टि से यह शीर्षक सार्थक है।

प्र.16 हर की पौड़ी के पण्डे–पुजारियों के बारे में बताइए।

उत्तर – गंगातर पर पण्डे अपने –अपने तख्त पर जमे होते है। गंगा में स्नान करने वाले भक्तों के कपड़े–लत्तों की वे ही सुरक्षा रखते है। स्नान किए हुए लोगों के मस्तक पर वे चंदन का तिलक और महिलाओं के मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगाते है। लोग अपनी मनोकामना के अनुसार उनसे आरती करवाते है और वे स्नान करके आने वाले उन लोगों से भेंट–चढ़ावा प्राप्त कर उन्हें आशीर्वाद देते है।

प्र.17 ममता कालिया का साहित्यिक परिचय प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर – हिन्दी के नयी कहानी आन्दोलन में ममता कालिया का विशेष योगदान माना जाता है। नारी ह्दय की सरलता, सुबोधता एवं संवेदना का सुन्दर समावेश तथा कथा–वस्तु का भावपूर्ण विन्यास इनकी कहानी कला का वैशिष्ट्य है।ममता कालिया को साहित्य के क्षेत्र में अनेक पुरस्कार भी प्राप्त हुए है। इनके 'बेघर', 'नरक दर नरक', एक पत्नी के नोट्स, 'प्रेम–कहानी' आदि उपन्यास तथा बारह कहानी–संग्रह प्रकाशित है। इनके हाल ही में दो कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए है– " पच्चीस साल की लड़की और "थियेटर रोड़ के कौवें।

प्र.18 संभव से मिलने के बाद पारो की क्या मनोदशा थी?

उत्तर – पारो की मनोदशा भी संभव से भिन्न न थी, वह स्वयं भी उसके आकर्षक में बंध चुकी थी। युवा मन का निश्चल प्रेम केवल एक झलक देखने के लिए व्याकुल था।

मनसा देवी पर लगी मनोकामना की गांठ का परिणाम संभव से मिलने के रूप में आया तो वह आश्चर्य मिश्रित सुख में डूब गई। सफेद साड़ी में उसका चेहरा लाज से गुलाबी हो रहा था क्योंकि उसे भी इस बात की प्रतीक्षा थी। उसने ईश्वर को धन्यवाद दिया और मन ही मन एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लिया। मनोकामना पूरी होने से देवी पर आस्था और संभव के प्रति प्रेम और अधिक दृढ़ और स्थाई हो गया।

प्र.19 पारो से प्रथम भेंट के बाद संभव के मनोभावों के बारे में बताइए।

उत्तर – पारो से मुलाकात के बाद संभव के मन में प्रेमभावना जागृत हुई थी। पारो को जब उसने गुलाबी साड़ी में पूरी भीगी हुई देखा, तो वह देखता रह गया। उसका सौन्दर्य अनुपम था। उसने संभव के कोमल मन में

हलचल मचा दी। वह उसे खोजने के लिए हरिद्वार की गली–गली खोजता था। घर पहुँचकर उसका किसी चीज में मन नहीं लगा। विचारों और ख्वाबों में बस पारो की ही आकृति उसे नजर आ रही थी। उसका दिल उसे पाना चाहता था।

प्र.20 संभव और पारो दोनों को पुजारी के आशीर्वाद के बाद क्या अफसोस हुआ और क्यों?

उत्तर – संभव और पारो दोनों ही पुजारी के आशीर्वाद के वचन सुनकर अकबका गए। तब दोनों की मनःस्थिति सामान्य नहीं थी। संभव कहना चाहता था कि इसमें मेरी कोई गलती नहीं थी। लड़की को लगा कि गलती तो मेरी ही थी, मुझे लड़के के इतने पास नहीं खड़ा होना चाहिए था।

अज्ञेय यह दीप अकेला/मैंने देखा, एक बूंद–

प्र. 1 "हिंदी कविता में प्रयोगवाद के प्रवर्तक कौन है"–

अ. रामचन्द्र शुक्ल ब. निर्मल वर्मा

स. फणीश्वरनाथ रेणु द. अज्ञेय (द)

प्र. 2. "यह दीप अकेला" कविता में दीप किसका प्रतीक है–

अ. दीया ब. मनुष्य

स. जीवात्मा द. रोशनी (ब)

प्र. 3. यह प्रकृत, स्वयंभू, ब्रह्मा, अयुत, इसको भी शक्ति को दे दो। इस वाक्य में **यह** शब्द किसके लिए आया है–

अ. ईश्वर के लिए ब. स्वयं कवि के लिए

स. व्यक्ति विशेष के लिए द. दीया के लिए (स)

प्र. 4. कवि ने समुद्र को किसका प्रतीक बताया है –

अ. दिया ब. आत्मा

स. परमात्मा द. बूंद (स)

प्र. 5. मैंने देखा एक बूंद कविता में कवि बूंद के परिपेक्ष्य में किसकी बात कर रहा है–

अ. बूँद की क्षणभंगुरता की ब. बूंद के सौंदर्य की

स. बूंद के यौवन की द. बूंद के महत्व की (अ)

प्र. 6 अज्ञेय का मूल नाम क्या है?

उत्तरः– अज्ञेय का मूल नाम सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय है।

प्र. 7 यह वह विश्वास नहीं जो अपनी लघुता में भी कांपा इस पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः– मनुष्य को ईश्वर पर इतना अटूट विश्वास होता है कि अपनी लघुता /कमी/ अभाव का पता होने पर भी अपनी विश्वास के बल पर वह आगे बढ़ने का प्रयास करता है और अंततः सफल हो जाता है।

प्र.8 गीत की सार्थकता किस से जुड़ी है?

उत्तरः– एक गीत तभी सार्थक माना जाएगा जब वह गाया जाए क्योंकि गाए जाने से ही उसके भाव/कथ्य/महत्व आदि सब ज्ञात होते हैं, अतः बिना गायन के गीत निरर्थक है।

प्र. 9 सागर और बूंद किस प्रकार एक दूसरे से भिन्न है?

उत्तरः– कवि का आशय यह है कि सागर शाश्वत, सार्वकालिक, परब्रह्मा है जबकि बूंद क्षणभंगुर, नश्वर, जीवन का एक क्षण मात्र है। सागर से अलग होने पर उसका कोई अस्तित्व नहीं है किंतु वह सागर से मिलने पर उसी प्रकार अमर हो जाती है जिस प्रकार आत्मा परमात्मा में विलीन होकर अमर हो जाती है।

प्र.10 कवि व्यक्ति का सामाजिकरण क्यों करना चाहता है?

उत्तरः– कवि के अनुसार सर्वगुण संपन्न व्यक्ति का जब समाज में विलय होगा तो समाज और राष्ट्र और अधिक मजबूत बन जाएंगे।

प्र.11 दीप अकेला कविता में कवि ने दीप को स्नेहभरा गर्वभरा एवं मदमाता क्यों कहा है?

उत्तरः– दीप अकेला कविता में दीप मनुष्य का प्रतीक है। दीप (मनुष्य) में जितना अधिक तेल (स्नेह) भरा होगा वह उतना ही अधिक ऊपर की ओर उठता (गर्वित होता) है। लौ ऊपर उठना जिस प्रकार उसमें भरे हुए तेल पर निर्भर करता है जिस प्रकार मनुष्य में विनय स्नेह आदि गुण होने से वह स्वयं को गर्वित महसूस करता है।

प्र.12 पनडुब्बा ये मोती सच्चे फिर कोन कृती लाएगा? इन पंक्ति से संबंधित तुलनात्मक भाव को लिखो।

उत्तरः– कवि कहते हैं कि यह वह गोता है जो हदय रूपी समुन्द्र में डूब कर रचनाओं रूपी मोतियों को खोज कर लाता है अर्थात कवि साहित्यकारों की और संकेत कर रहे हैं।

CBSE BHINDER

प्र.13 'मैंने देखा एक बूंद' कविता से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तरः— इस कविता में अज्ञेय ने समुन्द्र से अलग होती एक बूंद की क्षणभंगुरता की व्याख्या की है। इस कविता द्वारा कवि ने एक क्षण के महत्व को दर्शाया है।
प्र.14 'समिधा — ऐसी आग हठीला बिरला सुलगायेगा' निम्न पंक्ति का आशय लिखों।
उत्तरः— इन पंक्तियों में कवि ने एक गुणवान व्यक्ति की तुलना हवन की उस लकड़ी से की है जो खुद जल कर भी लोगों को लाभ पहुंचाती है। उसी प्रकार गुणवान व्यक्ति भी लोगों को लाभ पहुंचाता है।
प्र.15 एक मधु है स्वयं काल की सोना का युग संचय यह गोरस जीवन कामधेनु का अमृत पूत दृपय, इन पंक्तियों के भावार्थ लिखो।
उत्तर :— इन पंक्तियों में कवि मनुष्य की तुलना मधु से करते हैं और कहते हैं कि जिस प्रकार मधुमक्खी को शहद बनाने में समय लगता है, उसी प्रकार व्यक्ति को भी खुद की रचनाओं की खोज करने में समय लगता है और प्रतिभाशाली व्यक्ति कामधेनु के समान है जो हर कठिनाइयों के बाद भी हर परिस्थिति से गुजर कर शुद्धता और प्रेम से भरे व्यक्तित्व का निर्माण करता है।
प्र.16 मैंने देखा, 'एक बूंद' कविता के माध्यम से कवि हमको क्या सीख देते हैं?
उत्तर :— मैने देखा एक बूंद कविता के माध्यम से कवि लोगो को बताना चाहते हैं कि हमारे जीवन का एक—एक क्षण बहुत महत्वपूर्ण है, जैसे एक बूंद की काया एक पल में पलट जाती है, उसी प्रकार हमारे जीवन में बदलाव कभी भी आ सकता है

केशवदास

प्रश्न -1 देवी सरस्वती की उदारता का गुणगान क्यों नहीं किया जा सकता?
उत्तर - देवी सरस्वती सुर, कला तथा ज्ञान की देवी हैं। इस संसार में सबके गले में वह विराजती है। इस संसार में ज्ञान का अथाह भंडार उनकी ही कृपा से उत्पन्न हुआ है। उनकी महत्ता को व्यक्त करना किसी के भी वश में नहीं है क्योंकि उनकी महत्ता को शब्दों का जामा पहनाकर उसे बांधा नहीं जा सकता है। सदियों से कई विद्वानों ने सरस्वती की महिमा को व्यक्त करना चाहता है परन्तु वे उसमें पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाए हैं। जितना भी उसे व्यक्त करने का प्रयास किया गया, उतना ही कम प्रतीत होता है। उनमें अभी इतना बल नहीं है कि वह सरस्वती की महिमा को समझ पाएँ। अतः उनकी उदारता का गुणगान मनुष्य के वश में नहीं है।
प्रश्न - 2:चारमुख, पाँचमुख और षटमुख किन्हें कहा गया है और उनका देवी सरस्वती से क्या संबंध है?
उत्तर- कवि 'चारमुख' ब्रह्मा के लिए, 'पाँचमुख' शिव के लिए तथा 'षटमुख' कार्तिकेय के लिए कहा है। ब्रह्मा को सरस्वती का पति कहा गया है। शिव को उनका पुत्र कहा है तथा शिव पुत्र कार्तिकेय को उनका नाती कहा गया है।
प्रश्न 3: कविता में पंचवटी के किन गुणों का उल्लेख किया गया है?
उत्तर- कविता में पंचवटी के निम्नलिखित गुणों का उल्लेख किया गया है-
(क) पंचवटी में आकर दुखी लोगों के संताप्त (दुख) हर जाते हैं तथा उन्हें सुख का अनुभव होता है।
(ख) दुष्ट लोग यहाँ एक क्षण भी नहीं रुक पाते हैं।
(ग) पंचवटी इतना सुंदर है कि यहाँ का वातावरण लोगों को सुख देता है।
(घ) पंचवटी पवित्र स्थलों में से एक माना जाता है। यहाँ पर आकर हर तरह का पाप कट जाता है।
प्रश्न 4:तीसरे छंद में संकेतित कथाएँ अपने शब्दों में लिखिए?
उत्तर- तीसरे छंद में रावण की पत्नी मंदोदरी ने निम्नलिखित कथाओं का वर्णन किया है-
(क) सिंधु तर्यो उनका बनरा- इस पंक्ति में हनुमान द्वारा समुद्र लांघ कर आने की बात कही गई है। जब सीता की तलाश में हनुमान का वानर दल समुद्र किनारे आ पहुँचा तो, सभी वानर चिंतित हो गए। किसी भी वानर में इतना सामर्थ नहीं था कि समुद्र को लाँघ सके। जांमवत जी से प्रेरणा पाकर हुनमान जी समुद्र पार करके लंका पहुँच गए। मंदोदरी ने यहाँ उसी का उल्लेख किया है।
(ख) धनुरेख गई न तरी- इस पंक्ति में सीता द्वारा रावण का हरण करने की बात कही गई है। स्वर्ण हिरण को देखकर सीता ने राम से उसे पाने की इच्छा जाहिर की। सीता की इच्छा को पूरा करने हेतु राम लक्ष्मण की निगरानी में सीता को छोड़कर हिरण के पीछे चल पड़े। कुटी में सीता और लक्ष्मण को राम का दुखी स्वर सुनाई दिया। लक्ष्मण ने उस मायावी आवाज़ को पहचान लिया। परन्तु सीता द्वारा लांछन लगाए जाने पर उन्हें विवश होकर जाने के लिए तैयार होना पड़ा। वह सीता को लक्ष्मण रेखा के अंदर सुरक्षित करके राम की सहायता के लिए चले गए। रावण ने सीता को अकेली पाकर ऋषि रूप में उसका हरण करना चाहा परन्तु लक्ष्मण की खींची रेखा की प्रबल शक्ति के कारण वह उसे पार नहीं कर पाया। रावण एक शक्तिशाली राक्षस था। उसने सभी
देवताओं को अपने घर में कैद किया हुआ था। परन्तु वह उस रेखा को पार न कर सका। आखिर सीता को धर्म तथा परंपराओं का हवाला देकर रेखा को पार करने के लिए विवश किया। जैसे ही सीता ने उसे पार किया रावण ने उसका बलपूर्वक हरण कर लिया।

(ग) बाँधोई बाँधत सो न बन्यो- जब हनुमान जी ने लंका में प्रवेश किया तो उन्होंने बहुत उत्पात मचाया। उनको बलशाली राक्षस तक नहीं बाँध पाए। रावण का पुत्र अक्षत इसी समय हनुमान के हाथों मारा गया।

(घ) उन बारिधि बाँधिकै बाट करी- इस पंक्ति में पत्थरों को बाँधकर लंका आने की बात की गयी है। सीता का पता लग जाने पर राम-लक्ष्मण और सग्रीव सभी वानर सेना सहित समुद्र किनारे आ गए। सुमद्र से जब लंका तक जाने का मार्ग माँगा गया, तो समुद्र इसमें अपनी असमर्थता जताई। तब समुद्र द्वारा बताए गए उपाय से नल तथा नील ने समुद्र के ऊपर सौ योजन लंबा सेतू का निर्माण किया। रावण ने सोचा था कि कोई भी उसकी लंका तक नहीं पहुँच पाएगा। परन्तु राम तथा उनकी सेना ने इस असंभव कार्य को संभव कर दिखाया। मंदोदरी इसी बात का उल्लेख करती है।

(ङ) तेलनि तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराइ-जरी- प्रस्तुत पंक्तियों में उस समय का वर्णन किया गया है, जब अशोक वाटिका में सीता से मिलने के बाद हनुमान जी ने वहाँ कोहराम मचा दिया था। हनुमान जी को पकड़कर सज़ा के तौर पर उनकी पूंछ में रावण ने आग लगवा दी। हनुमान ने उसी जलती पूंछ के सहारे पूरी लंका को स्वाहा कर दिया और रावण कुछ न कर सका। कहा जाता है, सोने से बनी लंका का सारा सोना अग्नि की तपन के कारण सागर में जा मिला। इस तरह मंदोदरी रावण का सत्य से परिचय करना चाहती है। परन्तु हतबुद्धि रावण उसकी बात को समझने से इनंकार कर देता है।

प्रश्न 5:निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

(क) पति बर्नै चारमुख पूत बर्नै पंच मुख नाती बर्नै षटमुख तदपि नई-नई।

(ख) चहुँ ओरनि नाचति मुक्तिनटी गुन धूरजटी वन पंचवटी।

(ग) सिंधु तर यो उनको बनरा तुम पै धनुरेख गई न तरी।

(घ) तेलन तूलनि पूँछि जरी न जरी, जरी लंक जराई-जरी।

उत्तर- (क) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि सरस्वती के बखान को कहने में स्वयं को असमर्थ पाता है। इसमें उनकी महिमा को अतुलनीय बताया है। उसके अनुसार सरस्वती का बखान अकथनीय है। ब्रजभाषा का बहुत सुंदर प्रयोग है। 'नई-नई' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार की छटा दिखाई देती है। कवि ने इसमें अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग किया है। तत्सम शब्दों 'पाँचमुख', 'षटमुख' तथा 'तदपि' आदि का प्रयोग किया गया है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में पंचवटी स्थान की सुंदरता का वर्णन किया गया है। कवि ने लोक सीमा से परे जाकर इसकी सुंदरता का वर्णन किया है। उसने पंचवटी की शोभा की तुलना शिव के समान की है। ब्रज का बहुत ही सुंदर प्रयोग किया है। भाषा में गेयता का गुण विद्यमान है। 'टी' शब्द का प्रयोग काव्यांश में बहुत सुंदर चमत्कार उत्पन्न कर रहा है। 'मुक्ति नटी' रूपक अलंकार का बड़ा अच्छा उदाहरण है। 'जटी' शब्द का दो बार प्रयोग हुआ है परन्तु दोनों बार इसके अलग अर्थ भिन्न हैं। अतः यह यमक का उदाहरण है।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में मंदोदरी रावण को आइना दिखाते हुए व्यंग्य कसती है। उसके अनुसार जिस राम के अनुचर बंदर ने विशाल सागर को पार कर दिया और जिसके भाई की खींची लक्ष्मण रेखा तुम पार नहीं कर सकते हो, वह सही मैं कितने शक्तिशाली होंगे। ब्रज का बहुत सुंदर ढंग से प्रयोग किया गया है। व्यंजना शब्द का कवि ने सटीक प्रयोग किया है। गेयता का गुण विद्यमान है।

(घ) प्रस्तुत पंक्तियों में मंदोदरी ने हनुमान की शक्ति से परिचय कराया है। ब्रजभाषा का सुंदर प्रयोग है। गेयता का गुण विद्यमान है। 'त' तथा 'ज' शब्दों के द्वारा काव्यांश में बहुत सुंदर चमत्कार उत्पन्न किया गया है। यह अनुप्रास अलंकार का सुंदर उदाहरण है। 'जरी' 'जरी' यमक अलंकार का उदाहरण है।

प्रश्न 6:निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए।

(क) भावी भूत बर्तमान जगत बखानत है 'केसोदास' क्यों हू ना बखानी काहू पै गई।

(ख) अघओघ की बेरी कटी बिकटी निकटी प्रकटी गुरूजान-गटी।

उत्तर- (क) प्रस्तुत पंक्ति का आशय है कि देवी सरस्वती की महत्ता इस संसार में अद्वितीय है। प्राचीनकाल से लेकर आज तक लोग इनकी महिमा का बखान करने का प्रयास करते हैं। परन्तु न तब संभव था और न आज संभव है। इसका कारण यह है कि इनके स्वभाव में नित्य नवीनता विद्यमान रहती है। भाव यह है कि लोग उनसे चमत्कृत हो जाते हैं और उनकी बुद्धि चकरा जाती है। वह वर्णनानीत है इसलिए इनका बखान नहीं किया जा सकता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में पंचवटी के सौंदर्य तथा पवित्रता का वर्णन देखने को मिलता है। कवि के अनुसार पंचवटी के दर्शन मात्र से ही घोर पापों के बंधनों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। इसके अंदर ज्ञान के भंडार भरे पड़े हैं, यहाँ जाकर इसका आभास हो जाता है। पंचवटी पापों को मिटाने तथा पुण्यों को बढ़ाने में सक्षम है।

CBEO BHINDER

पाठ–सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

निम्नलिखित वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न –1 सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का बचपन का नाम था–

(अ) सूर्यप्रकाश (ब) सूर्यकुमार
(स) सूर्यकान्त (द) सूर्यराज (ब)

प्रश्न– 2 निराला का समस्त साहित्य "निराला रचनावली " नाम से कितने खण्डों में प्रकाशित है–

(अ) छः (ब) चार
(स) आठ (द) बारह (स)

प्रश्न– 3 कवि निराला के अनुसार किसकी लौ बुझ गई है–

(अ) दीपक (ब) पृथ्वी
(स) स्वयं (द) सूर्य (ब)

प्रश्न–4 "सरोज स्मृति" कैसा गीत है–

(अ) गजल गीत (ब) शोक गीत
(स) लोग गीत (द) देश भक्ति गीत (ब)

प्रश्न– 5 सरोज को श्रद्धांजलि के रूप में कवि क्या समर्पित करना चाहता है–

(अ) फूलों का गुलदस्ता (ब) पवित्र जल
(स) पूण्य कर्मों का फल (द) धन–दौलत (स)

प्रश्न–6 कवि निराला कौनसे छन्द के मुख्य प्रवर्तक माने जाते हैं–

(अ) कवित्त छन्द (ब) सवैया छन्द
(स) वर्णिक छन्द (द) मुक्त छन्द (द)

निम्नलिखित अति लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न–7 "गीत गाने दो मुझे" कविता में कवि हमें क्या करने की प्रेरणा देता हैं ?

उत्तर– "गीत गाने दो मुझे" कविता में कवि हमको निरन्तर संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं।

प्रश्न–8 "गीत गाने दो मुझे" कविता किस कवि की रचना है ?

उत्तर– " गीत गाने दो मुझे " कविता कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की रचना है।

प्रश्न–9 "सरोज स्मृति" कविता किस भाव पर केन्द्रित है ?

उत्तर– "सरोज स्मृति" कविता निराला की दिवंगत पुत्री सरोज की स्मृतियों पर केन्द्रित है।

प्रश्न–10 " सरोज स्मृति" कविता का मुख्य स्वर क्या है ?

उत्तर– "सरोज स्मृति" कविता में वात्सल्य से भरा एक पिता का विलाप है।

प्रश्न–11 कवि निराला पुत्री सरोज को किसकी पुत्री के समान मानते हैं ?

उत्तर– कवि निराला पुत्री सरोज को कण्व ऋषि की पुत्री शकुन्तला के समान मानते हैं।

निम्नलिखित लघूत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न–12 'गीत गाने दो मुझे तो, वेदना को रोकने को'। वेदना को रोकने के लिए कवि गीत गाने की बात क्यों कहता है ?

उत्तर– कवि निराला का जीवन सदा कष्ठमय और वेदनाग्रस्त रहा। उस दशा में अपने जीवन और समाज की वेदना को भूलने के लिए, उससे छुटकारा पाने के लिए कवि गीत गाने की बात कहता है, क्योंकि गीत गाने से अपनी वेदना भी कम हो जायेगी और अन्याय–अत्याचार एवं शोषण से जूझने वालों को भी संघर्ष करने की शक्ति मिल सकेगी।

प्रश्न–13 " गीत गाने दो" कविता का केन्द्रिय भाव लिखिए।

उत्तर– "गीता गाने दो" कविता में कवि ने उन परिस्थितियों की ओर संकेत किया है जिसमें संघर्षों का सामना करते हुए समर्थ एवं शक्तिशाली व्यक्तियों का जीना भी कठिन हो जाता है। इस दृष्टि से वातावरण प्रतिकूल है। कवि स्वयं अपने जीवन में संघर्ष करते–करते थक गया है। जीवन–मूल्यों का पतन हो रहा है। शोषण और अन्याय के सामने सारे संसार को हार माननी पड़ रही है। मानवता के कहीं दर्शन नहीं होते। मनुष्य की चेतना शक्ति समाप्त हो गई है। कवि ऐसे निराश जीवन में आशा का संदेश देना चाहता है।

प्रश्न–14 "सरोज स्मृति" कविता के संकलित अंश का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– 'सरोज स्मृति' के संकलित अंश का प्रतिपाद्य कवि निराला के उल्लास और विषाद की अभिव्यक्ति करना है। इसमें पुत्री सरोज के विवाह को लेकर प्रसन्नता और उचित लालन–पालन न कर पाने से वेदना व्यक्त हुई है। कन्या के असामयिक निधन पर तो कवि वेदना–विषाद की मार्मिक व्यंजना की है।

CBSEBHINDER

प्रश्न–15 'सरोज स्मृति' को शोक गीत क्यों कहा जाता है ?

उत्तर– शोक–गीत प्रियजन की मृत्यु के उपरान्त उसके विरह में लिखा जाने वाला गीत होता है। उसमें रचनाकार अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करता है। 'सरोज स्मृति' भी निराला की ऐसी ही लम्बी कविता है। निराला ने अपनी प्रिय पुत्री सरोज की मृत्यु के उपरान्त यह कविता लिखी थी जिसमें शोक, निराशा और पीड़ा के भावों की अभिव्यक्ति हुई है। पुत्री की मृत्यु के पश्चात कवि को आत्मग्लानि की अनुभूति हुई थी क्योंकि जब वह जीवित थी निराला उसके लिए कुछ नहीं कर सके। इस गीत में कवि के मार्मिक भावों की अभिव्यक्ति हुई है।

प्रश्न–16 'देखा मैंने वह मूर्ति–धीति,
मेरे वसन्त की प्रथम गीति– पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– निराला जी कहते हैं कि मैंने सरोज के दुलहन रूप में शीतलता और धैर्य की उस मूर्ति को देखा जिसे मैंने अपने जीवन के प्रथम वसन्त में मधुर संगीत के रूप में अनुभव किया था। सरोज को दुलहन के रूप में देखकर कवि को अपनी दिवंगत पत्नी तथा उसके साथ यौवन में गाये गीतों की स्मृति हुई। उनको अपना यौवनकाल याद आ गया।

निम्नलिखित निबन्धात्मक प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

प्रश्न–17 '' गीत गाने दो मुझे'' कविता के माध्यम से कवि निराला ने स्वयं के जीवन को व्यक्त किया है। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर– ''गीत गाने दो मुझे'' कविता में कवि ने ऐसे समय की ओर इशारा किया है जहाँ स्वार्थपरता एवं अराजकता के कारण निराशा व्याप्त है। वेदना से पीड़ित कवि अपनी व्यथा को भुलाने के लिए गीत गाना चाहता है। कवि के जीवन में अनेक ऐसी घटनाएँ हो चुकी थी जिससे कोई भी आम आदमी कमजोर पड़ जाता है। उनके जीवन में माँ, पत्नी और फिर पुत्री की मृत्यु ने उन्हें भीतर तक तोड़कर रख दिया था। संसार में जिधर देखो अपरिचित ही व्याप्त था। कोई किसी पर विश्वास नहीं करता था। जीवन जीना आसान नहीं रह गया था। कवि के पास जीवन जीने के लिए जो थोड़ा–बहुत था, वह भी छल कपट द्वारा छीना जा चुका था। लोगो में जीने की इच्छा शक्ति खत्म–सी हो गई थी। इसलिए इस कविता के माध्यम से कवि एक बार फिर पृथ्वी पर जागृति गीत गाकर कर्म–शक्ति के भाव जगाना चाहता था।

प्रश्न–18 निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए–

चोट खाकर राह चलते
होश के भी होश छूटे,
हाथ जो पाथेय थे, ठग
ठाकुरों ने रात लूटे,
कंठ रुकता जा रहा है,
आ रहा है काल देखो।

भाव पक्ष– कवि का कथन है कि जीवन में संघर्षों से जूझते–जूझते, जो समर्थ थे, जिनमें संघर्षों का सामना करने की शक्ति थी, वे भी हार गए। उनकी जिजीविषा समाप्त हो गई। जो जीवन मूल्यवान था अथवा जीवन में जो मूल्यवान था उसे शोषकों ने, समाज के भेड़ियों ने छीन लिया। ठग तो रात को लूटते हैं पर समाज के इन ठगों ने दिन में ही जीवन की मूल्यवान वस्तु लूट ली है। कंठ रुकता जा रहा है, लगता है काल ने आकर घेर लिया है। मूल भाव यह है कि संसार में जीना कठिन हो गया है। लोग किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए हैं। जीवन में सभी कुछ खो चुके हैं, पर कुछ कहने में असमर्थ हैं।

कला पक्ष– निराला की अभिव्यक्ति का अपना एक निराला ही ढंग है। वे छायावादी युग के कवि है फिर भी उन्होंने एक नई राह पकड़ी जो उनको प्रगतिवाद के निकट तक ले जाती है। उपर्युक्त पंक्तियाँ मुक्त छन्द में लिखी गई। तत्सम शब्दावली है। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण एवं भावानुकूल है। ' ठग–ठाकुरों' जैसे प्रतीकों का प्रयोग किया है। 'ठग–ठाकुरों' में अनुप्रास अलंकार और लक्षणा शक्ति है।

उपर्युक्त पंक्तियों का भावपक्ष एवं कलापक्ष दोनों सबल है।

प्रश्न–19''सरोज स्मृति'' एक शोकगीत है। इस कथन के आधार पर उक्त कविता की समीक्षा कीजिए।

उत्तर– 'सरोज–स्मृति' हिन्दी काव्य कला में अपने ही ढंग का एकमात्र शोकगीत है। कवि निराला ने वात्सल्य भाव से पूरित होकर अपनी पुत्री की मृत्यु पर लिखी इस कविता में करूणा एवं वेदना को प्रमुखता दी है। 'सरोज–स्मृति' कविता में कवि ने पुत्री के वात्सल्य से लेकर उसकी मृत्यु तक की स्मृतियों को बड़े ही प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। इसमें पुत्री सरोज के नववधू स्वरूप का बड़ा ही सुन्दर–सजीव व मार्मिक रूप प्रस्तुत किया है। कविता में जहाँ पुत्री के प्रति प्रेम–भाव है, वहीं कवि निराला के एक भाग्यहीन पिता का संघर्ष, समाज से उसके सम्बन्ध, पुत्री के प्रति बहुत कुछ न कर पाने का अपराध–बोध भी प्रकट हुआ है। निराला ने साथ ही अपने जीवन संघर्षों को भी उभारा है।

CBSE BHINDER

प्रश्न–20 निम्नलिखित पंक्तियों के भाव पक्ष एवं कला पक्ष पर अपने विचार प्रकट कीजिए–

उत्तर– **शृंगार रहा जो निराकार,**
इस कविता में उच्छ्वसित–धार,
गाया स्वर्गीया–प्रिया–संग–
भरता प्राणों में राग–रंग,
रति रूप प्राप्त कर रहा वही,
आकाश बदल कर बना मही।

भावपक्ष– निराला जी कहते हैं कि मैंने तुम्हारे शृंगार में उस शृंगार को देखा जो मेरे काव्य के रस में छिपा रहता है और सहस्र रसधारा के रूप में प्रवाहित होता रहता है। मेरी कविता में जो भावधारा प्रवाहित हो रही थी और जिसे मैंने अपनी स्वर्गीया पत्नी के साथ गाया था वह आज भी दाम्पत्य सुख के रूप में समस्त विश्व में व्याप्त हो रही है। लगता है वह रंग–रूप आकाश से उतर आया है और तेरे शृंगारिक रूप में साकार हो उठा है।

कलापक्ष– उपर्युक्त पंक्तियाँ निराला की कल्पना का सुन्दर उदाहरण है। सरोज के सौन्दर्य का साकार चित्रण किया गया है। सामाजिक शब्दावली का प्रयोग किया गया है। तत्सम शब्दों का प्रयोग है। राग–रंग, रति–रूप में अनुप्रास अलंकार है। भाषा में प्रसाद गुण हैं मुक्त छन्द और वर्णनात्मक शैली है।

प्रश्न–21 " सरोज– स्मृति" कविता का सार लिखिए।

उत्तर– "सरोज–स्मृति" निराला की लम्बी कविताओं में से एक है। इसका आधार जीवन है। इसमें एक पिता के हृदय की आन्तरिक पीड़ा की अभिव्यक्ति हुई है। यह वह रचना है जो पूत्री सरोज की मृत्यु के दो वर्ष बाद सन् 1935 में निराला जी ने लिखी थी। इसमें पिता का विलाप है। पूरी कविता में पूत्री सरोज के जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं का स्मरण करते हुए उन्हें व्यक्त किया है। प्रस्तुत अंश में पुत्री के विवाह और मृत्यु का वर्णन है। पुत्री के विवाह के समय कवि को अपनी पत्नी याद आती है। कवि ने पुत्री की विदाई के समय स्वयं की माँ का धर्म निभाया। पुत्री के लिए बहुत कुछ न कर पाने के कारण उन्हें पश्चाताप है। इसमें निराला के जीवन संघर्ष की झलक मिलती है। उन्होंने स्वयं कहा है–'दुःख ही जीवन की कथा रही, क्या कहूँ आज जो नहीं कही"।

प्रश्न–22 **भर गया है जहर से**
संसार जैसे हार खाकर,
देखते है लोग लोगों को,
सही परिचय न पाकर,
बुझ गई है लौ पृथा की,
जल उठो फिर सींचने को।

उपर्युक्त पंद्याश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

उत्तर–

सन्दर्भ–प्रस्तुत पंक्तियाँ छायावादी कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' द्वारा रचित कविता "गीत गाने दो मुझे" से अवतरित है। यह कविता हमारी पाठ्य पुस्तक के अन्तरा भाग–2 में संकलित है।

प्रसंग– इस काव्यांश में कवि ने संसार में व्याप्त शोषण तथा अत्याचार की भयावह स्थिति का चित्रण किया है।

व्याख्या– कवि निराला कहते हैं कि सारा संसार विषमता से भरा गया है। विषमता के कारण जो लोग निराश हो गये हैं तथा हार मान बैठे हैं, अर्थात् जिजीविषा खो बैठे हैं। मनुष्यता हार गई है। विषम परिस्थितियों से संघर्ष करने के कारण लोग जीना नहीं चाहते है। वे जीवन का दाँव हार चुके हैं। लोग एक दूसरे को अपरिचित की तरह देखते हैं। मनुष्य को उसकी सही पहचान नहीं मिल रही है। पारम्परिक स्नेह, सौहार्द का भाव समाप्त हो गया है। उसकी चेतना की लौ बुझ गई है। अतः कवि उस बुझी लौ (जिजीविषा) को पुनः जगाना चाहता है। कवि सांसारिक विषमता को दूर करने और संघर्ष करने के लिए लोगों का आह्वान करना चाहता है। कवि गीत गाकर लोगों को प्रेरणा देना चाहता है कि वे जागें और अपने तेज से पृथ्वी की बुझी हुई लौ (जिजीविषा) को पुनः प्रज्वलित करें। कवि क्रांति चाहता है। विषाक्त और असंगत व्यवस्था को बदलना चाहता है।

विषेश– (1) सार्थक शब्दों का प्रयोग।
(2) भाषा लाक्षणिक एवं प्रसाद गुण से सम्पन्न।

(3) लोग–लोगों में अनुप्रास अलंकार।
(4) 'भर गया है जहर से संसार जैसे हार खाकर' में उपमा अलंकार।
(5) मुक्त छनद

प्रश्न–23 निम्नलिखित पंक्तियों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

मुझ भाग्यहीन की तू संबल,
युग वर्ष बाद जब हुई विकल,
दुःख ही जीवन की कथा रही,
क्या कहूँ आज, जो नहीं कही।
हो इसी क्रम पर वज्रपात,
यदि धर्म रहे नत सदा माथ
इस पथ पर, मेरे कार्य सकल
हो भ्रष्ट शीत के–से शतदल।
कन्ये, गत कर्मों का अर्पण
कर, करता मैं तेरा तर्पण।

प्रसंग– प्रस्तुत काव्यांश कहाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रसिद्ध कविता ''सरोज–स्मृति'' से अवतरित है। कवि स्वर्गीय पुत्री का स्मरण करते हुए भाव विह्वल हो उठता है। इस अंश में निराशा से भरे हुए पिता के भावों का वर्णन हुआ है।

व्याख्या– कवि निराला कहते हैं कि हे पुत्री! मेरे जैसे भाग्यहीन पिता का एकमात्र सहारा तू ही तो थी, लेकिन अब मेरी मृत्यु के इतने वर्षों बाद जब व्याकुलता बढ़ गई है, तब मैं तुझसे क्या कहूँ ? मैंने अपने जीवन की इस व्यथा–कथा को आज तक किसी से नहीं कहा, क्योंकि दुःख ही मेरे जीवन की कथा है। मैंने जीवन में दुःख ही दुःख देखे हैं।

कवि भाव–विह्वल होकर कहता है कि मेरे ऊपर चाहे कितनी ही भयानक विपत्तियाँ आयें। यदि धर्म मेरे साथ रहा तो इन विपदाओं को मस्तक झुकाकर सहज भाव से स्वीकार कर लूँगा। धर्म के रास्ते पर चलते हुए भले ही मेरे समस्त सत्कर्म उसी प्रकार भ्रष्ट हो जायें जैसे सर्दी की अधिकता के कारण कमल पुष्प नष्ट हो जाते हैं, लेकिन मैं अपने रास्ते से नहीं हटूँगा। कवि अन्त में कहता है कि बेटी, मैं अपने जीवन के समस्त शुभ कर्मों को तुझे अर्पण करते हुए तेरा तर्पण करता हूँ। अर्थात् अपने कर्मफलों को श्रद्धांजलि रूप में अर्पित करता हूँ।

विशेष–(1) कवि की विवशता एवं वेदना की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।
(2) करुण एवं वात्सल्य रस का मिश्रण है। 'शीत के–से शतदल' में उपमा अलंकार है।
(3) भाषा सहज, सरल व तत्सम शब्दावली से युक्त है।

प्रश्न–24 निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

माँ की कुल शिक्षा मैंने दी
पुष्प–सेज तेरी स्वयं रची,
सोचा मन में, वह शकुंतला,
पर पाठ अन्य यह, अन्य कला।
कुछ दिन रह गृह तू फिर समोद,
बैठी नानी की स्नेह–गोद।

प्रसंग–प्रस्तुत पद्यांश महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की प्रसिद्ध कविता 'सरोज–स्मृति' से लिया गया है। इस अंश में कवि निराला अपनी पुत्री के विवाह के बाद से लेकर ननिहाल का वर्णन कर रहे हैं।

व्याख्या– कवि निराला अपनी स्वर्गीय पुत्री सरोज को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं कि तेरी माँ के अभाव में माता द्वारा दी जाने वाली शिक्षा भी मैंने दी थी। विवाह उपरान्त तेरी पुष्प–शैया भी स्वयं मैंने सजाई थी। मन में सोचा था कि जिस प्रकार कण्व ऋषि की पुत्री शकुंतला माँ विहीन थी, इसी प्रकार मेरी पुत्री सरोज है, किन्तु उस घटना और इस घटना की स्थिति में भिन्नता है, शकुंतला की माता उसे स्वयं छोड़कर गई थी किन्तु सरोज की माँ को असमय ही मौत ने अपने आगोश में ले लिया था। कवि आगे कहता है कि विवाह के कुछ दिन बाद तू मेरे पास रह कर प्रसन्नता के साथ नानी की प्रेममयी गोद पाने के लिए ननिहाल चली गई थी।

विशेष– (1) पिता द्वारा पुत्री का स्मरण तथा उसके शोकग्रस्त हृदय का भावपूर्ण वर्णन है।
(2) खड़ी बोली हिन्दी का प्रयोग है। संस्कृत शब्दों का गुम्फल है।

प्रश्न –25 सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर– सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1898 ई. में बंगाल के मेदिनीपुर जिले के महिषादल गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम 'सूर्यकुमार' था। पत्नी की प्रेरणा से निराला की साहित्य और संगीत में रूचि पैदा हुई। सन् 1918 में पत्नी का देहान्त हो गया। पत्नी की मृत्यु के बाद कवि ने अपना सारा प्रेम–स्नेह पुत्र–पुत्री पर उड़ेल दिया। किन्तु दैवयोग से विवाहित पुत्री सरोज भी चल बसी। पुत्री की मृत्यु ने निराला को अन्दर तक झकझोर दिया तथा पुत्री की स्मृति में

''सरोज–स्मृति'' नामक एक लम्बी कविता लिखी। निराला का जीवन अभावों और दुःखों को झेलते हुए सन् 1961 ई. में स्वर्ग सिधार गये। हिन्दी की छायावादी कविता के प्रमुख स्तम्भ निराला ने मुक्तछन्द का प्रवर्तन किया। उन्हें भारतीय इतिहास, दर्शन, और परम्परा का व्यापक बोध था। श्रमिक–कृषक, प्रकृति एवं संस्कृति आदि के साथ जीवन का संघर्षमय चित्रण उनकी रचनाओं में आद्योपांत दिखाई देता है। इनका समस्त साहित्य 'निराला रचनावली' नाम से आठ खण्डों में प्रकाशित है।

इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ– परिमल, गीतिका, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा, नये पत्ते, बेला, अर्चना, आराधना, गीत–गुंज आदि।

निराला ने सुकुल की बीबी, लिली आदि कहानियाँ तथा अप्सरा, अलका, प्रभावती, कुल्ली भाट आदि उपन्यास लिखे।

निराला की भाषा संस्कृत निष्ठ है। निराला छायावाद के साथ–साथ प्रगतिवादी कवि भी हैं।

केदारनाथ सिंह (बनारस)

1. बनारस कविता में किस ऋतु का उल्लेख हुआ है?
उत्तरः– बसन्त ऋतु का।
2. नवांकुर किसमें फूटने लगते हैं?
उत्तरः– जो अस्तित्वहीन हैं उनमे नवांकुर फूटने लगते हैं।
3. बनारस शहर में संध्या कैसे उतरती है?
उत्तरः– धीरे–धीरे।
4. सैकड़ों वर्षों से किसकी खडाऊँ बनारस में रखी हैं?
उत्तरः– तुलसीदास जी की।
5. अलक्षित शब्द का अर्थ बताइये।
उत्तरः– अज्ञात या दिखाई न देने वाला।
6. "और खाली होता है यह शहर" यहॉ शहर शब्द किस नगर के लिए प्रयुक्त हुआ है?
उत्तरः– बनारस नगर के लिए प्रयुक्त हुआ है।
7. बनारस कविता में शहर का जीवन कैसे चलता है?
उत्तरः– धीमी गति से चलता है।
8. बच्चे ने हिमालय को किस दिशा में बताया था?
उत्तरः– जिस दिशा में उसकी पतंग उडी जा रही थी?
9. बनारस शहर की दो विशेषताएं बताइये।
उत्तरः– 1. भारत का पुराना शहर है।
2. बनारसी साडियों के लिए प्रसिद्ध है।
10. बनारस के भिखारियों का क्या उल्लेख किया गया है?
उत्तरः– बसन्त ऋतु आगमन से बनारस के भिखारियों को अधिक भीख मिलती है।
11. मुहल्लों में धूप क्यों छा जाती है?
उत्तरः– वसंत के अचानक आगमन से।
12. वसंत के अकस्मात् आगमन से लहरतारा या मडुवाडीह मोहल्लों से क्या चलती हैं?
उत्तरः– धूल भरी आँधियाँ चलती है।
13. 'खाली कटोरों में बसन्त का उतरना' पंक्ति का आशय क्या है?
उत्तरः– 'भिखारियों' के कटोरे भीख से भर जाना।
14. "बिल्कुल बेखबर" में कौनसा अलंकार है?
उत्तरः– अनुप्रास अलंकार।
15. दिशा कविता का मूल आधार क्या है?
उत्तरः– मनोविज्ञान।
16. निम्न पक्तियों में कवि का भाव क्या है?

जो है वह खडा है
बिना किसी स्तम्भ के।

उत्तरः– बनारस शहर की प्राचीनता, आस्था, विश्वास भावित अत्यन्त सुदृढ है जो बिना किसी सहारे के जन जीवन में समाई हुई है।

CBEO BHINDER

17. बनारस कविता में कुछ आम बोलचाल के शब्दों का प्रयोग हुआ है। ऐसे कोई दो शब्द लिखिए।
उत्तरः— 1. सुग बुगाना
2. पचखियाँ
18. शाम धीरे–धीरे होती है
यह धीरे–धीरे होना
यहाँ धीरे–धीरे में कौनसा अलंकार है?
उत्तरः— पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
19. कवि केदारनाथ की कविता बनारस में भाषा के कौनसे गुण का प्रयोग हुआ है?
उत्तरः— प्रसाद गुण युक्त है।
20. कवि केदारनाथ सिंह का जन्म कब और कहाँ हुआ?
उत्तरः— 7 जुलाई 1934 ग्राम चकिया जिला–बलिया (उत्तर प्रदेश)।

प्रश्न 21-बनारस में वसंत का आगमन कैसे होता है और उसका क्या प्रभाव इस शहर पर पड़ता है?

उत्तर— कवि के अनुसार अचानक बनारस में वसंत का आगमन होता है। मुहल्लों के हर स्थानों पर धूल का बवंडर बनने लगता है। इस कारण चारों ओर धूल छा जाती है और लोगों के मुँह में धूल के होने से किरकिराहट उत्पन्न होने लगती है। प्राय: वसंत में फूलों की बहार छा जाती है, सुंगध सारे वातावरण में व्याप्त हो जाती है। नए पत्ते तथा कोपलें निकलने लगती है। परन्तु इस वसंत में ऐसा कुछ नहीं है। यहाँ तो बिलकुल अलग तरह का वसंत आता है, जो धूल से भरा होता है। भिखारी के कटोरों के मध्य वसंत उतरता दिखाई देता है। गंगा के घाट लोगों से भर जाते हैं। यहाँ तक इस मौसम में बंदरों की आँखों में नमी दिखाई देती है।

प्रश्न 22 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' से क्या आशय है?

उत्तर— 'खाली कटोरों में वसंत का उतरना' का आशय है कि भिखारी को भीख मिलने लगी है। इससे पहले उन्हें भीख नसीब नहीं हो रही थी। गंगा के घाटों में भिखारी भिक्षा की उम्मीद पर आँखें बिछाए बैठे हुए थे लेकिन उनके भिक्षापात्र खाली ही थे। अचानक घाट पर भीड़ बढ़ने लगी है और लोग उन्हें भिक्षा दे रहे हैं। भिक्षा मिलने से उनके खाने-पीने संबंधी चिंताएँ कुछ समय के लिए समाप्त हो गई हैं और उनके मुख पर प्रसन्नता दिखाई देनी लगी है। अत: कवि इस स्थिति को खाली कटोरों में वसंत का उतरना कहता है।

प्रश्न 23 बनारस की पूर्णता और रिक्तता को कवि ने किस प्रकार दिखाया है ?

उत्तर— कवि बनारस की पूर्णता को उसके उल्लास भरे दिन से दर्शाता है। उसके अनुसार यह शहर हर स्थिति में प्रसन्न रहता है। यहाँ का हर दिन तकलीफों तथा कठिनाइयों के बाद भी उल्लास और आनंद से भरपूर होता है। बनारस की रिक्तता को वह मृत शरीरों के माध्यम से दर्शाता है। उसके अनुसार रोज़ ही यहाँ कितने शव दाह-संस्कार के लिए गंगा घाट की ओर जाते हैं। वे शव कंधों पर सवार होकर अपनी जीवन की अंतिम यात्रा पर निकल रहे होते हैं। यह रिक्तता बनारस का नित्य क्रम है, जो मृत्यु रूपी परम सत्य का अहसास दिलाती है।

प्रश्न 24 बनारस में धीरे-धीरे क्या होता है? 'धीरे-धीरे' से कवि इस शहर के बारे में क्या कहना चाहता है?

उत्तर कवि के अनुसार बनारस शहर में धूल धीरे-धीरे उड़ती है, यहाँ लोग धीरे-धीरे चलते हैं, धीरे-धीरे ही यहाँ मंदिरों में घंटे बजते हैं तथा शाम भी यहाँ धीरे-धीरे होती है। कवि के अनुसार यहाँ सभी कार्य धीरे-धीरे होना इस शहर की विशेषता है। यह शहर को सामूहिक लय प्रदान करता है। धीरे-धीरे शब्दों द्वारा कवि बनारस में हो रहे बदलावों को दर्शाता है। उसके अनुसार सारी दुनिया में तेज़ी से बदलाव हो रहे हैं। इन बदलावों की रफ़्तार इतनी तेज़ है कि पुराना सब खो गया है। लोग स्वयं को इन बदलावों में झोंक रहे हैं। इससे हमारी सभ्यता और संस्कृति को नुकसान पहुँचता है। परन्तु बनारस
इन बदलावों से अभी तक अछूता है। वहाँ बदलाव हो अवश्य रहे हैं परन्तु उनकी रफ़्तार बहुत कम है। इस प्रकार आज भी बनारस की संस्कृति, विरासत तथा धार्मिक मान्यताएँ वैसी की वैसी ही बनी हुई हैं। वह अपने पुराने स्वरूप को बनाए हुए है। तेज़ी के इस दौर में वह भूत तथा वर्तमान से बंधे हुए दृढ़तापूर्वक चल रहा है।

CBSE BINDER

प्रश्न 25 धीरे-धीरे होने की सामूहिक लय में क्या-क्या बँधा है?

उत्तर – धीरे-धीरे की इस सामूहिक लय में पूरा बनारस बंधा हुआ है। यह लय इस शहर को मजबूती प्रदान करती है। धीरे-धीरे की सामूहिक लय में यहाँ बदलाव नहीं हुए हैं और चीज़ें प्राचीनकाल से जहाँ विद्यमान थीं, वहीं पर स्थित हैं। गंगा के घाटों पर बंधी नाव आज भी वहीं बँधी रहती है, जहाँ सदियों से बँधी चली आ रही हैं। संत कवि तुलसीदास जी की खड़ाऊ भी सदियों से उसी स्थान पर सुसज्जित हैं। भाव यह है कि धीरे-धीरे की सामूहिक लय के कारण शहर बँधा ही नहीं है बल्कि वह इस कारण से मजबूत हो गया है। अपने आस-पास हो रहे बदलावों से यह शहर अछूता है। यहाँ कि प्राचीन परंपराएँ, संस्कृति, मान्ताएँ, धार्मिक आस्थाएँ, ऐतिहासिक विरासत वैसी की वैसी ही हैं। लोग आज वैसे ही गंगा को माता की संज्ञा देकर उसकी पूजा अर्चना करते हैं, उनमें आधुनिक सभ्यता का रंग नहीं चढ़ा है इसलिए यह शहर अपने पुराने स्वरूप को संभाले हुए बढ़ रहा है।

प्रश्न 26 'सई साँझ' में घुसने पर बनारस की किन-किन विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तर – कवि के अनुसार सई-साँझ के समय यदि कोई बनारस शहर में जाता है, तो उसे निम्नलिखित विशेषताओं का पता चलता है।-

क) यहाँ मंदिरों में हो रही आरती के कारण सारा वातावरण आलोकित हो रहा होता है।

ख) आरती के आलोक में बनारस शहर की सुंदरता अतुलनीय हो जाती है। यह कभी आधा जल में या आधा जल के ऊपर सा जान पड़ता है।

ग) यहाँ प्राचीनता तथा आधुनिकता का सुंदर रूप दिखाई देता है। अर्थात जहाँ एक ओर यहाँ प्राचीन मान्यताएँ जीवित हैं, वहीं यह बदलाव की ओर भी अग्रसर है।

घ) गंगा के घाटो में कहीं पूजा का शोर है, तो कहीं शवों का दाहसंस्कार होता है, जो हमें जीवन के कड़वे सत्य के दर्शन कराता है।

प्रश्न 27 बच्चे का उधर-उधर कहना क्या प्रकट करता है?

उत्तर – 'बच्चे का उधर-उधर कहना' प्रकट करता है कि उस दिशा में उसकी पतंग उड़ी जा रही है। जहाँ उसकी पतंग उड़ रही है, वह उसी दिशा को जानता है। हिमालय की दिशा का उसे ज्ञान नहीं है। वह तो उसी दिशा पर अपना ध्यान केन्द्रित किए हुए है।

प्रश्न 28 'मैं स्वीकार करूँ, मैंने पहली बार जाना हिमालय किधर है'- प्रस्तुत पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर – प्रस्तुत पंक्तियों का भाव है कि मैं पहले समझता था कि मैं जानता हूँ हिमालय कहाँ है। अर्थात मुझे मालूम था कि हिमालय उत्तर दिशा में स्थित है। परन्तु बच्चे से इसके बारे में विपरीत दिशा जानकर मालूम हुआ कि जो मुझे पता है, वह तो गलत है। हर मनुष्य का सोचने-समझने का नजरिया तथा उसका यथार्थ अलग-अलग होता है। उसी के आधार पर वह तय करता है कि क्या सही है। बच्चे के लिए उसकी पतंग बहुत महत्वपूर्ण थी। हिमालय की दिशा से उसे कोई लेना-देना नहीं है। वह तो बस अपनी पतंग को पा लेना चाहता है। वह पतंग जिस दिशा में बढ़ती है, वही उसका सत्य है।

CBSE BINDER

जयशंकर प्रसाद

प्र.1 'छलछल' में अंलकार है –
(अ) अनुप्रास (ब) पुनरूक्तिप्रकाश (स) उपमा (द) उत्प्रेक्षा (ब)
प्र.2 देवसेना ने जीवन में भ्रमवंश कौन–सी भूल की ?
(अ) राष्ट्र रक्षा का व्रत लिया (ब) स्कंदगुप्त से प्रेम किया
(स) स्कंदगुप्त के प्रेम को ठुकराया (द) भीख मांगने का व्रत लिया (ब)
प्र.3 देवसेना की वेदना का मूल कारण है –
(अ) आर्यावर्त पर हूणों का आक्रमण (ब) भाई बन्धुवर्मा की मृत्यु का शोक
(स) स्कंदगुप्त का प्रेम नहीं मिलना (द) लोगों की कुदृष्टि (स)
प्र.4 लौटा लो यह अपनी थाती ' यहाँ थाती ' शब्द का व्यजंनात्मक अर्थ है –
(अ) धरोहर (ब) सम्पत्ति (स) दी हुई वस्तु (द) प्रेम (द)
प्र.5 कार्नेलिया ने अपने गीत में सही मायने में भारत की पहचान का मूलाधार क्या बताया है ?
(अ) आतिथ्य सत्कार (ब) भारतीयों का करूणा भाव
(स) सांस्कृतिक गौरव और प्राकृतिक सौदंर्य (द) सूर्योदय का दृश्य (ब)
प्र.6 देव सेना का गीत प्रसाद जी के किस नाटक से उद्धृत किया गया है –
(अ) चन्द्रगुप्त (ब) स्कंदगुप्त (स) अजातशत्रु (द) ध्रुवस्वामिनी (ब)
प्र.7 कार्नेलिया का गीत प्रसाद जी के किस नाटक से उद्घृत किया गया है –
(अ) स्कदंगुप्त (ब) चन्द्रगुप्त (स) अजातशत्रु (द) ध्रुवस्वामिनी (ब)

प्र.1 'देवसेना का गीत' किस कवि द्वारा रचित है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' छायावादी महाकवि जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित है।
प्र.2 'देवसेना का गीत' कविता में किस भाव को प्रमुखता मिली है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' में निराशा व वेदना के भावों को प्रमुखता मिली है ।
प्र.3 देवसेना कौन थी ?
उत्तर – देवसेना मालवा के राजा बंधुवर्मा की बहन थी ।
प्र.4 'देवसेना का गीत' जयशंकर प्रसाद के कौनसे नाटक से लिया गया है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक से लिया गया है।
प्र.5 'देवसेना का गीत' किसके माध्यम से कहा गया है ?
उत्तर – 'देवसेना का गीत' प्रकृति और मनुष्य के माध्यम से कहा गया है।
प्र.6 देवसेना अपने जीवन में किससे विदा लेती है ?
उत्तर – देवसेना अपने जीवन में भावी सुखों, आशाओं व आकांक्षाओं से विदा लेती है।
प्र.7 कार्नेलिया कौन थी ?

उत्तर – कार्नेलिया सिकन्दर के सेनापति सिल्यूकस की बेटी थी।

प्र.8 'कार्नेलिया का गीत' प्रसाद के कौनसे नाटक से लिया गया है।

उत्तर – 'कार्नेलिया का गीत' प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त' नाटक से लिया गया है।

प्र.9 'अरूण यह मधुमय देश हमारा' कविता को किस रूप में प्रस्तुत किया गया है ?

उत्तर – भारतवर्ष की विशिष्टता एवं पहचान के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

प्र.10 भारतवर्ष की क्या विशेषता बताई गई है ?

उत्तर – अनजान को सहारा देना लहरों को किनारा देना भारतवर्ष की विशेषता बताई गई है।

प्र.11 'कार्नेलिया का गीत' में भारतवर्ष कहॉ बताया गया है ?

उत्तर – जिस पर पक्षी अपने प्यारे घोंसले की कल्पना कर जिस ओर उड़ते है वही प्यारा भारतवर्ष है।

CBEO BHINDER

प्र.12 'कार्नेलिया का गीत' का कथ्य क्या है ?
उत्तर – भारत देश की गौरवगाथा तथा प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन प्रमुख कथ्य है ।
प्र.13 ' हेमकुम्भ ले उषा सवेरे ' में कौनसा अलंकार है ?
उत्तर – इस पंक्ति में प्रकृति का मानवीकरण व रूपक अलंकार है।
प्र.14 ' अनजान को मिलता एक सहारा ' से भारत की कौनसी विशेषता पता चलती है ?
उत्तर – ' अतिथि देवो भव ' अर्थात् आने वाले सभी अतिथि देवता समान संस्कृति का पता चलता है।
प्र.1 ' कार्नेलिया का गीत ' कविता का भाव–सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर – ' कार्नेलिया का गीत ' का भाव–सौन्दर्य यह है कि यहॉ प्रातःकालीन परिवेश अतीव मनोरम रहता है तथा यहाँ पर अनजान लोगों को सहारा तथा लहरों को किनारा मिल जाता है। भारत प्राचीन देश है, जहाँ पर सभ्यता का सूर्य अपनी आभा–लालिमा सर्वप्रथम बिखेरता है। इस गीत में प्रकृति के माध्यम से मानवीकरण का प्रयोग प्रशस्य है।
प्र.2 '' मेरी आशा आह ! बावली, तूने खो दी सकल कमाई।'' पंक्ति के आधार पर देवसेना की मनोव्यथा का चित्रण कीजिए ।
उत्तर – प्रेमी स्कन्दगुप्त द्वारा पहले तो उपेक्षा करने तथा बाद में प्रेम का प्रस्ताव रखने से देवसेना अत्यधिक व्यथित होकर सोचने लगी कि जीवन भर जिस सुख की आशा लगी रही वही आज सामने होकर भी खो दी। इसलिए आशा को बावली कहा। जब प्रेम नहीं पाया था तब पाने की आशा थी और जब मिला तो उसे ठुकराकर फिर आशा है।
प्र.3 '' लौटा लो यह अपनी थाती मेरी करूणा हा–हा खाती। '' इस पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए ।
उत्तर – देवसेना स्कन्दगुप्त की प्रेम रूपी धरोहर को लौटाना चाहती थी, क्योंकि जिससे उसने प्रेम किया, उसी ने उसकी उपेक्षा भी की। अब जीवन के अन्तिम मोड़ पर उस प्रेम को याद रखकर वह क्या करेगी ? जिस प्रेम ने उसे जीवन भर करूणा और पीड़ा में डुबाये रखा अब उसे रखने से भी क्या लाभ रहेगा ?
प्र.4 निम्न पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए–
'' पथिक उनींदी श्रुति में किसने यह विहाग की तान उठाई। ''
उत्तर – जिस प्रकार पथिक थककर किसी वृक्ष की छाया में सुखद स्वप्नों में सोया हो और उसे कोई विहाग राग सुना दे, तो उस समय पथिक को वह विहाग अच्छा नहीं लगता। इसी प्रकार जीवन के उतार में स्कन्दगुप्त देवसेना से प्रणय–निवेदन करता है, तो तब उसे वह विहाग राग की तरह अच्छा नहीं लगा।
प्र.5 ' अरूण यह मधुमय देश हमारा ' कविता में भारत की विशेषताओं का चित्रण है। समझाये।
उत्तर – ' अरूण यह मधुमय देश हमारा ' कविता में कवि भारत की विशेषताओं का चित्रण करते हुए बताता है कि सूर्य की प्रातःकालीन किरणें सर्वप्रथम यहीं पड़ती हैं। यहाँ सभी को आश्रय मिलता है और सभी के प्रति करूणा का प्रसार होता है। भारत मानवता का उपासक और आदर्शों का निर्वाहक देश है।
प्र.6 '' बरसाती आँखों के बादल–बनते जहाँ भरे करूणा जल। '' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – इस पंक्ति में कवि बताता है कि यहाँ भारतीयों की मानवीय संवेदना एवं करूणा भावना के कारण सभी को आश्रय मिलता है। जिस प्रकार बादल आकर सन्तप्त धरती को अपने जल–कणों की वर्षा कर शीतल कर देते हैं, उसी प्रकार भारत के लोग भी पीड़ित –दुःखित मानवता को देखकर संवेदना और करूणा भाव प्रकट करते हैं।
प्र.7 '' उड़ते खग जिस ओर मुँह किए–समझ नीड़ निज प्यारा। '' काव्य–पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – इस पंक्ति का आशय यह है कि प्रत्येक देश का व्यक्ति यहाँ आकर आश्रय पाता है और वह भारतीयों की मानवीय करूणा का पात्र भी बन जाता है। इसीलिए जिसे अपना प्यारा घोंसला समझकर संध्या काल को अनेक पक्षी आश्रय और विश्राम प्राप्ति के लिए आते रहते हैं। यह भारत देश वैसे ही सभी को आश्रय प्रदान करता रहता है।
प्र.8 ' देवसेना का गीत ' का मूल भाव या आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – ' देवसेना का गीत ' का मूल भाव या आशय यह है कि व्यक्ति अपने द्वारा किये गये कार्यो में निराशा वेदना मिले, तो भी उसे हार नहीं माननी चाहिए और अपनी समस्त दुर्बलताओं का सामना कर
संघर्षपूर्वक जीवन–पथ पर बढ़ना चाहिए। वेदना एवं कष्ट के क्षणों में हार न मानकर सदा अपने निश्चय पर अटल रहना चाहिए।
प्र.9 ' कार्नेलिया का गीत ' का मूल प्रतिपाद्य या आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – ' कार्नेलिया का गीत ' का मूल प्रतिपाद्य भारत की गौरव–गाथा तथा प्राकृतिक सौन्दर्य का चित्रण कर उसकी विशेषताओं का प्रकाशन करना है। भारत प्राचीन काल से मानव–सभ्यता का देश और मानवीय आदर्शो का प्रेरक रहा है। यहाँ पर हर किसी को आश्रय मिलता है। यहाँ पर करूणा, मंगल भावना एवं आत्मीयता का सद्भाव रहता है।
प्र.1 '' मैंने भ्रमवश जीवन संचित, मधुकरियों की भीख लुटाई '' – पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – देवसेना निराश और दुखी होकर जीवन के उस समय को याद करती है, जब उसने स्कन्दगुप्त से प्रेम किया था। उन्हीं क्षणों को वह याद करती हुए कहती है कि मैंने स्कन्दगुप्त से प्रेम किया ओर उन्हें पाने की चाह की किन्तु यह मेरा भ्रम ही था। मैंने आज जीवन की आकांक्षा रूपी पूँजी को भीख की तरह लुटा दिया है। मैं चाहते हुए भी स्कन्दगुप्त का प्रेम नहीं पा सकी। आज मुझे अपनी इस भूल पर पश्चाताप होता है।

प्र.2 कवि ने आशा को बावली क्यों कहा हैं ?
उत्तर – आशा व्यक्ति को भ्रमित कर देती है उसे बावला बना देती है। प्रेम में प्रेमी अधिक बावले हो जाते है क्योंकि प्रेम अंधा होता है। देवसेना भी स्कन्दगुप्त के प्रेम में बावली हो गई थी। उसने बिना सोचे–समझे स्कन्दगुप्त से प्रेम किया और अंत में उसे अपनी आशाओं को गवाँना पड़ा। इसलिए कवि ने आशा को बावली कहा है।
प्र.3 '' मैंने निज दुर्बल.....होड़ लगाई '' इन पंक्तियों में ''दुर्बल–पद–बल'' और ' हारी होड़ ' में निहित व्यंजना स्पष्ट कीजिए।
उत्तर – देवसेना जीवनभर संघर्ष करने के कारण दुर्बल हो गई है। दुर्बल पद बल की व्यंजना है कि देवसेना निराशा हो गई है, उसमें संघर्ष करने की शक्ति नहीं रही है, फिर भी वह विषम परिस्थितियों में संघर्ष कर रही है।
' हारी–होड़ ' की व्यंजना है कि देवसेना जानती है कि वह स्कन्दगुप्त से प्रेम में सफल नहीं हो सकती उसकी प्रेमपात्र नहीं बन सकती, फिर भी वह उससे प्रेम करती है, जीतने की कोशिश करने पर भी उसे हार मिली, यही वह कहना चाहती है।
प्र.4 जयशंकर प्रसाद का साहित्यिक परिचय दीजिए।
उत्तर – जयशंकर प्रसाद भारतीय संस्कृति से प्रभावित ऐस महाकवि थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं में भारत भूमि की महिमा, भारतीय जीवन–मूल्यों, त्याग–बलिदान एवं राष्ट्रीय जागरण आदि का स्वर व्यक्त किया। प्रसाद बहुमखी प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने 'झरना', 'लहर', 'कामायनी' आदि काव्य; 'अजातशत्रु', 'स्कन्दगुप्त', 'चन्द्रगुप्त', 'ध्रुवस्वामिनी' आदि नाटक; 'कंकाल', 'तितली', 'इरावती' उपन्यास; 'आँधी', 'इन्द्रजाल', 'आकाशदीप' आदि कहानी–संग्रह तथा 'काव्य और कला तथा अन्य निबन्ध–संगह की रचना कर साहित्य की सभी विधाओं पर लेखनी चलायी।

तुलसीदास

अतिलघुत्तरात्मक प्रश्न :–

प्र01 :– तुलसीदास द्वारा रचित ''भरत राम का प्रेम'' किस काव्य से लिया गया है–
उत्तर : अयोध्या कान्ड से
प्र02 :– ''भरत राम का प्रेम'' पदों में किस प्रसंग का वर्णन है–
उत्तर : ''भरत राम का प्रेम'' पदों में राम द्वारा वन गमन तथा भरत द्वारा चित्रकूट जाकर उन्हें वापस लाने के प्रसंग का वर्णन है।
प्र03 :– भरत ने किन उदाहरणों से माता को कुमाता नहीं माना है–
उत्तर : 1. जंगली घांस से उत्तम धान उत्पन्न नहीं हो सकता।
2. काले घोंघे से मोती नहीं मिल सकता।
प्र04 :– किस की आज्ञा पाकर भरत अपनी बात कहने के लिए सभा में खड़े हुए?
उत्तर : मुनि वशिष्ठ की आज्ञा पाकर।
प्र05 :– राम वियोग में कौशल्या किसे छाती से लगाती है–
उत्तर : राम की जूतियों को।
प्र06 :– राम को वापस लाने भरत कहाँ गए थे?
उत्तर : चित्रकूट
प्र07 :– कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना किस से की है–
उत्तर : कवि ने माता कौशल्या के दुःख की तुलना मोर से की है।
प्र08 :– खेलते समय भरत जब हारने वाले होते थे तो राम क्या करते थे?
उत्तर : राम स्वंय हार जाते थे और भरत को जिता देते थे।
प्र09 :– कौशल्या राम से संदेश में क्या कहती है–
उत्तर : कौशल्या संदेश में राम से कहती है कि उसके पाले पोसे घोड़े वियोग में व्याकुल हैं।

प्र010 :– माता कौशल्या राम की किन वस्तुओं को देखकर उनका स्मरण करती है–
उत्तर : माता कौशल्या श्री राम के बचपन के छोटे–छोटे धनुष बाण एवं उनकी छोटी जूतियों को देख कर स्मरण करती है।

प्र011 :– महाकवि तुलसीदास की प्रसिद्ध कृतियों के नाम बताइए?

उत्तरः– राम चरित्र मानस, विनय पत्रिका, कवितावली, दोहावली, कृष्ण गीतावली आदि।

SEO BHINDER

प्र012 :– तुलसीदास जी के गुरु का क्या नाम था?
उत्तरः– तुलसी दास जी के गुरु का नाम नरहरि दास था।

लघुत्तरात्मक प्रश्न :–

प्र0 13 :– ''पुलकि सरीर सभा भए ठाढे'' पंक्ति में जिस सभा का उल्लेख है वह कहाँ हुई?
उत्तरः– इस पंक्ति में जिस सभा का उल्लेख है वह चित्रकूट में हुई। जब भरत को राम के वनवास का पता चला तो वह उन्हें अयोध्या वापस लौटा लाने के लिए चित्रकूट जा पहूँचे वहीं यह सभा आयोजित की गई।
प्र014 :– जननी निरखति बान धनुहियां।
बार बार उर नैयनि लावति प्रभुजु की ललित पनहियाँ।।
पंक्तियों का भावार्थ लिखिए।
उत्तरः– माता कौशल्या श्री राम के खेलने वाले धनुष बाण को देखती है और उनकी सुन्दर छोटी–छोटी जूतियों को अपने हृदय और आंखों से बार–बार लगाती है।
प्र015 :– तुलसी दास के संकलित काव्यांश के आधार पर भरत और राम के प्रेम पर टिप्पणी कीजिए।
उत्तरः– छोटे भाई के रुप में राम भरत को अपना यथोचित स्नेह देते थे। राम भरत के अपराध करने पर भी उन पर क्रोध नहीं करते थे। राम भरत के साथ खेलते हुए स्वंय हार जाते और भरत को जिता देते थे। भरत अपने बडे भाई का सदा सम्मान करते थे। भरत और राम का एक दूसरे के प्रति बहुत प्रेम था।
प्र016 :– भरत के आत्म परिताप में तुलसी दास ने उसके चरित्र की किन विशेषताओं को प्रकट किया है।
उत्तरः– भरत का आत्म परिताप इस बात का द्योतक है कि वे साधु स्वभाव के हैं और राम के प्रति अगाध स्नेह रखते हैं उनकी माता कैकई ने जो कुछ किया उसमें उनकी कोई सहभागिता नहीं है और राम का वन गमन में जो भी कष्ट उठाने पड रहे हैं उसके लिए वह स्वंय को दोषी मान रहे हैं।
प्र017 :– ''मैं जानउ निज नाथ सुभाऊ'' इन पंक्तियों के माध्यम से राम की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?
उत्तरः– इन पंक्तियों के माध्यम से राम की निम्न विशेषताओं का उल्लेख किया गया है–
1) श्री राम बहुत दयालू व स्नेही हैं।
2) भरत श्री राम के प्रिय अनुज थे उन्होंने हमेशा भरत के हित के लिए कार्य किया।
3) श्री राम ने खेलों में भी अपने प्रिय भरत के प्रति अपना स्नेह प्रदर्शित किया है।
4) श्री राम ने अपराधियों पर भी कभी क्रोध नहीं किया है।
प्र018 :– ''रहि–चकि चित्रलिखी सी'' का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तरः– इस पंक्ति में पुत्र वियोगिनी माता की पीडा दिखाई देती है। माता कौषल्या श्री राम से वियोग के कारण दुःखी और आहत है। वह श्री राम की वस्तुओं से अपना मन बहलाने की कोषिष कर रही है, लेकिन उनका दुःख लगातार बढता जा रहा है। वह अपने बेटे को होने वाली कठिनाइयों के बारे में सोच–सोच कर दुःखी हो जाती है और खुद की परवाह करना भी छोड देती है। वह इतनी दुःखी है कि उनके चहरे पर कोई अभिव्यक्ति नहीं है।
प्र019 :– ''भरत राम का प्रेम'' एवं गीतावली के पदों में व्यक्त भाषा शैली पर प्रकाष डालिए।
उत्तरः– तुलसीदास जी ने भरत राम के प्रेम में अवधी भाषा का प्रयोग किया है तथा गीतावली के पदों में ब्रज भाषा का प्रयोग किया है। इनमें कला पक्ष बहुत सुन्दर है। इनहोनं प्रबन्ध काव्य शैली व मुक्तक काव्य शैली दोनों का प्रयोग किया है। इनके काव्य में छंदों एवं अलंकारों की भी विषिषठ छठा देखने योग्य है।
प्र020 :– ''बंधु बोली जेंइय जो भावै गई निछावरी मैया।''
इस पंक्ति में काव्य सोंदर्य पर प्रकाष डालिए।
उत्तरः– **भाव पक्ष–** माता कौषल्या राम के वन गमन के उपरान्त वात्सल्य वियोग से पिडीत होकर भावुक्ता में प्रातः काल श्री राम को जगाते हुए कहती है कि भाइयों को बुला कर उनके साथ भोजन कर लो। इस तरह इस में माता के वियोग वात्सल्य की स्मरण दषा का चित्रण हुआ है।

कला पक्ष– वात्सल्य रस की वियोग वथा एवं स्मरण दषा वर्णित है। अनुप्रास अलंकार

और ब्रज भाषा का प्रयोग हुआ है एवं पद छंद हैं।

पाठ का नाम – विष्णु खरे

1 . कवि अपने वर्तमान की जीवन शैली में किस कारण से व्यथित है –
(अ) स्वार्थपरकता का माहौल बनने से (ब) लोगो क धनवान बनने से
(स) लोगो के निर्धन होने से (द) आपसी खीचतान का वातावरण बनने से (अ)

2 . कवि भ्रष्ट लोगो का विरोध नहीं करते है क्योंकि–
(अ) कवि उन्हें अनदेखा करना चाहते है (ब) कवि चुप रहना चाहते है
(स)कवि को उनसे कोई समस्या नहीं हैं (द) कवि स्यवं को व्यवस्था का विरोध करने में अक्षम पाते है
(द)
3 हाथ फैलाने वाले को मानते है–
(अ) ईमानदार (ब) लालची
(स) मतलबी (द) प्रतिद्वंदी (अ)
4 एक कम कविता में किस पर व्यंग्य किया गया है–
(अ) धोखे बाज पर (ब) मेहनतकश मजदूर पर
(स) भ्रष्टाचारी पर (द) ईमानदार पर (स)
5 एक कम कविता भारतीय समाज के किस काल की जीवन शैली को रेखांकित कर रही है–
(अ) स्वतंत्रता पूर्व (ब) स्वतंत्र्योतर
(स) आदिकाल (द) स्वतंत्रता संग्राम के समय (ब)
6 एक कम कविता में कवि किसका वर्णन कर रहा है–
(अ) टार्च बेचने वाले का (ब) अखबार विकेता
(स) मांगने वाला (द) खिलौने वाला (स)
7 कवि ने लोगो के आत्म निर्भर,मालामाल और गतिशील होने के लिए किन तरीकों की ओर संकेत किया है ? अपने शब्दों में लिखिए
उत्तरः– कवि ने लोगो के आत्म निर्भर,मालामाल और गतिशील होने के लिए अनेक तरीकों की ओर संकेत किया है आजादी के बाद आगे बढने की होड में सभी अपना ईमान खो बैठे है। सभी लोग मेहनत कर नहीं अपना ईमान बेचकर , झूठ बोलकर और धोखे से आत्मनिर्भर मालामाल और गतिशील बने हुए है। उन्हें किसी दूसरे के दुखो को कोई परवाह नहीं है।
8 हाथ फैलाने वाले व्यक्ति को कवि ने ईमानदार क्यों कहा है?
उत्तर :– जो व्यक्ति हाथ फैलाता है वह भ्रष्टाचारी नहीं होता क्योंकि भ्रष्टाचार नहीं करने के कारण ही उसकी यह स्थिति हुई है कि दूसरों के आगे हाथ फैलाने पडे अगर वह भ्रष्टाचारी होता तो उसके पास इतना धन होता कि वह दूसरों के आगे नहीं झूकता ।
9 मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी या हिस्सेदार नहीं से कवि का क्या अभिप्राय है?
उत्तर :– कवि उनकों संबोधित करना चाहता है जो भ्रष्टाचार तथा अनैतिकता में लिप्त हैं। कवि कहता है कि तुम्हें मुझस डरने या प्रतिस्पर्धा करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि मैं तुम्हारा प्रतिद्वंद्वी नहीं हूं।
10 शिल्प सौंदर्य स्पष्ट कीजिए
(क) कि अब जब कोई.....या बच्चा खडा है।
उत्तर :– कवि ने मुक्त छंद में कविता की रचना की है। इसकी भाषा सरल व सहज है। इसमें लाक्षणिकता का गुण है। हाथ फैलाना मुहावरे का प्रयोग किया गया है।
(ख) मैं तुम्हारा विरोधी प्रतिद्वंदी.....निश्चिंत रह सकते है।
उत्तर :– कवि ने मुक्त छंद में कविता की रचना की है। इसकी भाषा सरल व सहज है। इसमें प्रतीकात्मकता का गुण है। इसमें व्यंजना का भी प्रयोग किया गया है।
11 सत्य क्या पुकारने से मिल सकता है? युधिष्ठिर विदुर को क्यों पुकार रहे है– महाभारत के प्रसंग से सत्य के अर्थ खोजे
उत्तर :– सत्य अगर पुकारने से मिला तो आज संसार में असत्य नाम का शब्द होता ही नहीं। युधिष्ठिर सत्य के ज्ञान के लिए विदुर को पुकार रहे है सत्य का ज्ञान करना चाहते थे। उन्हें पता लगा कि विदुर जी के साथ सत्य का ज्ञान है तो वह विदुर जी के पास पहुंच गए।

12 सत्य का दिखना और ओझल होना से कवि का क्या तात्पर्य है?
उत्तर :– सत्य सभी व्यक्ति के अंदर होता है। फर्क सिर्फ इतना है कि हर व्यक्ति सत्य को महसूस नहीं कर सकता। सत्यता ओझल हो जाती है जब झूठ सत्य के सामने भारी हो जाता है। सत्य अगर सही तरीके से बोला जाए तो सत्य सत्य है। अगर सत्य को लोग तोड मरोड कर प्रस्तुत करते है,तो सत्य ओझल हो जाता है। सत्य हमेशा उनकों ही दिखता है, जो सत्य को अपना सब कुछ मान लेते है। अर्थात हमेशा सच्चाई के पथ पर चलतें है। इसलिए कवि कहते है कि सत्य का दिखना और ओझल होता है।

13 सत्य और संकल्प के अंतर्संबंध पर अपने विचार व्यक्त किजिए ।

उत्तर :– सत्य और संकल्प एक दूसरे से जुडे हुए है उनके बीच एक अटूट संबंध है, सत्य संकल्प के बिना अधूरा है,संकल्प के बिना सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता सत्य तभी प्राप्त होता है जब मन से सत्य के मार्ग में संकल्प लेकर आगे बढे ।

14 युधिष्ठिर जैसा संकल्प से क्या अभिप्राय है?

उत्तर :– युधिष्ठिर संपूर्ण महाभारत में एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने हमेशा सत्य का साथ दिया। सत्य ही उनके जीवन का महत्तवपूर्ण आधार था। युधिष्ठिर इतने सत्यवादी थे। युधिष्ठिर के जीवन में अनेक कठिनाइयां आई,मगर उन कठिनाई की परिस्थितियों में भी उन्होंने सत्य का साथ नहीं छोडा।

15 कविता में बार–बार प्रयुक्त हम कौन है और उसकी क्या चिंता ह?

उत्तर :– कविता में हम शब्द का प्रयोग सत्य की खोज करने वाले लोगों के लिए किया है सत्य की खोज करने वालों लोगों की यह चिंता है कि वह सत्य को अभी तक पहचान नहीं पाए हैं उनको सत्य का मूल रूप समझ नहीं आया है।

16 सत्य की राह पर चल। अगर अपना भला चाहता है तो सच्चाई को पकड ।– इन पंक्तियों के प्रकाश में कविता का मर्म खोलिए ।

उत्तर :– आज जिस समाज में हम सभी रहते है , वह समाज धर्म के पथ पर अग्रसर हो रहा है। आज सच्चाई पर झूठ ज्यादा मजबूत हो गया है। आज झूठ बोलने वाले को न्याय मिलता है। सच बोलने वाले को अन्याय। अगर समाज में परिवर्तन करना है व न्याय स्थापित करना होगा तो सत्य के मार्ग पर चलना पडेगा। इसलिए कवि लोगों से कहते है समाज तथा अपनी अच्छाई चाहते हो तो सत्य के मार्ग पर अग्रसर रहों ।

पाठ – विद्यापति

प्रश्न. 1 विरहिणी नायिका का प्रेम के विषय में क्या विचार है?

उत्तर – विरहिणी नायिका को प्रेम पल–पल, प्रतिदिन, प्रतिक्षण नूतन स्वरूप को प्राप्त लगता है।

प्रश्न. 2 कवि विद्यापति की प्रमुख रचनाओं के नाम लिखिए–

उत्तर. कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पदावली, पुरुष परीक्षा आदि थे ।

प्रश्न. 3 विरह में राधा का शरीर किसके समान क्षीण होता जा रहा है ?

उत्तर. विरह में राधा का शरीर चतुर्दशी के चन्द्रमा के समान क्षीण होता जा रहा है।

प्रश्न. 4 कवि विद्यापति के अनुसार नायक और नायिका कौन है ?

उत्तर. कवि विद्यापति के नायक कृष्ण और नायिका राधा को माना है।

प्रश्न. 5 के पतिआ लए जाएत रे, मोरा पिअतम पास पंक्ति का अभिप्राय है?

उत्तर. वर्षा ऋतु आ गई है, नायिका को अपने नायक की याद सताने लगी है और वह अपने नायक को वापस जाने को संदेश भेजना चाहती है।

प्रश्न. 6 प्रियतमा के दुःख का क्या कारण है?

उत्तर. प्रियतमा इसलिए दुःखी है क्योंकि प्रियतमा (नायक) पास नहीं है। प्रियतमा के दुःख का मूल कारण है प्रियतमका परदेश गमन जिससे उसे विरह दुःख झेलना पड़ रहा है।

प्रश्न. 7 कोकिल–कलख मधुकर धुनि सुनि
कर देई झांपई कान
इन पक्यिों का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर. विरहणी नायिका पहले ही व्यथित है, फिर कोयल की मधुर कूक और भौरों की गुंजार उसे और भी व्यथित कर देती है, क्योंकि इससे उसे प्रियतम का स्मरण हो आता है उसकी विरह वेदना उद्दीप्त हो जाती है इसलिए वह अपने कान बन्द कर देती है इससे कवि ने विरहिणी की मनोदशा का मार्मिक चित्रण किया है।

प्रश्न. 8 कोयल और भौंरो के कलख का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है।

उत्तर. नायिका को तनिक भी नहीं सुहाती क्योंकि उसका प्रियतम परदेश गया है। वह अपने कान बंद कर लेती है।

प्रश्न. 9 कवि विद्यापति के काव्य का मुख्य विषय क्या है?

उत्तर. राधा कृष्ण के प्रेम के माध्यम से लौकिक प्रेम के विभिन्न रूपों का चित्रण विषय है ।

CBSE BHINDER

प्रश्न. 10 विद्यापति के काव्य में प्रयुक्त भाषा की पाँच विशेषताएँ बताइए।
उत्तर 1. मैथिली भाषा का प्रयोग किया है। 2. भाषा में कोमलता है। 3. भाषा में सरसता, मधुरता है।
4. पद संगीत्मकता में ढले हैं। 5. पदों में श्रृंगार की प्रधानता है।
प्रश्न. 11 विद्यापति का साहित्यिक परिचय लिखिए।
उत्तर. मैथिल कोकिल के उपनाम स विख्यात कवि विद्यापति मिथिला नरेश शिवसिंह के अभिन्न मित्र, राजकवि सलाहकार थे। बचपन से कुशाग्र बुद्धि, तर्कशील विद्वान थे। साहित्य, संस्कृति, संगीत, ज्योतिष के प्रकाण्ड पण्डित थे। कीर्तिलता तथा कीर्तिपताका अवृद्ध भाषा में तथा पदावली मैथिली भाषा में रची गई। यह प्रेम, सौंदर्य, श्रृंगार तथा कृष्ण भक्ति की श्रेष्ठतम रचना है। यह रचना उनकी लोकप्रियता का पुष्ट प्रमाण है।
प्रश्न - 1 प्रियतमा के दुख के क्या कारण हैं?
उत्तर- प्रियतमा के दुख के ये कारण निहित हैं-
(क) प्रियतमा का प्रियतम कार्यवश परदेश गया हुआ है। वह प्रियतम के साथ को लालयित है परन्तु उसकी अनुपस्थिति उसे पीड़ा दे रही है।
(ख) सावन मास आरंभ हो गया है। ऐसे में अकेले रहना प्रियतमा के लिए संभव नहीं है। वर्षा का आगमन उसे गहन दुख देता है।
(ग) वह अकेली है। ऐसे में घर उसे काटने को दौड़ता है।
(घ) प्रियतम उसे परदेश में जाकर भूल गया है। अतः यह स्थिति उसे कष्टप्रद लग रही है।
प्रश्न - 2 कवि 'नयन न तिरपित भेल' के माध्यम से विरहिणी नायिका की किस मनोदशा को व्यक्त करना चाहता है?
उत्तर- कवि के अनुसार नायिका अपने प्रियतम के रूप को निहारते रहना चाहती है। वह जितना प्रियतम को देखती है, उसे कम ही लगता है। इस प्रकार वह अतृप्त बनी रहती है। कवि नायिका की इसी अतृप्त दशा का वर्णन इन पंक्तियों के माध्यम से करता है। वह अपने प्रियतम से इतना प्रेम करती है कि उसकी सूरत को सदैव निहारते रहना चाहती है। उसका सुंदर रूप उसे अपने मोहपाश में बाँधे हुए है। वह जितना उसे देखती है, उतनी ही अधिक इच्छा उसे देखने की होती है। नायिका के अनुसार वह अपनी स्थिति का वर्णन भी नहीं कर सकती। जो वस्तु स्थिर हो उसका तो वर्णन किया जा सकता है परन्तु उसके प्रियतम का सलौना रूप पल-पल बदलता रहता है और हर बार उसका आकर्षण बढ़ जाता है। बस यही कारण है कि नायिका तृप्त नहीं हो पाती।
प्रश्न -3 नायिका के प्राण तृप्त न हो पाने के कारण अपने शब्दों में लिखिए।
उत्तर- नायिका अपने प्रेमी से अतुलनीय प्रेम करती है। वह जितना इस प्रेम रूपी सागर में डूबती जाती है, उतना अपने प्रेमी की दीवानी होती जाती है। वह अपने प्रियतम के रूप को निहारते रहना चाहती है। वह जितना उसे देखती है, उसकी तृप्ति शांत होने के स्थान पर बढ़ती चली जाती है। इसका कारण वह प्रेम को मानती है। उसके अनुसार उसका प्रेम जितना पुराना हो रहा है, उसमें नवीनता का समावेश उतना ही अधिक हो रहा है। दोनों में प्रेम के प्रति प्रथम दिवस जैसा ही आकर्षण है। अतः उसे तृप्ति का अनुभव ही नहीं होता है। उसके अनुसार प्रेम ऐसा भाव है, जिसके विषय में वर्णन कर पाना संभव नहीं है। इस संसार में कोई भी प्रेम को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने में समर्थ नहीं है। प्रेमी का साथ उसे कुछ समय के लिए सांत्वना तो देता है परन्तु तृप्ति का भाव नहीं देता। उसके प्राण अतृप्त से प्रेमी के आस-पास ही रहना चाहते हैं

प्रश्न - 4 'सेह फिरत अनुराग बखानिअ तिल-तिल नूतन होए' से लेखक का क्या आशय है?
उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियाँ प्रेम के विषय में वर्णन कर रही हैं। इसके अनुसार प्रेम ऐसा भाव है, जिसके विषय में कुछ कहना या व्यक्त करना संभव नहीं है। प्रेम में पड़ा हुआ व्यक्ति इस प्रकार दीवाना हो जाता है कि वह जितना स्वयं को
निकालना चाहता है, उतना ही डूबता चला जाता है। यह पुराना होने पर भी नए के समान लगता है क्योंकि प्रेमियों का एक दूसरे के प्रति आकर्षण तथा प्रेम प्रागढ़ होता जाता है। कवि के अनुसार प्रेम कोई स्थिर चीज़ नहीं है, जिसमें कोई परिवर्तन न हो। स्थिर वस्तु का बखान करना सरल है परन्तु यह ऐसा भाव है, जो समय के साथ-साथ पल-पल बदलता रहता है। यही कारण है कि इसका वर्णन करना कठिन हो जाता है और इसमें नवीनता बनी रहती है।

CBSE BINDER

प्रश्न - 5 कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर- कोयल और भौरों के कलरव का नायिका पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। कोयल का मधूर स्वर और भौरों का गुंजन नायिका को अपने प्रेमी की याद दिला देती है। वह अपने कानों को बंद कर इनके कलरव सुनने से बचना चाहती है परन्तु ये आवाज़ें उसे फिर भी सता रही हैं। परदेश गए प्रियतम की याद उसे सताने लगती है। विरहग्नि उसे वैसे ही बहुत जलाए हुए हैं। ये कलरव उसे और भी जला रहा है।

प्रश्न - 6 कातर दृष्टि से चारों तरफ़ प्रियतम को ढूँढ़ने की मनोदशा को कवि ने किन शब्दों में व्यक्त किया है?

उत्तर- कवि नायिका की कातर दृष्टि से चारों तरफ़ प्रियतम को ढूँढने की मनोदश को इन पंक्तियों में वर्णित करता है-

कातर दिठि करि, चौदिस हेरि-हेरि नयन गरए जल धारा।

अर्थात कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी जिस प्रकार क्षीण होती है, वैसी ही नायिका का शरीर भी अपने प्रेमी की याद में क्षीण हो रहा है। उसकी आँखों से हर समय जलधारा बहती रहती है। अर्थात वह हर वक्त प्रियतम की याद में रोया करती है। वह इसी प्रयास में इधर-उधर अपने प्रियतम को तलाशती है कि शायद उसे वह कहीं मिल जाए।

प्रश्न - 7 निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) एकसरि भवन पिआ बिनु रे मोहि रहलो न जाए।
सखि अनकर दुख दारुन रे जग के पतिआए।

(ख) जनम अवधि हम रूप निहारल नयन न तिरपित भेल।।
सेहो मधुर बोल स्रवनहि सूनल सुति पथ परस न गेल।।

(ग) कुसुमित कानन हेरि कमलमुखि, मूदि रहए दु नयान।
कोकिल-कलरव, मधुकर-धुनि सुनि, कर देइ झाँपइ कान।।

उत्तर- (क) प्रस्तुत पद में नायिका का पति परदेश गया हुआ है। वह घर में अकेली है। पति से अलग होने का विरह उसे इतना सताता है कि वह अपनी सखी से कहती है कि हे सखी! पति के बिना मुझसे घर में अकेला नहीं रहा जाता है। वह आगे कहती है कि हे सखी! इस संसार में ऐसा कौन-सा मनुष्य विद्यमान है, जो किसी अन्य के कठोर दुःख पर विश्वास करे। अर्थात कोई अन्य किसी दूसरे के दुख को गहनता से नहीं समझ पाता है।

(ख) प्रस्तुत पंक्तियों में कवि प्रेमिका की अतुप्ति का वर्णन करते हैं। अपने प्रेमी के साथ उसे बहुत समय हो गया है। परन्तु अब तक वह तृप्त नहीं हो पायी है। वह जन्मों से अपने प्रियतम को निहारती रही है परन्तु हर बार उसे और देखने का ही मन करता है। नेत्रों में अतृप्ति का भाव विद्यमान है। इसी तरह वह उसकी मधुर वाणी को लंबी अवधी से सुनती आ रही है। उसके बाद भी उसके बोल नए से ही लगते हैं। उसके रूप तथा वाणी के अंदर नवीनता का समावेश है, जिस कारण मैं तृप्त ही नहीं हो पाती हूँ।

(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में प्रेमिका की हृदय की दशा का वर्णन किया गया है। कवि के अनुसार नायिका को ऐसा प्राकृतिक वातावरण भाता नहीं है, जो संयोग कालीन हो। वह स्वयं वियोग की अवस्था में है। उसका प्रियतम उसे छोड़कर बाहर गया हुआ है। वसंत के कारण वन विकसित हो रहा है। नायिका को यह दृश्य विरहग्नि में जला रहा है। अतः कमल के समान सुंदर मुख वाली राधा दोनों हाथों से अपनी आँखों को बंद कर देती है। इसी तरह जब कोयल कूकने लगती है और भंवरे फूलों पर गुंजान करने लगते हैं, तो वह अपने कानों को बंद कर लेती है क्योंकि उनका मधुर स्वर उसे आहत करता है। उसे रह-रहकर अपने प्रियतम का स्मरण हो आता है।

CBSE BHINDER

अंतराल

पाठ -1 'सूरदास की झोंपड़ी'

प्रश्न 1.'सूरदास की झोंपड़ी' पाठ के लेखक कौन है?
(अ)प्रेमचंद
(ब)संजीव
(स)विश्वनाथ त्रिपाठीss
(द)प्रभाष जोशी
उत्तर - (अ)प्रेमचंद
प्रश्न 2.भैरों की पत्नी का नाम है?
(अ)कैलाशी
(ब)सोहनी
(स)सुभागी
(द)हीना
उत्तर - (स)सुभागी
प्रश्न 3.भैरों की पत्नी किसकी झोंपड़ी में छिपती है?
(अ)सूरदास की झोंपड़ी
(ब)कबीर की झोंपड़ी
(स)मीरा की झोंपड़ी
(द)रहीम की झोंपड़ी
उत्तर - (अ) सूरदास की झोंपड़ी
प्रश्न 4.किसकी झोंपड़ी जलाई गयी थी?
(अ)प्रेमचंद की
(ब)रामानंद की
(स)मीरा की
(द)सूरदास की
उत्तर - (द)सूरदास की
प्रश्न 5.सूरदास की पोटली में कितने रुपये थे?
(अ)दो सौ रुपये
(ब)तीन सौ रुपये
(स)पांच सौ रुपये
(द)सौ रुपये
उत्तर - (स)पांच सौ रुपये
प्रश्न 6.अदावत शब्द का अर्थ है -
(अ)दोस्ती
(ब)मेहरबानी
(स)शत्रुता
(द)संदेह
उत्तर - (स)शत्रुता
प्रश्न 7.भैरों ने सूरदास की झोंपड़ी क्यों जलाई ?
उत्तर - भैरों की पत्नी सुभागी अपने पति की मार के डर से सूरदास की झोंपड़ी में छिप गई। भैरों उसे वहाँ भी मारने आया पर सूरदास के हस्तक्षेप के कारण मार नहीं पाया। सुभागी और सूरदास के चरित्र पर मोहल्ले वालों ने बातें बनाई,जिसका बदला लेने के लिए भैरों ने आग लगाई।

CBEO BHINDER

प्रश्न 8."यह फुसकी राख न थी, उसकी अभिलाषाओं की राख थी" सूरदास की क्या अभिलाषाएं थी और उसकी राख किसने की?
उत्तर - झोंपड़ी में लगी आग ने सूरदास की अभिलाषाओं को राख कर दिया था। जिसमें गया जाकर पिण्डदान करना, मिठुआ का विवाह करना, कुआं बनवाना आदि इच्छाएँ थी। भैरों ने आपसी दुश्मनी के कारण झोंपड़ी में आग लगाकर उसका सब कुछ राख कर दिया।
प्रश्न 9.जगधर के मन में किस तरह का ईर्ष्या भाव जगा और क्यों ?
उत्तर - जगधर के मन में भैरों द्वारा सूरदास के हथियाये रुपयों में से आधे रुपये पाने की इच्छा बलवती हुई। वह नहीं चाहता था कि भैरों अकेले ही उन रुपयों से मौज उड़ावे। इसी ईर्ष्या भाव के चलते उसने सूरदास और भैरों की पत्नी को भी रुपयों का सच बता दिया, जिससे भैरों से वह रुपये वापस ले लिये जाए।
प्रश्न 10.सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को गुप्त क्यों रखना चाहता था?
उत्तर - सूरदास जगधर से अपनी आर्थिक हानि को इसलिए गुप्त रखना चाहता था क्योंकि वह नहीं चाहता था कि लोग प्रश्न करते कि इस अंधे भिखारी के पास इतना धन कहाँ से आया और यदि इतने रुपये उसके पास थे तो वह भीख क्यों मांगता था?भिखारियों के लिए धन संचय पाप संचय से कम अपमान की बात नहीं है।
प्रश्न 11."तो हम सौ लाख बार बनाएँगे" इस कथन के संदर्भ में सूरदास के चरित्र का विवेचन कीजिए।
उत्तर - इस कथन के आधार पर सूरदास के चरित्र की निम्नलिखित विशेषताएं व्यंजित होती है -
(1)बदले की भावना की अपेक्षा पुनर्निर्माण पर आस्था - बालक मिठुआ के इस प्रश्न पर कि कोई सौ लाख बार आग दे तो हम क्या करेंगे ? के उत्तर में सूरदास कहता है कि हम सौ लाख बार ही उसे फिर बनाएंगे। यह कथन उसके बदले के भाव से मुक्त पुनर्निर्माण में विश्वास को व्यक्त करता है। वह जो नष्ट हो गया है,उसे भूलकर नये सिरे से जीना चाहता है।
(2)कर्मठ व्यक्तित्व - सूरदास अंधा होते हुए भी अपने कर्म के आधार पर विपत्तियों का सामना करने का साहस रखता है।
(3)सहनशील - सबकुछ जल जाने के बाद भी वह जीवन को एक खेल मानते हुए सहनशील बना रहता है।
(4)संकल्प का धनी - वह संकल्प का धनी है। इसलिये वह सौ लाख बार बनाने की बात को अति सहजता से कह देता है।
(5)आशावादी - सूरदास सौ लाख बार बनाने की बात बाल सुलभ ढंग से जिस सरलता से कहता है, वह सरलता व सहजता ही उसके आशावादी व्यक्तित्व को उजागर कर देती है।
प्रश्न 12.सूरदास की झोंपड़ी पाठ की वर्तमान समय में प्रासंगिकता क्या है?
उत्तर - वर्तमान काल में भी सत्ता और पूँजी के गठजोड़ से सूरदास जैसे लोगों की झोंपड़ियां जला दी जाती है। दलित एवं गरीब व्यक्ति सब और से पीड़ित-व्यथित रहता है,फिर भी वह जिजीविषा रखता है और संघर्ष कर भविष्य के प्रति आशावान बना रहता है। यही इस पाठ की सामयिक प्रासंगिकता है।
प्रश्न 13."चूल्हा ठंडा किया होता तो दुश्मनों का कलेजा कैसे ठंडा होता?" इस कथन के आधार पर सूरदास की मनःस्तिथि का वर्णन कीजिए।
उत्तर -उस समय सूरदास की मनःस्थिति अत्यंत विचलित थी।उसे झोंपड़ी के जल जाने का दुःख नहीं था। दुःख था पैसों की पोटली के जल जाने का जो उसके उम्र भर की कमाई और जीवन की आशाओं का आधार थी।
प्रश्न 14.सच्चे खिलाड़ी कभी रोते नहीं, बाज़ी पर बाज़ी हारते है, चोट पर चोट खाते है,धक्के पर धक्के सहते है पर मैदान में डटे रहते हैं? इस कथन के आधार पर सूरदास की मनःस्थिति में आए बदलाव को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर - बच्चों द्वारा खेल में रोने को गलत मानना सुनकर सूरदास ने भी सोचा कि यह जीवन भी एक खेल है। इसकी हार जीत पर दुःख न मनाकर फिर से नयी उर्जा और स्फूर्ति से खेलना चाहिए। रुपये मैने ही कमाए थे फिर कमा लूँगा। मुझे अपने मन को मलिन न करके नए साहस के साथ फिर खेलना है।
प्रश्न 15. आशा से ज्यादा दीर्घजीवी कोई वस्तु नहीं होती। ऐसा क्यों कहा गया है, स्पष्ट करें।
उत्तर - भैरों ने शत्रुतावश सूरदास की झोंपड़ी में आग लगा दी, रुपये चोरी कर दिये। तब सूरदास रातभर जली हुई झोंपड़ी की राख में रुपयों की पोटली टटोलता रहा। वह आशा कर रहा था कि रुपये पिघलकर चांदी बन गई होगी, वह तो जरूर ही मिल जायेगी। इसी आशा से वह राख की ढेरी को बटोर रहा था।इसलिए ऐसा कहा गया।
प्रश्न 16.'सूरदास की झोंपड़ी' प्रेमचंद के किस उपन्यास का अंश है?
उत्तर - प्रेमचंद के 'रंगभूमि' नामक उपन्यास का अंश है।

CBEO BINDER

प्रश्न 17.सूरदास की झोंपड़ी में आग किस समय लगी और जलती झोंपड़ी को देखकर गांव के लोगों ने क्या किया?
उत्तर - सूरदास की झोंपड़ी में आग रात के समय लगभग दो बजे लगी थी।जलती हुई झोंपड़ी को देखकर गांव के कुछ लोग आग बुझाने में लग गये। लेकिन अधिकांश गांव वाले निराशा भरी नजरों से अग्निदाह को देख रहे थे,मानो किसी मित्र की चिताग्नि हो।
प्रश्न 18. सूरदास ने रुपये किस प्रयोजन से इकट्ठे किये थे?
उत्तर - सूरदास इकट्ठे किये गये रुपयों से गया जी जाकर पितरों के निमित्त पिण्डदान करना चाहता था। फिर वह मिठुआ का विवाह भी करना चाहता था। इन रुपयों को इकट्ठा करने के पीछे सूरदास का तीसरा प्रयोजन गांव में एक कुआं बनवाना भी था।
प्रश्न 19. सूरदास को किस बात का अधिक दुःख था और क्यों था?
उत्तर - सूरदास को अपनी झोंपड़ी जलने का दुःख नहीं था, उसे अपनी रुपयों की पोटली जल जाने का अधिक दुःख था।जिसमें उसकी उम्भर की कमाई रखी थी।उसने बड़े कष्ट से भीख मांगकर वह धनराशि एकत्र की थी और उससे पूण्य कर्म तथा बेटे का विवाह करना चाहता था।
प्रश्न 20. जगधर ने सुभागी को भैरों के विषय में क्या बताया और क्यों?
उत्तर - जगधर नहीं चाहता था कि भैरों सूरदास के सारे पैसे अकेले हज़म कर ले। वह उनमें आधा हिस्सा चाहता था। इसलिए वह भैरों की बुराई करता है कि मैं उसे भला आदमी समझता था,साथ उठता,हँसता,बोलता था। लेकिन जो दूसरों के घर में आग लगाए,गरीब के रुपये चुराए उससे मेरा कोई वास्ता नहीं है।

पाठ -2 अपना मालवा -खाऊ-उजाड़ू सभ्यता में

प्रश्न 1-प्रभाष जोशी का जन्म कब और कहां हुआ?
उत्तर -प्रभाष जोशी का जन्म सन् 1937 में इंदौर मध्यप्रदेश में हुआ था।
प्रश्न 2-जोशी जी ने कौन-कौन से अखबारों का संपादन किया?
उत्तर-इंडियन एक्सप्रेस (अहमदाबाद,चंडीगढ़ संस्करण)प्रजापति,सर्वोदय संदेश ,जनसत्ता।
प्रश्न 3"-जनसत्ता "अखबार का संपादन जोशी जी ने कौन से वर्ष में किया?
उत्तर-सन 1983 में।
कृष 4-प्रभाष जोशी के लेखों का संग्रह किस नाम से प्रकाशित हुआ?
उत्तर- "कागद कारे"
प्रश्न 5-जनसत्ता में लिखे लेखों व संपादकों का प्रकाशन किस नाम से हुआ?
उत्तर-सन 2005 में "हिंदू होने का धर्म "नामक शीर्षक से प्रकाशित हुआ।
प्रश्न 6-लेखक ने पत्रकारिता की शुरुआत किस के सानिध्य में की?
उत्तर-"नई दुनिया "अखबार के संपादक राजेंद्र माथुर के सानिध्य में की।
प्रश्न 7-लोक में" छप्पन का काल" कौन सा माना जाता है?
उत्तर- सन 1899 का काल लोक में' छप्पन का काल' माना जाता है।
प्रश्न 8-"पग-पग नीर वाला मालवा सूखा हो गया"- कैसे?अथवा
अब मालवा में वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था उसके क्या कारण है?
उत्तर-लेखक ने इसके निम्न कारण बताए हैं-
1-औद्योगिक विकास ने पर्यावरण को प्रदूषित कर दिया।
2-प्रदूषित गैसों ने वातावरण को गर्म कर दिया।
3-मालवा के लोगों ने पश्चिमी सभ्यता का अंधानुकरण करना प्रारंभ कर दिया।
प्रश्न 9-"मालवा में विक्रमादित्य, भोज और मुंज रिनेसां के बहुत पहले हो गए ।"पानी के रखरखाव के लिए इन्होंने क्या प्रबंध किए.?
उत्तर-रिनेसां अर्थात पुनर्जागरण काल यूरोप में बीसवीं शताब्दी में आया जिसके कारण ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति हुई और यूरोप में तकनीकी ज्ञान बढ़ा।विदेशियों को यह भ्रम सदा रहा है कि भारत को सभ्यता उन्होंने ही सिखाई किंतु सत्य यह है कि भारत की सभ्यता तथा संस्कृति प्राचीन काल से ही अत्यंत विकसित थी। मालवा के राजा विक्रमादित्य ,भोज और मूंज ने पश्चिम के रिनेसां

CBSE BHINDER

से बहुत पहले ही पानी के रखरखाव के महत्व को समझा और पठार पर पानी को रोककर रखने के उपाय किए उन सभी राजा महाराजाओं ने अनेक तालाब बनवाएं बड़ी-बड़ी बावड़िया बनाई ताकि बरसात का पानी रुका रहे और धरती के गर्भ के पानी को सुरक्षित रखा जा सके।

प्रश्न 10-लेखक ने पर्यावरणीय सरोकारों को आम जनता से जोड़ दिया है कैसे स्पष्ट करें?

अथवा

"अपना मालवा- खाऊ ऊजाडू सभ्यता" पाठ में लेखक की पर्यावरण संबंधी चिंता का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है पाठ के आधार पर लिखिए?

अथवा

हमारे मौसमों का चक्र क्यों बिगड़ रहा है पाठ के आधार पर बताइए?

उत्तर-उक्त अध्याय में लेखक ने मालवा के नागदा ,इंदौर , ओंकारेश्वर, नेमावर आदि स्थानों का यात्रा विवरण देते हुए बताया है कि अब वहां पर कुए ,तालाब आदि सूख गए हैं ।नर्मदा पर विशालकाय बांध बनने से औद्योगिक विकास को भले ही गति मिली है परंतु वहां का पर्यावरण में नष्ट हो गया है। विकसित देशों के उद्योगों से इतनी अधिक कार्बन डाइऑक्साइड तथा अन्य विषैली गैसें निकलती है कि पर्यावरण काफी गर्म हो गया है उत्तरी दक्षिणी ध्रुव से बर्फ पिघल रही है और समुद्र का पानी गर्म हो रहा है ।

प्रश्न 11-लेखक ने वर्तमान सभ्यता को खाऊ उजाडू क्यों कहा है?

उत्तर-खाऊ उजाडू का आशय है खूब खाओ और स्वार्थ की खातिर दूसरों को उजाड़ दो ।वर्तमान में बड़े औद्योगिक क्षेत्रों, बांधों आदि के लिए प्रकृति का विदोहन तेजी से किया जा रहा है ।आर्थिक प्रगति एवं विकास के नाम पर सारे पर्यावरण को नष्ट किया जा रहा है ।वर्तमान सभ्यता के स्वार्थी आचरण के कारण लेखक ने ऐसा कहा।

प्रश्न 12 अपना मालवा पाठ में लेखक को ऐसा क्यों लगता है कि आज की विकासशील और औद्योगिक सभ्यता उजाड़ की अपसभ्यता है?

अथवा

धरती का वातावरण गर्म क्यों हो रहा है? इसमें यूरोप और अमेरिका की क्या भूमिका है टिप्पणी कीजिए?

उत्तर - इस औद्योगिक सभ्यता के कारण होने वाला विकास वास्तविक विकास नहीं है ।इससे पर्यावरण प्रदूषित होता है। समस्त विश्व को आज जलवायु तथा ध्वनि प्रदूषण झेलना पड़ रहा है ।मौसम का चक्र बिगड़ रहा है ।खाने की वस्तुओं तथा पीने के पानी का संकट है ।समुद्रों का जलस्तर बढ़ रहा है ।ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है ।लद्दाख में बर्फ़ की जगह पानी गिर रहा है ।बाड़मेर के गांव जलमग्न हो रहे हैं ।यूरोप और अमेरिका में गर्मी पड़ रही है । इन देशों के बड़े -बड़े कारखानों से निकलने वाली कार्बन डाइऑक्साइड गैस ने मिलकर धरती के तापमान को 3 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ा दिया है। सारी गड़बड़ी पृथ्वी का तापमान बढ़ने से हो रही है यह संकट पाश्चात्य सभ्यता के कारण हुआ यह सभ्यता नहीं खाऊ -उजाडू अपसभ्यता है।

प्रश्न 13-मालवा में जब सब जगह बरसात की झड़ी लगी रहती है तब मालवा के जनजीवन पर इसका क्या असर पड़ता है?

उत्तर- अत्यधिक वर्षा के कारण बाढ़ आ जाती है और नदी नालों का पानी घरों में घुस जाता है इससे लोगों को काफी परेशानी होती है ।जब बाढ़ आती है तब फसलों की हानि होती है तथा खाने-पीने की चीजों का अभाव पैदा हो जाता है ।ऐसा भी होता है कि सोयाबीन की फसल खराब हो जाती है तो गेहूं और चने की फसल अच्छी होती है ।तालाबों ,नदियों तथा बावड़ियों के भर जाने के कारण गर्मी की ऋतु में सूखे से बचाव भी होता है बरसात में सभी हुए बावड़ी ,ताल तलैया पानी से लबालब भर जाते हैं। इससे आश्वासन मिलता है कि मालवा जल से खूब संपन्न और समृद्ध हो गया।

प्रश्न 14-हमारी आज की सभ्यता इन नदियों को गंदे पानी के नाले बना रही है क्यों और कैसे?

उत्तर -1-दूषित रसायनों से युक्त गंदा पानी नदियों में बहाकर उसको प्रदूषित किया जा रहा है।

2-बड़े बड़े नगरों और महानगरों के गंदे नालों का पानी इन नदियों में डाला जा रहा है।

3-नदियों की प्रति पवित्रता और मातृत्व का भाव औद्योगिक विकास के कारण बढ़ता जा रहा है।

यह आधुनिक सभ्यता का ही दुष्प्रभाव है कि नदियों का जल पीने तो क्या खेतों की सिंचाई के लिए भी उपयुक्त नहीं रहा।

CBSE BHINDER

अध्याय 3 – आरोहण

अतिलघुतरात्मक प्रश्न

1. रूपसिंह अपने गांव कितने समय बाद लौटा था ?
उत्तरः– ग्यारह वर्ष बाद
2. देवकुंड के स्टॉप से रूपसिंह का गांव माही कितना दूर था?
उत्तरः– पन्द्रह किमी
3. पहाड़ के नीचे बह रही नदी का नाम था ?
उत्तरः– सूपिन
4. भूपसिंह अपने छोटे भाई को क्या कहकर पुकारता था ?
उत्तरः– भुइला
5. कौनसा प्रसंग छिड़ जाने के बाद रूपसिंह को बाकी चीज की कोई सूधि नहीं रह जाती थी?
उत्तरः– पर्वतारोहण
6. पहाड़ के रोए किसके लिए कहा गया है?
उत्तरः– देवदार के वृक्ष के लिए
7. रूपसिंह व शेखर का पर्वतारोहण का अध्याय क्यों समाप्त करना पड़ा ? ? ?
उत्तरः– महीप ने उकताकर टोक दिया 'साब जल्दी करो न'।
8. रूपसिंह शैला के लिए किस के फूल तोड़कर लाया करता था ?
उत्तरः– बुकस।
9. शेखर और रूपसिंह को घोड़े से क्यों उतरना पड़ा ?
उत्तरः–जब सामने भेड़ें आ गई और भेड़ों के साथ भेटिया कुत्ता भी आ गया था इसलिए उन दोनों का नीचे उतरना पड़ा।
10. शैला स्वेटर किसके लिए बुन रही थी ?
उत्तरः–भूपसिंह
11. रूपसिंह और भूपसिंह के पिता का नाम क्या था ?
उत्तरः– रामसिंह
12. ''धूंध के परदे के पीछे किसी बच्चें की तरह झांक रहा था लाल–लाल सूरज'' पंक्ति में अलंकार है ?
उत्तरः–मानवीकरण अलंकार।
13. भूपसिंह बैलों को पहाड़ी पर कैसे लाया था ?
उत्तरः– कंधों पर लादकर।
14. ''कौण केता है अकेला हूं'' भूपसिंह के इस कथन के अनुसार उसके साथ पहाड़ पर कौन कौन था ?
उत्तरः– मां,बाबा, शैला, ये सब सोए हुए है अर्थात् सब की याद है और अन्य में महीप है, बैल है, और घरवाली है।
15. '' तुझे बचपन में बाबा की सुनाई कहानी याद है न'' भूपसिंह किस कहानी के बारें में कहता है?
उत्तरः– नन्हीं चिड़िया की कहानी ।

लघुतरात्मक प्रश्न

1. रूपसिंह अपनी और अपने गांव की तौहिन किसमें बता रहा था?
उत्तरः– ग्यारह वर्ष बाद भी कोई मुकम्मिल सड़क नही बन पाई और अपने गॉड फादर के पुत्र आई ए एस ट्रेनी शेखर कपूर को पैदल पांव ही अपने गांव ले जाना अपनी और अपने गांव की ताहिन समझ रहा था।
2. माही जाने वाले रास्तें के बारे में रूपसिंह ने क्या पौराणिक तथ्य बताएं?
उत्तरः– ' पांडव इसी रास्ते से स्वर्ग गए थे और इधर का सबसे आखिरी गांव सुरगी है यानी स्वर्ग और उसके कुछ आगे स्वर्गारोहिणी अर्थात् स्वर्ग जाने का रास्ता।
3. रूपसिंह गांव से मसुरी किस प्रकार पहुचा?
उत्तरः– शेखर के पिताजी किसी पर्वतारोहण की ट्रेनिंग के लिए रूपसिंह के गांव आए हुए थे जो रास्ता भटक गए थे। तब रूपसिंह ने उन्हें रास्ता बताया और पर्वतारोहण की अपनी कला कौशन का प्रदर्शन किया। इस पर प्रसन्न होकर शेखर के पिताजी रूपसिंह को अपने साथ मसुरी ले आए।
4. रूपसिंह शेखर के सामने क्यों खिसिया गया?
उत्तरः– जब रूपसिंह ने बूढ़े तिरलोक सिंह को बताया कि वही रूपसिंह है और सरकार उसे पहाड़ों पर चढ़ने के लिए महिना चार हजार रूपया देती है तब तिरलोक सिंह इस बात का सभी के सामने मजाक बनाते है और रूपसिंह की किरकिरी होती है। इस बात पर रूपसिंह शेखर के सामने खिंसिया गया।

CBC BHINDER

5. भूपसिंह का व्यक्तित्व वर्णन कैसा दर्शाया गया?

उत्तरः– गोरा चिट्टा चितीदार चेहरा मानो ग्रेनाइट पत्थर को तराशकर गढ़ा गया सख्त लंबोतरा चेहरा, उसकी अजीब की स्थितप्रज्ञ आंखें मद्दिम मद्दिम जलती हुई भौहों पर कटों के निशान । ग्यारह सालों में और भी ठोस और भी सख्त हो आए थे ।

6. भूपसिंह ने खुद का पहाड़ी पर आने का क्या कारण बताया?

उत्तरः– भूपसिंह ने रूपसिंह को बताया कि ' तेरे जाने के बाद बहुत बरफ गिरी हिमांग पहाड़ उसका बोझ न उठा सका और वह नीचे धसक गया। इस कारण उनके पुस्तैनी तीस नाली खेत, मां–बाप, सब कुछ दफन हो गए तब भूपसिंह उस स्थान को छोड़कर पहाड़ पर आ गए।

7. महीप सिंह अपने बारें में बात पूछे जाने पर उसे टाल क्यों देता था?

उत्तरः– महीप गांव का एक शर्मिला और संकोची स्वभाव का लड़का था। बातों ही बातों में उसे ज्ञात हों गया की रूपसिंह ही उसका चाचा है और उसकी मां शैला से रूपसिंह मन ही मन प्रेम करता था। जबकि उसकी मां शैला भूपसिंह से प्रेम करती थी। वह किसी बात से नाराज होकर सूपिन नदीं में कूद कर आत्महत्या कर लेती है। इन सब बातों पर परदा डाले रहने के लिए महीप हर बात पर चुप ही रहता है।

CBEO BHINDER

''अलंकार''

प्रश्न 1. अलंकार शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर अलंकार शब्द का अर्थ आभूषण है।

प्रश्न 2. 'अलंकार' शब्द कितने शब्दों से मिलकर बना हैं?

उत्तर (अलं+कार) इन दो शब्दों से मिलकर बना हैं।

प्रश्न 3. अलं+कार शब्दों का शाब्दिक अर्थ बताइये।

उत्तर अलं –– भूषण

कार –– करने वाला

अर्थात् जो भूषित करे वह अलंकार हैं।

प्रश्न 4. अलंकार की परिभाषा लिखिए।

उत्तर जिस प्रकार स्त्रियाँ अपने साज श्रृंगार के लिए आभूषणों का प्रयोग करती है ठीक उसी प्रकार कविता कामिनी अपने श्रृंगार और सजावट के लिए जिन तत्वों का उपयोग करती हैं वे अलंकार कहलाते है। अर्थात् काव्य के शोभा कारक धर्म अलंकार है।

प्रश्न 5. अलंकार के कितने प्रकार हैं?

उत्तर अलंकार दो प्रकार के होते है।

प्रश्न 6. अलंकार के दो प्रकारों के नाम बताइये।

उत्तर (1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

प्रश्न 7. शब्दालंकार की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

उत्तर जहाँ किसी कथन में विशिष्ट शब्द प्रयोग के कारण चमत्कार अथवा सौन्दर्य आ जाता है वहाँ शब्दालंकार होता हैं। वह बाँसुरी की धुनि कानि पैर, कूल कानि हियो तजि भाजति हैं। ''कानि'' के दो अर्थ – कान और मर्यादा है।

इस प्रकार का शब्द प्रयोग शब्दालंकार कहलाता है।

प्रश्न 8 अन्योक्ति अलंकार की परिभाषा (लक्षण) बताइये।

उत्तर कवि अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराता हैं तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता हैं।

अन्योक्ति में बात किसी प्रस्तुत पर रखकर कही जाती हैं लेकिन कथन का लक्ष्य कोई दूसरा प्रस्तुत होता है।

प्रश्न 9 अन्योक्ति अलंकार का उदाहरण दीजिए।

उत्तर स्वारथ सुकृत न श्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।

बाज पराये पानि पर, तू पंछीन न मारि।।

कविवर बिहारी ने इस अन्योक्ति द्वारा मिर्जा राजा जयसिहं को सावधान किया हैं कि वह बादशाह के लिए स्वधर्मी राजाओं के साथ युद्ध ना करे

प्रश्न 11. समासोक्ति एवं अन्योक्ति अलंकार का उदाहरण सहित अन्तर स्पष्ट कीजिए।

समासोक्ति अलंकार–– इसमें कुछ ऐसे विशेषणों का प्रयोग होता हैं जिसमें प्रस्तुत और अप्रस्तुत अर्थ का एक साथ बोध हो जाता है। समास अर्थात् संक्षिप्त उक्ति द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का बोध जहाँ एक साथ होता हैं वहाँ समासोक्ति अलंकार होता हैं।

CBEO BHINDER

उदाहरण– सिंधु सेज पर धरा वधू अब, तनि संकुचित बैठी सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किए सी ऐंठी सी।।
यहाँ धरा तथा वधू का चित्रण समान विशेषताओं के द्वारा एक साथ होने से समासोक्ति अलंकार हैं।

अन्योक्ति अलंकार ––जब कवि अप्रस्तुत का वर्णन करके प्रस्तुत का बोध कराता हैं तो वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता हैं।

अन्योक्ति में बात किसी प्रस्तुत पर रखकर कही जाती हैं लेकिन कथन का लक्ष्य कोई दूसरा प्रस्तुत होता है।

उदाहरण – स्वास्थ्य सुकृत न श्रम वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि पर, तू पंछीन न मारि।।
कविवर बिहारी ने इस अन्योक्ति द्वारा मिर्जा राजा जयसिहं को सावधान किया हैं कि वह बादशाह के लिए स्वधर्मी राजाओं के साथ युद्ध ना करे।

प्रश्न 12. समासोक्ति अलंकार से क्या तात्पर्य है?

उत्तर इसमें कुछ ऐसे विशेषणों का प्रयोग होता हैं जिसमें प्रस्तुत और अप्रस्तुत अर्थ का एक साथ बोध हो जाता है। समास अर्थात् संक्षिप्त उक्ति द्वारा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का बोध जहाँ एक साथ होता हैं वहाँ समासोक्ति अलंकार होता हैं।

प्रश्न 14. समासोक्ति अलंकार का उदाहरण लिखिए।

उत्तर सिंधु सेज पर धरा वधू अब, तनि संकुचित बैठी सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में, मान किए सी ऐंठी सी।।
यहाँ धरा तथा वधू का चित्रण समान विशेषताओं के द्वारा एक साथ होने से समासोक्ति अलंकार हैं।

प्रश्न 15 विभावना अलंकार तथा विशेषोक्ति अलंकार का अन्तर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर **विभावना अलंकार** –– जहाँ कारण के अभाव में कार्य होने का वर्णन किया जाता हैं वहाँ विभावना अलंकार होता हैं। विभावना में बिना कारण के कार्य सम्पन्न होता हैं।

उदाहरण –– बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।

कर बिन करम करे विधि नाना।।

आनन रहित सकल रस भोगी।

बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।

विशेषोक्ति अलंकार–जहाँ कारण उपस्थित होने पर भी कार्य नहीं होता, वहाँ विशेषोक्ति अलंकार होता है। कारण होने पर कार्य अवश्य होना प्रकृति प्रसिद्ध नियम हैं।

इसके विपरीत विशेषोक्ति में कारण होने पर भी कार्य सम्पन्न नहीं होता।

उदाहरण ––देखो दो–दो मेघ बरसते
मैं प्यासी की प्यासी।
जल होने पर भी उसकी (वियागिनी) प्रिय के दर्शन की प्यास नहीं बुझ रही।
प्रश्न 16. विभावना अलंकार की परिभाषा लिखिए।
उत्तर जहाँ कारण के अभाव में कार्य होने का वर्णन किया जाता हैं वहाँ विभावना अलंकार होता हैं। विभावना में बिना कारण के कार्य सम्पन्न होता हैं।
प्रश्न 17. विभावना अलंकार का उदाहरण दीजिए।
उत्तर उदाहरण –– बिनु पद चलै सुनै बिनु काना।
कर बिन करम करे विधि नाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बानी वक्ता बड़ जोगी।।
प्रश्न 18. 'प्रतीप' शब्द का अर्थ क्या हैं?
उत्तर प्रतीप शब्द का अर्थ हैं, विपरीत अथवा उल्टा।
प्रश्न 19. प्रतीप अलंकार की परिभाषा दीजिए।
उत्तर जहाँ कविता में किसी प्रसिद्ध उपमान का उपमेय की तुलना में अपकर्ष किया जाता हैं वहाँ प्रतीप अलंकार होता है।

CEO BHINDER

प्रश्न 20. प्रतीप अलंकार का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर ''सीप बदन सम हिमकर नाहीं। इस उदाहरण में सुन्दर मूल के प्रसिद्ध उपमान चन्द्रमा का उपमेय, 'सीप बदन' की तुलना में अपकर्ष दिखाया गया हैं अतः प्रतीप अलंकार है।
प्रश्न 21. 'व्यतिरेक' अलंकार की परिभाषा दीजिए।
उत्तर व्यतिरेक अलंकार में उपमेय की तुलना में उपमेय में अधिक विशेषताएँ बताते हुए उसे उपमान से श्रेष्ठ सिद्ध किया जाता हैं।
प्रश्न 22. व्यतिरेक अलंकार का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर निज परताप द्रवहि नवनीता।
पर दुख द्रवहि सुसंत पुनीता।।

यहाँ नवनीत की अपेक्षा सन्तों में पर दुख से द्रवित होने की विशेषता बताते हुए उन्हें नवनीत से श्रेष्ठ बताया गया हैं।

प्रश्न 23. . विभावना अलंकार की परिभाषा लिखिए ?
उत्तर–जहां कारण का अभाव होने पर भी कार्य संपन्न होना प्रदर्शित होता है। कहीं कही अपर्याप्त कारण होने पर भी कार्य का होना, रूकावट होने पर भी कार्य हो जाए तथा विपरित कारण से कार्य हो वहां विभावना अलंकार होता है।
प्रश्न 24. . विभावना अलंकार के अन्य उदाहरण–
उत्तर– 1. मुनितापस जिनतें दुख लहहीं ।
तेन रेस बिनु पावक दहहीं ।।
2.बिन घनश्याम धाम– धामब्रज–मंडल में,
ऊधो! नित बसति बहार बरसा की है।
3.कारे घन उमडि अॅगारे बरसत हैं।

प्रश्न -25 अन्योक्ति अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर - जहाँ अप्रस्तुत (उपमान) के वर्णन के माध्यम से प्रस्तुत (उपमेय) का ज्ञान होता है वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है। यह अर्थालंकार है। इसको अन्योक्ति इसलिए कहा जाता है कि जिससे कुछ कहना होता है उससे न कहकर अन्य से कहा जाता है तथा इस प्रकार उसको सूचित किया जाता है। इसमें किसी वस्तु का सीधा वर्णन न करके उसी के समान किसी वस्तु का वर्णन करके उस वस्तु का ज्ञान कराया जाता है।

उदाहरण –

(क) नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहि काल।
अली कली ही सों बंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

यहाँ अलि को कली पर मंडराने से मना किया गया है क्योंकि अभी वह अविकसित है, फूल नहीं बनी। अलि के माध्यम से राजा जयसिंह को अपनी नवोढ़ा रानी के प्रेम-बन्धन में बँधकर राज्यषालन के कर्तव्य से विमुख होने के प्रति सतर्क किया गया है।

प्रश्न -26 अन्योक्ति अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर – जहाँ किसी उक्ति के माध्यम से किसी अन्य को कोई बात कही जाए, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

करि फुलेल को आचमन मीठौ कहत सिहाइ)
ऐ गंधी मतिमंद तू इतर दिखावत काहि । ।

स्पष्टीकरण-यहाँ इत्र बेचने वाले के माध्यम से अयोग्य, अरसिक और कलाशून्य लोगों पर व्यंग्य किया गया है।

प्रश्न -27 समासोक्ति अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर -जहाँ पर कार्य, लिंग या विशेषण की समानता के कारण प्रस्तुत के कथन में अप्रस्तुत व्यवहा रका समारोप होता है अथवा अप्रस्तुत का स्फुरण होता है, वहाँ **समासोक्ति** अलंकार होता है.

UNDER

समासोक्ति में प्रयुक्त शब्दों से प्रस्तुत अर्थ के साथ-साथ एक अप्रस्तुत अर्थ भी सूचित होता है जो यद्यपि प्रसंग का विषय नहीं होता फिर भी ध्यान आकर्षित करता है.

उदाहरण: मिलह् सखी हम तहवाँ जाहीं.
जहाँ जाइ पुनि आउब नाहीं..
सात समुद्र पार वह देसा.
कित रे मिलन कित आब संदेसा..

यहाँ पद्मावती के ससुराल जाने का अर्थ है पर परोक्षतः मानव के परलोक जाने का अप्रस्तुत अर्थ भी सूचित होता है

प्रश्न -28 समासोक्ति अलंकार का उदाहरण लिखिए।

उत्तर - वन-वन उपवन.
छाया उन्मन-उन्मन गुंजन.
नव वय के अलियों का गुंजन..

यहाँ भ्रमरों का अर्थ प्रस्तुत है जिससे नवयुवक कवियों का अप्रस्तुत अर्थ भी सूचित होता है.।

प्रश्न -29 विभावना अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर - जहाँ कारण के न होते हुए भी कार्य का होना पाया जाता है, वहाँ **विभावना अलंकार** होता है। उदाहरण -

निंदक नियरे राखिए , आँगन कुटी छबाय।
बिन पानी साबुन निरमल करे स्वभाव।।

प्रश्न -30 प्रतीप अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर - प्रतीप का अर्थ है- विपरीत अथवा उल्टा। जहाँ प्रसिद्ध उपमान का उपमेय की तुलना में अपकर्ष प्रकट है, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है

उतरि नहाए जमुन जल।
जो शरीर सम स्याम॥
यहाँ यमुना नदी के जल (उपमान) को शरीर (उपमेय) के समान बताने के कारण प्रतीप अलंकार है।

प्रश्न -31 प्रतीप अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर-उपमेय की किसी विशेषता का खण्डन करके उसकी समता किसी प्रसिद्ध उपमान से की जाती है

बहुरि विचार कीन्ह मन माही।
सीय बदन सम हिमकर नाहीं॥
यहाँ सीता के मुख्य उपमेय) के सामने)हिमकर उपमान) को हीन दिखाया गया है), अतप्रतीप अलंकार है। :

प्रश्न -32 व्यतिरेक अलंकार का लक्षण एवं उदाहरण लिखिए।

उत्तर - जहाँ कवि उपमान की अपेक्षा उपमेय में अधिक विशेषताएँ देखकर उसको उपमान से श्रेष्ठ सिद्ध करता है, वहाँ व्यतिरेक अलंकार होता है।

सियमुख की समता भला क्या खा करे मयंक।
विष है उसके अंक में और बदन सकलंक।
(यहाँ सिय मुख (उपमेय) को मयंक (उपमान) से श्रेष्ठ बताया गया है।)

प्रश्न -33. दृष्टांत - दृष्टांत उस अलंकार को कहते हैं जिसमें उपमेय और उपमान वाक्य दोनों में, उपमान, उपमेय और साधारण धर्म का बिम्ब -प्रतिबिम्ब भाव दिखाई देता है. पहले एक बात कही जाती है, फिर उससे मिलती-जुलती दूसरी बात कही जाती है.इस प्रकार उपमेय वाक्य की उपमान वाक्य से बिम्बात्मक समानता प्रकट की जाती है|

उदाहरण- पापी मनुज भी आज मुख से राम नाम निकालते |
देखो भंयकर भेड़िये भी, आज आंसू डालते ||
प्रथम पंक्ति में पापीजनों की दुष्ट प्रवृत्ति को भेड़िये के दृष्टांत द्वारा व्यक्त किया गया है |
प्रश्न -34. प्रतीप - प्रतीप का अर्थ है -विपरीत अथवा उल्टा | जहाँ प्रसिद्ध उपमान का उपमेय की तुलना में अपकर्ष प्रकट किया जाता है, वहाँ प्रतीप अलंकार होता है |
1. प्रसिद्ध उपमान को उपमेय की तरह प्रयुक्त किया जाता है, जैसे आकाश में चमकता चन्द्रमा उस सुन्दरी के मुख के समान है |
2. उपमेय की किसी विशेषता का खण्डन करके उसकी क्षमता किसी प्रसिद्ध उपमान से की जाती है, जैसे- कमल ही कोमल नहीं है, बालकृष्ण के हाथ भी उसके समान कोमल है |
3. प्रसिद्ध उपमान का उपमेय के सामने निरादर हो तो प्रतीप अलंकार होता है, जैसे - वीर शिवाजी तुम्हारी कीर्ति चांदनी से भी अधिक चमकीली है |
4. उपमेय के होने की स्थिति में उपमान को व्यर्थ बताया जाय तो भी प्रतीप अलंकार होता है, जैसे- नायिका के मुख की शोभा के रहते उस गाँव में चन्द्रमा की आवश्यकता नहीं है |
उदाहरण- बहुरि विचार कीन्ह मन मांही |
सीय बदन सम हिमकर नाहीं ||
प्रश्न -35. मानवीकरण - जब अमूर्त भावों अथवा जड़ वस्तुओं में मानवीय गुणों का आरोपण कर दिया जाता है तो मानवीकरण अलंकार होता है.मानवीकरण में प्रकृति को मानवीकरण रुप दिया जाता है तथा निर्जीव पदार्थों को मनुष्य की तरह काम करते या सुख - दुःख आदि भावों से पूरित और प्रभावित दिखाया जाता है |
उदाहरण - दिवसावसान का समय,
मेघमय आसमान से उतर रही |
व संध्या - सुन्दरी परी -सी,
धीरे -धीरे -धीरे ||
यहाँ संध्या काल को एक - एक कदम रखकर आसमान से धरती पर उतरती हुई सुन्दरी बताने के कारण मानवीकरण अलंकार है |
प्रश्न -36. व्यतिरेक - व्यतिरेक अलंकार वह होता है जिसमें उपमान की अपेक्षा उपमेय का उत्कर्ष दिखाया जाता हो |व्यतिरेक में उपमान की तुलना में उपमेय में अधिक गुण बता कर उसकी उपमान से श्रेष्ठता प्रकट की जाती है. उपमेय की उपमान से श्रेष्ठता का आधार उसमें अधिक विशेषताओं का होना होता है | प्रतीप अलंकार में उपमेय की तुलना पर अधिक जोर होता है | किन्तु व्यतिरेक अलंकार में उपमेय में उपमान से गुणों अथवा विशेषताओं को अधिक बताकर उपमेय को श्रेष्ठ सिद्ध किया जाता है | इसमें तुलना का भाव नहीं होता | व्यतिरेक अलंकार इस प्रकार का होता है |
उदाहरण -
शरद चन्द्र की कोई समता राधा मुख से है न |
दिन मलीन वह घटता बढ़ता, यह विकसित दिन रैन ||
शरद का चन्द्रमा (उपमान) प्रकाशमान और सुन्दर होता है | परन्तु उसकी राधा के मुख (उपमेय) से समानता नहीं हो सकती | वह दिन में निस्तेज रहता है | मलिन तथा घटता -बढ़ता है, इसलिए राधा के रात - दिन खिलते मुख से वह हीन है |

CBEO BHINDER

—:छन्द:—

प्रश्न : 1. छन्द की परिभाषा बताइए।
उत्तर : — जब किसी कविता को मात्राओं की संख्या में मात्राओं अथवा नियमित वर्णों के अनुसार लिखा जाता है तथा उसमें यथा स्थान विराम, यति तथा गति का पालन किया जाता है तो उसको छन्द कहते हैं।
प्रश्न : 2. छन्द के प्रमुख भेद कौन—कौन से माने जाते हैं ? वर्णन कीजिए।
उत्तर : —छन्द के प्रमुख दो भेद माने जाते हैं।

1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द

प्रश्न : 3 मात्रिक छन्द किसे कहते हैं।
उत्तर : — जिन छन्दों में केवल मात्राओं का विधान रहता है, मात्रिक छन्द कहलाते हैं।
प्रश्न : 4 वर्णिक छन्द किसे कहते हैं ?
उत्तर : —जिन छन्दों में केवल वर्णों की गणना की जाती है, वर्णिक छन्द कहलाते हैं।
प्रश्न : 5. मात्रिक एवं वर्णिक छन्द में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
उत्तर : —मात्रिक छन्द—(1) मात्रिक छन्द मात्राओं की संख्याओं के आधार पर होते हैं।
(2) इस छन्द के लिए दो मात्राएं निर्धारित हैं— लघु (I), गुरु (S)
(3) इसमें ह्रस्व स्वर को एक मात्रा तथा दीर्घ स्वर को दो मात्रा गिना जाता है।
—वर्णिक छन्द—(1) वर्णिक छन्द वर्णों की संख्याओं के आधार पर होते है।
(2) इसमें सिर्फ वर्णों का ही महत्व होता है।
(3) इसमें ह्रस्व व दीर्घ स्वर के वर्णों को केवल एक गिना जाता है।
प्रश्न : 6. सवैया छन्द किसे कहते हैं ?
उत्तर : — सवैया एक छन्द है। यह चार चरणों का समपाद वर्ण छन्द है। वर्णिक वृत्तों में 22 से 26 अक्षर के चरण वाले जाति छन्दों को सामूहिक रूप से हिन्दी में सवैया कहते हैं।
प्रश्न : 7. सवैया छन्द के कितने भेद माने जाते हैं, नामोल्लेख कीजिए ?
उत्तर : — सवैया छन्द के मुख्यतः 10 भेद माने जाते हैं।

(1) मदिरा सवैया।
(2) मत्तगयंद (मालती) सवैया।
(3) सुमुखी सवैया।
(4) किरीट सवैया।
(5) सुन्दरी सवैया।
(6) दुर्मिल सवैया।
(7) कुवंदलता सवैया।
(8) लवंगलता सवैया।
(9) अरसात सवैया।
(10) अरविन्द सवैया।

प्रश्न : 8. मदिरा सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए ?
उत्तर : —परिभाषा/लक्षण — इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात भगण (S।।) और अन्त में एक गुरु (S) होता है। प्रत्येक चरण में वर्णों की संख्या बाईस (22) होती है।
उदाहरणः— **सिंधु तर्‌यो उनके बनरा, तुम पै धनुरेख गई न तरी।**
बानर बाँधत सो न बंध्यो, उन वारिधि बाँधि के बाट करी।
श्री रघुनाथ प्रताप की बात, तुम्हें दसकंठ न जानि परी।
तेलहु तूलहु पूँछ जरीन जरी, जरी लंक जराइ जरी।

प्रश्न : 9. मत्तगयंद/मालती सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?
उत्तर :— इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात भगण (S।।) और अन्त में दो गुरु (SS) होते हैं। प्रत्येक चरण की वर्ण संख्या—23 होती है।

CBEO BHINDER

उदाहरण– **दूलह श्री रघुनाथ बने, दुलही सिय सुन्दर मंदिर मांहीं।**
– गावति गीत सबै मिलि सुंदरि, विप्र जुवा जुरि वेद पढ़ाहीं।
– रामको रूप निहारति जानकी, कंकन के नग की परछांहीं।
– यातै सबै सुधि भूलि गई, कर टेकि रही पल टारत नांहीं।

प्रश्न : 10. सुमुखी सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः सात जगण (।ऽ।) और अंतअ में एक लघु और एक गुरू के क्रम में कुल तेबीस वर्ण होते हैं।

उदाहरणः– **जु लोक लगै सिय रामहि साथ, चलै वन मांहि फिरै न चहैं।**
हमें प्रभु आयसु देहु चलैं रउरे सँग यों कर जोरि कहैं।
चलै कछु दूर नमैं पग धूरि, भले फल जन्म अनेक लहैं।
सिया सुमुखी हरि फेरि जिन्हें, बहु भाँतिन तैं समुझाय कहैं।

प्रश्न : 11. किरीट सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में क्रमशः आठ भगण (ऽ।।) होते हैं। प्रत्येक चरण के वर्णों की कुल संख्या चौबीस (24) मानी गई है।

उदाहरणः–**मानुष हौ तो वही रसखानि, बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।**
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।
पाहन हौं तो वही गिरी को, जो धर्‌यो कर छात्र पुरंदर कारन।
जो खग हौं तो बसेरो करौं, नित कालिंदि कूल कदंब कि डारन।

प्रश्न : 12. सुन्दरी सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तरः– परिभाषा–इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ) और एक गुरू (ऽ) के क्रम से कुल पच्चीस वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**सब सूर सुयोधन साथ गये, मृतको से भरा यह देश बचा है।**
मृतवत्सल माँ की पुकार बची, युवती विधवाओं का वेश बचा है।
सुख शांति गई, रस राग गया, करुणा दुख दैन्य अशेष गचा है।
विजयी के लिए यह भाग्य के हाथ में, क्षार समृद्धि का शेष बचा है।

प्रश्न : 13. दुर्मिल सवैया की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए ?

उत्तरः – परिभाषा–इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ) के क्रम में कुल चौबीस (24) वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**अति सूधो सनेह को मारग है, जहँ नेकु सयापन बाँक नहीं।**
तहँ साँचे चलैं तजि आनुनयौ, झिझकैं कपटी जे निसाँक नहीं।
धन आनंद प्यारे सुजान सुनो, इत एक तें दूजो आँक नहीं।
तुम कौन सी पाटी पढ़े हौ लला, मन लेहु पै देहु छटाँक नहीं।

प्रश्न : 14. कुवंदलता सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तरः – परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ) और दो लघू (।।) के क्रम में कुल छब्बीस (26) वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**सब सौ ललुआ मिलि कै रहिये, मन जीवन–मूरि सूनो मनमोहन।**
इमि बोधि खवाय पियाय सख सँग, जाहु कहै मुद सों बन जोहन।
धरि मातु रजायसु सीस हरी, नित जामुन कच्छ फिरै सह गोपन।
यहि भाँति हरी जसुदा उपदेसहि, भाखत नेह लहै सुख सों धन।

प्रश्न : 15. लवंगलता सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तरः – परिभाषा – इसके प्रत्येक चरण में आठ जगण (।ऽ।) और अंत में एक लघु (।) के क्रम में कुल 25 वर्ण होते हैं।

उदाहरण :–**जु योग लवंग लतानि लग्यो, तब सूझ परै न कछु घर बाहर।**
अरे मन चंचल नेकु विचार, नहीं यह सार असार सरासर।
भजों रघुनंदन, पाप निकंदन, श्री जगबंदन नित्य हिये घर।

CBSE BHINDER

तजो कुमती, धरिये सुमती, शुभ रामहिं राम रटो निसि बासर।

प्रश्न : 16. अरसात सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर : – परिभाषाः– इसके प्रत्येक चरण में सात भगण (ऽ।।) और एक रगण (ऽ।ऽ) के क्रम से कुल चौबीस वर्ण होते है।

उदाहरण :–**कैभट सो नरकासुर सो, पल में मधु सो सुर सो जिहिं मार्‌यो।**
लोक चतुर्दस रक्षक केशव, पूरण वेद पुराण विचार यो।
जो कमला कुच कुंकुंम मंडन, पंडित देव अदेव निहार्‌यो।
सो कर मांगन को बलि पै, करतारहु नैं करतार पसार्‌यो।

प्रश्न : 17. अरविंद सवैया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

उत्तर :– परिभाषा– इसके प्रत्येक चरण में आठ सगण (।।ऽ) और अंत में एक लघु(।) के क्रम से कुल 25 वर्ण होते हैं।

उदाहरणः–**सब सों लघु आपहिं जानिय जू, यह धर्म सनातन जान सुजान।**
जब हीं सुमती अस आनि बसै, उर संपत्ति सर्व विराजत आन।
प्रभु व्यापि रह्‌यो सचराचर में, तजि बैर सुभक्ति सजौमतिमान।
नितराम पदै अरविंदन को, मकरंद पियो सुमिलिंद समान।

प्रश्न : 18. कुण्डलिया छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा – दोहा और रोला छन्द के मिश्रण से कुण्डलिया छन्द बनता है। यह छः चरणों का छन्द है जिसके प्रारम्भ के दो चरण 'दोहा' के तथा बाद के चार चरण 'रोला' के होते हैं। दोहे का अंतिम चरण रोला के प्रारम्भ में आता है और दोहा का प्रथम शब्द रोला का अंतिम शब्द होता है।

उदाहरणः–**लाठी में गुण बहुत हैं, सदा राखिये संग।**
गहरे नद नाले जहाँ, तहाँ बचावै अंग।
तहाँ बचावै अंग, झपटि कुत्ते को मारे।
दुसमन दावागीर, होय ताहू को झारे।
कहि गिरधर कविराय, सुनो हो धुर के बाठी।
सब हथियारन छोड़ि, हाथ में लीजै लाठी।

प्रश्न : 19. कुण्डलिया छन्द में कौन कौन से छन्दों का मिश्रण होता है, नामोल्लेख कीजिए?

उत्तर :– कुण्डलिया छन्द में दो छन्दों का मिश्रण होता है।

(1) दोहा। (2) रोला ।

प्रश्न : 20. छप्पय छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा– यह छः चरणों का विषम (मिश्र) छन्द है। इसके प्रथम चार चरण ''रोला'' छन्द के तथा अंतिम दो चरण ''उल्लाला'' छन्द के होते हैं। रोला के प्रत्येक चरण में ग्यारह और तेरह के विराम/यति से चौबीस मात्राएँ होती हैं। जबकि उल्लाला के विषम चरणों में पन्द्रह और सम चरणों में तेरह मात्राएँ होती है। इन दोनों छन्दों के क्रमिक मिश्रण से छप्पय छन्द बनता है। छः चरणों का छन्द होने के कारण ही ''छप्पय'' कहा जाता है।

उदाहरणः–**नीलाम्बर परिधान, हरित पट पर सुन्दर है।**
सूर्यचन्द्र युग मुकुट, मेखला रत्नाकर है।
नदियाँ प्रेम प्रवाह, फूल तारे मण्डल है।
बंदी निविध विहंग, शेष फन सिंहासन है।
करते अभिषेक पयोद है, बलिहारी इस वेश की।
हे मातृभूमि तू सत्य ही, सगुण मूर्ति सर्वेश की।

प्रश्न : 21. छप्पय छन्द किन दो छन्दों से मिलकर बनता हैं?

उत्तर :– छप्पय छन्द ''रोला'' और ''उल्लाला'' छन्द से मिलकर बनता है।

CEO BHINDER

प्रश्न : 22. हरिगीतिका छन्द की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए?

उत्तर :– परिभाषा:– हरिगीतिका छन्द एक मात्रिक छन्द है। इसके प्रत्येक चरण में 16 और 12 के विराम/यति के कुल 28 मात्राएँ होती है। अंत में लघ ु गुरू (।S) आते हैं।

उदाहरण:–**हम कौन थे, क्या हो गये हैं, और क्या होंगे अभी।**

आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी।

देखें कहीं पूर्वज हमारे, स्वर्ग से आकर हमें।

आँसू बहावें शेक से, इस वेश में पाकर हमें।

प्रश्न : 23. हरिगीतिका छन्द किस प्रकार का छन्द है?

उत्तर :– हरिगीतिका छन्द एक मात्रिक सम छन्द है।

प्रश्न : 24. गण किसे कहते हैं। तथा छन्दों में इसका क्या उपयोग है?

उत्तर :– गण का सामान्य अर्थ है समूह। छन्दशास्त्र में तीन अक्षरों के समूह को ''गण'' कहते हैं वर्णिक छन्दों के लिए गणों का ज्ञान आवश्यक है क्योंकि उनके लक्षण और उदाहरण गणों के आधार पर ही चलते हैं। गणों में लघु और गुरु के विचार का एक नियत क्रम रहता है और प्रत्येक गण में केवल तीन ही वर्ण होते हैं।

प्रश्न :25 गणों के कितने भेद होते हैं, उनके नाम व लक्षण बताइए?

उत्तर :– गणों के मुख्यत आठ भेद होते हैं–

क्र.सं.	**गणों के नाम**	**चिह्न**	**मात्राओं का क्रम**	**उदाहरण**
1	यगण	।SS	लघु , गुरू, गुरू	यमाता, यशोदा
2	मगण	SSS	गुरू, गुरू, गुरू	मातारा,अंबाला
3	तगण	SS।	गुरू,गुरू,लघु	ताराज,मैदान
4	रगण	S।S	गुरू, लघु ,गुरू	राजभ, कामना
5	जगण	।S।	लघु ,गुरू,लघु	जभान, खदान
6	भगण	S।।	गुरू, लघू, लघू	भानस, मानस
7	नगण	।।।	लघु ,लघु ,लघु ,	कमल, अमर
8	सगण	।।S	लघु ,लघु ,गुरू	सलगा, कमला

प्रश्न : 26. यति, गति और तुक किसे कहते हैं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :–**यति–** छन्द के प्रत्येक चरण में लय की रक्षा निमित्त उच्चारण का प्रवाह कुछ काल के लिए रुक जाता है। .. इसी विश्राम को 'यति' कहा जाता है।

गति– काव्य में केवल वर्णों, मात्राओं या गणों की निश्चित संख्या ही पर्याप्त नहीं है, उसके लिए 'गति' भी आवश्यक तत्व है। 'गति' का अर्थ 'प्रवाह' होता है।

तुक– पदांत में भिन्न–भिन्न चरणों में ध्वनि की समानता को ''तुक'' या 'अन्त्यानुप्रास' कहते हैं।

प्र.27 छन्द की परिभाषा बताइए।

उत्तर – जब किसी कविता को मात्राओं की संख्या में मात्राओं अथवा नियमित वर्णों के अनुसार लिखा जाता है तथा उसमें यथा स्थान विराम, यति तथा गति का पालन किया जाता है तो उसको छन्द कहते हैं।

प्र.28 छन्द के प्रमुख भेद कौन–कौन से माने जाते हैं?

उत्तर – छन्द के दो प्रमुख भेद माने जाते हैं –

1. मात्रिक छन्द 2. वर्णिक छन्द

प्र.29 मात्रिक छन्द किसे कहते हैं?

उत्तर – जिन छन्दों में केवल मात्राओं को विधान रहता है, मात्रिक छन्द कहलाते हैं।

प्र.30 वर्णिक छन्द किसे कहते हैं?

उत्तर– जिन छन्दों में केवल वर्णों की गणना की जाती है, वर्णिक छन्द कहलाते हैं।

काव्य–गुण

प्रश्न 1."होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन"-में काव्य-गुण कौन-सा है?

उत्तर:"होगी जय, होगी जय, हे पुरुषोत्तम नवीन में" ओज काव्य-गुण है।:

प्रश्न 2.काव्य-गुण किसको कहते हैं? काव्य-गुण कितने प्रकार के होते हैं?

उत्तर:काव्य की सरस पदावली में स्थित रहकर काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म को काव्यगुण कहते हैं। ये माधुर्य, प्रसाद तथा ओज नामक तीन प्रकार के होते हैं।

प्रश्न 3.माधुर्य गुण का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर:माधुर्य गुण का उदाहरण –

नील परिधान बीच सुकुमार।
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
खिला हो ज्यों बिजली का फल।
मेघ बन बीच गुलाबी रंग।

प्रश्न 4.ओज गुण का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर:ओज गुण का उदाहरण –

जब तक हैं लक्ष्मण महावाहिनी के नायक
मध्य मार्ग में अंगद, दक्षिण श्वेत सहायक।
मैं, भल्ल सैन्य है वाम पार्श्व में हनुमान।
नल् नील और छोटे कपिगण उनके प्रधान।

प्रश्न 5.प्रसाद गुण का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर:प्रसाद गुण का उदाहरण –

प्रजा मूल अन्न सब अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिवौ।
जज्ञन को मूल धन, धन मूल धर्म अरु
धर्म मूल गंगाजल बिन्दु पान करिबौ।

प्रश्न 6.माधुर्य गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए।

उत्तर:**परिभाषा** – जिससे चित्त आह्लाद से द्रवित हो जाय, उस काव्य गुण को माधुर्य कहते हैं।**उदाहरण** –

प्रीतम छवि नैनन बसी, परछबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि आपु पथिक फिरि जाय।

प्रश्न 7.प्रसाद गुण की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

उत्तर:**परिभाषा** – जिस रचना का अर्थ सुनते ही सुनने वाले की समझ में आ जाय वहाँ प्रसाद गुण होता है। जिस प्रकार सूखे ईंधन में अग्नि तुरन्त व्याप्त हो जाती है, उसी प्रकार चित्त में प्रसाद गुण शीघ्र व्याप्त हो जाता है।

उदाहरण –

इसमें मानव समता के दाने बोने हैं।
जिससे उगल सके फिर धूलि सुनहरी फसलें।
मानवता के जोवन श्रम से हँसे दिशाएँ।

प्रश्न 8.ओज गुण की परिभाषा लिखकर एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर:**परिभाषा** – जिस काव्य-रचना के पढ़ने अथवा सुनने से पाठक अथवा श्रोता का मन उत्साह से भर उठे, उसमें ओज नामक काव्य-गुण होता है।

उदाहरण –

यह पुण्य भूमि प्रसिद्ध है इसके निवासी आर्य हैं
विद्या, कला-कौशल सभी के जो प्रथम आचार्य हैं।
सन्तान उनकी आज यद्यपि हम अधोगति में पड़े।
पर चिहन अभी उच्चता के आज भी कुछ हैं खड़े।

प्रश्न 9.प्रसाद गुण किन-किन रसों में प्रयुक्त होता है? कोई एक उदाहरण दीजिए।

उत्तर:प्रसाद गुण सभी रसों में प्रयुक्त होता है किन्तु करुण रस, हास्य रस, शान्त रस तथा वात्सल्य रस में अधिक प्रयुक्त होता है।

उदाहरण –

जान्यो मनुज करि दनुज कानन दहन पावक हरि स्वयं ।
जेहि नमत शिव ब्रहमादि सुर पिय भजेहु नहिं करुनामयं ॥
आजन्म ते पर द्रोह रत पापौघमय तब तनु अयं ।
तुम्हहूँ दियो निज धाम राम नमामि ब्रहम निरामयं ॥

प्रश्न 10.प्रसाद गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर- **प्रसाद का शाब्दिकार्थ है -निर्मलता, प्रसन्नता।**

जिस काव्य को पढ़ने या सुनने से हृदय या मन खिल जाए , हृदयगत शांति का बोध हो, उसे प्रसाद गुण कहते हैं। इस गुण से युक्त काव्य सरल, सुबोध एवं सुग्राह्य होता है। जैसे अग्नि सूखे ईंधन में तत्काल व्याप्त हो जाती है, वैसे ही प्रसाद गुण युक्त रचना भी चित्त में तुरन्त समा जाती है।

यह सभी रसों में पाया जा सकता है।

हे प्रभो ज्ञान दाता !ज्ञान हमको दीजिए।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

प्रश्न 11.माधुर्य गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर **किसी काव्य को पढने या सुनने से हृदय में जहाँ मधुरता का संचार होता है, वहाँ माधुर्य गुण होता है। यह गुण विशेष रूप से श्रृंगार, शांत, एवं करुण रस में पाया जाता है।**

बसों मोरे नैनन में नंदलाल,
मोहिनी मूरत सांवरी सूरत नैना बने बिसाल।

प्रश्न 12.ओज गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - **ओज का शाब्दिक अर्थ है-तेज, प्रताप या दीप्ति ।**

जिस काव्य को पढने या सुनने से हृदय में ओज, उमंग और उत्साह का संचार होता है, उसे ओज गुण प्रधान काव्य कहा जाता हैं ।

बुंदेले हर बोलों के मुख से हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।

प्रश्न 13.प्रसाद गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ते ही अर्थ ग्रहण हो जाता है, वह प्रसाद गुण से युक्त मानी जाती है। अर्थात् जब बिना किसी विशेष प्रयास के काव्य का अर्थ स्वतः ही स्पष्ट हो जाता है, उसे प्रसाद गुण युक्त काव्य कहते है। 'स्वच्छता' एवं 'स्पष्टता' प्रसाद गुण की प्रमुख विशेषताएँ मानी जाती है।

नर हो न निराश करो मन को।
काम करो, कुछ काम करो।
जग में रहकर कुछ नाम करो।।

प्रश्न 14.ओज गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़ने से चित्त में जोश, वीरता, उल्लास आदि की भावना उत्पन्न हो जाती है, वह ओजगुणयुक्त काव्य रचना मानी जाती है।

देशभक्त वीरों मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।।

प्रश्न 15.माधुर्य गुण की परिभाषा एवं एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर - हृदय को आनन्द उल्लास से द्रवित करने वाली कोमल कांत पदावली से युक्त रचना माधुर्य गुण सम्पन्न होती है। अर्थात् ऐसी काव्य रचना जिसको पढ़कर चित्त में श्रृंगार, करुणा या शांति के भाव उत्पन्न होते हैं, वह माधुर्य गुणयुक्त रचना मानी जाती है।

मेरे तो गिरिधर गोपाल दूसरों न कोई
जाके सर पर मोर मुकुट मेरो पति सोई

प्रश्न–16 काव्य गुण कितने प्रकार के होते है? नाम लिखिए।

उत्तर– काव्य गुण तीन प्रकार के होते हैं–

1. माधुर्य गुण 2. प्रसाद गुण 3. ओज गुण

प्रश्न–17 काव्य गुण किसे कहते है? परिभाषा लिखिए।

उत्तर– काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्म को काव्य गुण कहते है।

अथवा

रस का उत्कर्ष करने वाली बातों को काव्य गुण कहते है।

प्रश्न–18 माधुर्य गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए ?

उत्तर– परिभाषा – माधुर्य का अर्थ है– मिठास। अन्तः करण को आनन्द –उल्लास से द्रवित करने वाली कोमल–मधुर वर्णों से युक्त रचना माधुर्य गुण से युक्त होती है।

उदाहरण–

1. मन्द–मन्द मुरली बजावत अधर धरे,
मन्द–मन्द निकस्यो मुकुन्द मधु–बन ते।
2. प्रीतम छवि नैनन बसी, परछवि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, आपु पथिक फिरि जाय।।

प्रश्न–19 प्रसाद गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए ?

उत्तर– परिभाषा– प्रसाद का अर्थ है–स्वच्छता या निर्मलता। जिस रचना का अर्थ सुनते ही सुनने वाले की समझ में आ जाए वहाँ प्रसाद गुण होता है।

उदाहरण–

1. देखि सुदामा का दीन दसा करुना करि कै करुनानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहिं, नैनन के जल सों पग धोये।।

2 प्रजा मूल अन्न सब अन्नन को मूल मेघ,
मेघन को मूल एक जज्ञ अनुसरिवौ ।
जज्ञन को मूल धन, धन मूल धर्म अरु,
धर्म मूल गंगाजल बिन्दु पान करिबौ।।

प्रश्न–20 ओज गुण की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए ?
उत्तर– परिभाषा– ओज का अर्थ है–तेजस्विता। जिस काव्य रचना के पढ़ने अथवा सुनने से पाठक अथवा श्रोता का मन उत्साह से भर उठे, उसमें ओज नामक काव्य गुण होता है।
उदाहरण–

1. बढ़ो, करो वीर! स्व–जाति का भला
   अपार दोनों विधि लाभ है हमें।
   किया स्व–कर्तव्य उबार जो लिया
   सु–कीर्ति पायी यदि भस्म हो गये।।
2. सांस चलती है किसकी
   कहता है कौन उँची छाती कर, मैं हूँ–
   मैं हूँ मेवाड़ मैं।

प्रश्न–21 माधुर्य गुण किन–किन रसों में प्रयुक्त होता हैं ?
उत्तर– माधुर्य गुण श्रृंगार रस, शान्त रस तथा करुण रस में प्रयुक्त होता है। वैसे आचार्यो ने माधुर्य गुण को सभी रसों के लिए उपयुक्त माना है।
प्रश्न–22 प्रसाद गुण किन–किन रसों में प्रयुक्त होता हैं ?
उत्तर– प्रसाद गुण सभी रसों में प्रयुक्त होता हैं किन्तु करुण रस, हास्य रस, शान्त रस तथा वात्सल्य रस में अधिक प्रयुक्त होता है।
प्रश्न–9 ओज गुण किन–किन रसों में प्रयुक्त होता हैं ?
उत्तर– ओज गुण वीर रस, वीभत्स रस तथा रौद्र रस में प्रयुक्त होता है।
प्रश्न–23 आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की क्या परिभाषा दी है?
उत्तर– आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की निम्न परिभाषा दी है–
वाक्यं रसात्मकं काव्यं।
प्रश्न–24 काव्य–गुण कितने हैं ? आचार्यों का इस विषय में क्या मत है?
उत्तर– 1. आचार्य दण्डी ने दस काव्य गुण बताये है।
2 आचार्य वामन ने बीस काव्य गुण माने है।
3 आचार्य मम्मट ने ओज, प्रसाद तथा माधुर्य नामक तीन काव्य गुण माने है।
प्रश्न–25 काव्य–गुण किसके धर्म कहे जाते है तथा क्यों ?
उत्तर– काव्य–गुण रस के धर्म कहे जाते है क्योकि ये सरस काव्य में रहकर काव्य की श्रीवृद्धि करते है। गुणों के कारण काव्य की सरसता बढ़ती है तथा श्रोता या पाठक आह्लादित हो उठता है।

प्रश्न–26 काव्य–गुणों से सम्बन्धित रीतियों तथा वृत्तियों के नाम लिखिए ?
उत्तर– 1 माधुर्य गुण – वैदर्भी रीति तथा उपनागरिका वृत्ति
2 प्रसाद गुण – पांचाली रीति तथा कोमल वृत्ति
3 ओज गुण – गौड़ी रीति तथा परुष वृत्ति

CEO BHINDER

काव्य गुण

प्र.1 प्रसाद गुण का एक उदाहरण लिखिए।

उत्तर –हे प्रभो आनन्द दाता ज्ञान हमको दीजिए
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए।

प्र.2 ''अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य–पंथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो''
इन पंक्तियों में कौनसा काव्य गुण है, कारण भी बताइए।

उत्तर –इन पंक्तियों में ओज गुण है क्योकि इन्हे पढ़ने पर जोश, उत्साह और ओज का भाव चित्त में उत्पन्न हो रहा है।

प्र.3 काव्य में गुणों की स्थिति के बारे में बताइए।

उत्तर –जिस प्रकार मनुष्य में शूरता, उदारता, करूणा, दया आदि गुण आत्मा के नित्य धर्म होते है और उसका उत्कर्ष करते है। उसी प्रकार काव्य की आत्मा **'रस'** का उत्कर्ष करने वाले धर्म काव्य गुण होते है जो रस के नित्य धर्म माने जाते है।

प्र.4 आचार्यो ने कितने काव्य गुण माने हैं?

उत्तर –आचार्य दण्डी ने दस, वामन ने बीस, आचार्य भरतमुनि, भामह, मम्मट एवं विश्वनाथ ने तीन–तीन काव्य गुण माने जाते है। परवर्ती आचार्यो ने भी तीन ही काव्य गुण स्वीकार किये है। आचार्य भोजराज ने सर्वाधिक 24–24 काव्य गुण माने है। लेकिन वर्तमान में तीन ही काव्य गुण मान्य है।

प्र.5 ''बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंहे करें, भौहनि हँसे, देन कहे नट जाय।।

उत्तर – माधुर्य गुण

प्र.6 ''विनती सुन लो हे भगवान
हम सब बालक है नादान''।
इन पंक्तियों में कौनसा काव्य गुण है।

उत्तर – प्रसाद गुण

प्र.7 ''कंकन किंकिन नूपुरधुनि सुनि।
कहत लखन सन राम हृदय गुनि''।।
इन पंक्तियों में कौनसा काव्य गुण है।

उत्तर – माधुर्य गुण

प्र.8 काव्य में आत्मतत्त्व के रूप में विद्यमान रस के नित्य धर्मो को क्या कहते है?

उत्तर – काव्य गुण

प्र.9 ''कहत ,नटत, रीझत, खिझत,मिलत,खिलत, लजियात।
भरे भौन में करत हैं, नैनन ही सो बात।।''
उक्त पंक्ति में कौनसा काव्य गुण है?

उत्तर माधुर्य गुण

CEO BHINDER

काव्य दोष

दोष शब्द का सामान्य अर्थ गलती, भूल, त्रुटि, रोग और हानि आदि है। काव्य में दूसरों को लेकर अनेक आचार्यों ने अलग-अलग परिभाषाएं दी हैं भरतमुनि ने दोषों की परिभाषा तो नहीं दी है परंतु गुण की परिभाषा में दोषों का विपर्यय या अभाव गुण बताया है।

इस प्रकार भरतमुनि की मान्यता के अनुसार काव्य में गुणों का अभाव दोष होता है

इसी प्रकार साहित्य दर्पण में आचार्य विश्वनाथ ने दोष उस तत्व को बताया है जो मुख्य अर्थ का अपकर्ष अर्थात् रस की हानि करता है।

काव्य में रस की हानि तीन प्रकार की होती है रस की अनुभूति(प्रतीति) में विलंब के द्वारा दूसरी रस के अवरोध द्वारा तीसरी रस अनुभूति में विघ्न के द्वारा।

आचार्य मम्मट- काव्यप्रकाश के रचयिता मम्मट ने दोष की परिभाषा सबसे स्पष्ट रूप में दी है-

काव्य दोष कितने प्रकार के होते हैं

काव्य दोषों की संख्या के विषय में आचार्य में मतभेद रहे हैं भरत मुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में दूसरों की संख्या 10 मानी है तथा आचार्य भामह ने दूसरों की संख्या 11 मानी है और दंडी ने काव्य दोष10 बताए हैं आचार्य मम्मट के समय दोषों की संख्या 60 से भी अधिक थी।

तथा आचार्य वामन ने काव्य दूसरों का वैज्ञानिक रूप से वर्गीकरण करते हुए 4 वर्ग बताए हैं-

1. **शब्दगत दोष**
2. **अर्थगत दोष**
3. **रसगत दोष**
4. **पदगत दोष**

आचार्य मम्मट ने भी दूसरों को 4 वर्गों में विभाजित किया है परंतु दोषों के नाम भिन्न बताये हैं-

1. **पदगत दोष**
2. **वाक्यगत दोष**
3. **अर्थगत दोष**
4. **रसगत दोष**

कुलपति मिश्र तथा चिंतामणि आदि रीतिकालीन आचार्य ने पद और वाक्य का समावेश शब्द में करते हुए दूसरों के 3 वर्ग स्वीकार किए हैं-

1. **शब्दगत दोष**
2. **अर्थगत दोष**
3. **रसगत दोष**

काव्य में दोषों का प्रभाव

काव्य में दोषों का प्रभाव- निश्चय ही दोष काव्य पर व्यापक प्रभाव डालते हैं इसी कारण आचार्य दंडी ने दोषों को त्याज्य माना है, क्योंकि इनसे काव्य में विकृतियां प्राप्त होती हैं। अग्नि पुराण के दोषों के कारण काव्य की हानि होती है। मम्मट ने दोषों के कारण मुख्य अर्थ रसायनुभूति में बाधा पडना स्वीकार किया है

रसवादी आचार्य विश्वनाथ भी दोषों को रसायनुभूति में बाधक मानते हैं रीतिकाल के प्रवर्तक आचार्य केशवदास ने तो दोषयुक्त काव्य को हेय अर्थात त्याज्य बताया है। डॉ. रामदास भारद्वाज दूसरों के कारण रसास्वादन में अवरोधन काव्य उत्कर्ष का नाश तथा काव्य स्वाद में विलंब स्वीकार करते है।

शब्द दोष

शब्द दोष के प्रकार

1.श्रुतिकटुत्व दोष

- **श्रुतिकटुत्व दोष-** इसका अर्थ है कानों को कटु लगने वाले कठोर वर्णों का प्रयोग। काव्य में करण कटु वर्णों के प्रयोग के कारण यह दोष उत्पन्न होता है करण कटु शब्द श्रंगार वात्सल्य आदि कोमल रसों में ही रस अनुभूति के लिए घातक होते हैं, वहीं दूसरी ओर वीर रस, रौद्र रस, वीभत्स रस और भयानक रस आदि में ये कर्णकटु शब्द उनके गुण बन जाते हैं।

जैसे- **कवि के कठिनतर कर्म की कहते नहीं हम धृष्टता।**

पर क्या न विषयोत्कृष्टता करती विचारोत्कृष्टता ।।

यहां कठिनता, धृष्टता, विषयोत्कृष्टता, विचारोत्कृष्टता जैसे शब्द कानों को कटु लगने वाले शब्द हैं इस कारण यह श्रुतिकटुत्व दोष को उत्पन्न करते हैं।

सब जात फटी दुख की दुपटी-कपटी न रहे जहां एक घटी।

निघटी रुचि मीच घटीहू घटी जगजीव जतीन की छूटी तटी।

अघ ओघ की बेड़ी कटी विकटी प्रगटी निकटी गुरु ज्ञान गटी।

चहुं ओरन नाचति मुक्ति नटी गुन घूरजटी वन पंचवटी।

इस उदाहरण में भी प्रकृति का वर्णन श्रंगार रस का विषय है परंतु इसमें श्रुति कर दो तवरण की बार-बार आवृत्ति से श्रुतिकटुत्व दोष आ गया है।

अन्य उदाहरण

कटर-कटर तण्डुल चबात हरि हंसि-हंसि के।

हियरा चटकात हरि रुकमिन महारानी के।।

यहां 'कटर-कटर' और 'हियरा चटकात' में **श्रुतिकटुत्व दोष** है।

2.च्युतसंस्कृति दोष

2- **च्युतसंस्कृति दोष-** संस्कृति शब्द का अर्थ है संस्कार और भाषा में संस्कार व्याकरण से आता है। जहां काव्य में भाषा अथवा व्याकरण के नियमों के विरुद्ध शब्द अथवा पदों का प्रयोग किया जाता है। वहां च्युत संस्कृति दोष होता है।

गत जब रजनी हो पूर्व संध्या बनी हो,

उडुगण क्षय भी हों दीखते भी कहीं हो।

मृदुल मधुर निद्रा चाहता चित्त मेरा,

तब पिक करती तू शब्द प्रारंभ 'तेरा'

यहां 'तेरा' शब्द अशुद्ध होने के कारण होने से **च्युतसंस्कृति दोष** है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण-

पुष्पों की लावण्यता देती है आनन्द।

इस उदाहरण में लवण शब्द से भाववाचक ष्यञ् प्रत्यय होने से लावण्य शब्द बनता है जिसका अर्थ है सुंदरता। इससे भाववाचक ता प्रत्यय करना व्याकरण के नियम के विरुद्ध होने से 'च्युतसंस्कृति दोष' है।

3.ग्रामत्व दोष- साहित्य में जहां ग्रामीण लोगों में प्रचलित गंवारू शब्दों का प्रयोग किया जाता है। वहां ग्रामत्व दोष होता है। काव्य से आनंद उठाने वाले लोग शिक्षित एवं सुसंस्कृत होते हैं गंवारु शब्दों का प्रयोग उन्हें अरुचिकर लगता है जैसे-

सृष्टि के आरंभ में मैंने उषा के गाल चूमे।

यहां 'गाल' शब्द गँवारू होने से **ग्रामत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण-

मूड पै मुकुट धरे सोहत हैं गोपाल।

यहॉ पर शीश के लिए 'मूड़' शब्द का प्रयोग गंवारू होने से **ग्रामत्व दोष** है।

4.क्लिष्टत्व दोष- क्लिष्टत्व शब्द का अर्थ है कठिन अथवा दुर्बोध होना । काव्य में जहां सरल एवं सुबोध शब्दों का प्रयोग ना करके कठिन और दुर्बोध शब्दों का प्रयोग किया जाता है वहां **क्लिष्टतत्व दोष** होता है।

कहत कत परदेशी की बात।

मन्दिर अरध अवधि हरि बदि गये हरि अहार चलि

नखत वेद ग्रह जोरि अरधकरि को बरजै हम खात।

"इस उदाहरण में 'मंदिर अरध' का आशय घर का आधा पाख या पक्ष अथवा भाग है, और और महीने का आधा भाग भी है इसी तरह 'हरि-अहार' का आशय सिंह का भोजन मांस अर्थात मास है। 27 नखत(नक्षत्र) 4 वेद, एवं 9 ग्रह को जोड़ने पर 40 होते हैं और 40 के आधे 20 होते हैं। बीस से आशय विष अर्थात जहर है इन शब्दों का अर्थ सहज सुबोध नहीं है और यह अर्थ बहुत मुश्किल से समझ में आता है इसीलिए यहां पर **क्लिष्टत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण-

मन्दोदरि पति को जो भ्राता तासु प्रिया नंहि आवति।

इसका आशय यह है- नींद नहीं आती है। इसके लिए मंदोदरी रावण की पत्नी। मंदोदरी का पति रावण। रावण का भ्राता कुंभकरण। कुंभकरण की प्रिया नींद, क्योंकि कुंभकरण 6 महीने सोता था और एक दिन जागता था। नींद के लिए मंदोदरि को भ्राता तासु प्रिया' का प्रयोग किया गया है इसका अर्थ बड़ी कठिनाई से तथा देर में समझ में आता है इसलिए यहां **क्लिष्टत्व दोष** है।

5.अप्रतीतत्व दोष- जो शब्द किसी अर्थ विशेष में कोर्स अथवा अन्य ग्रंथों में अथवा विषय में सुरक्षित है, सर लोक में उस अर्थ में उसका व्यवहार या प्रयोग न होता हो। लोक में प्रचलित अर्थ में किसी शब्द का प्रयोग काव्य में करना है अप्रतीतत्व दोष कहलाता है। जैसे-

विषमय यह गोदावरी अमृतन को फल देत।

केशव जीवन हार को दुख अशेष हरिलेत।।

इस उदाहरण में आचार्य केशवदास ने विष एवं जीवन शब्दों का प्रयोग जल के अर्थ में किया है कुश के अनुसार इन दोनों शब्दों का अर्थ जल होता है, परंतु लोक व्यवहार में यह शब्द इस अर्थ में प्राकृत नहीं है। इस लोक में विष का अर्थ जहर तथा जीवन का अर्थ जिंदगी के रूप में प्रचलित है इसीलिए इस उदाहरण में **अप्रतीतत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण-

मानिक के पीछे दौड़ दौड़ कर हम संसारी खिन्न।

आशय दलित योग से करके मुनिजन परम प्रसन्न।।

लोक व्यवहार में 'आशय' से शब्द का अर्थ 'तात्पर्य' होता है परंतु इस उदाहरण में 'आशय' शब्द का प्रयोग 'मन की चंचलता' के लिए हुआ है। 'आशय' शब्द का यह अर्थ केवल योग दर्शन में ही प्रचलित हुआ है। लोक व्यवहार में बिल्कुल नहीं इसीलिए इस उदाहरण में भी **अप्रतीतत्व दोष** है

6.न्यूनपदत्व दोष- काव्य में अपनी ओर से एक शब्द अथवा अधिक शब्दों का प्रयोग करके वांछित अर्थ को प्राप्त किया जाता हो वहां **न्यून पदत्व दोष** होता है या जहां काव्य में अपनी ओर से कोई एक शब्द जोड़कर ही किसी वाक्य या पद का पूर्ण अर्थ प्राप्त होता हो वहां **न्यून पद दोष** होता है।

जैसे- **आज आगमन से हुए धन्य हमारे भाग्य।**

इस पंक्ति का अर्थ है आज आपके आगमन से हमारे भाग्य धन्य हो गए हैं यहां आपके शब्द अपनी तरफ से जोड़कर वांछित अर्थ को प्राप्त किया गया है इसीलिए इसमें न्यून पद दोष है।

अन्य उदाहरण

कृपा दृष्टि करती सदा पतितों का उद्धार।

इसका वंचित अर्थ प्राप्त करने के लिए पाठकों को प्रभु या ईश्वर शब्द जोड़कर वांछित अर्थ को प्राप्त किया जाएगा अतः इसमें ईश्वर शब्द या प्रभु शब्द अपनी तरफ से जोड़ा गया है।

7.अधिक पदत्व दोष- काव्य में जहां एक या अधिक ऐसे शब्दों का प्रयोग हो जिन को निकाल देने पर अर्थ में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती अथवा अर्थ में कोई अंतर नहीं आता वहां **अधिक पद दोष** होता है।

"प्रथम पुत्र अर्जुन ने रण में किए पराजित शत्रु सभी"

इस पंक्ति में प्रथा पुत्र शब्द निकाल देने से अर्थ में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती इसीलिए यहां **अधिक पदत्व दोष** है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण

"लिपटे पुष्प पराग से सने कुसुम मकरंद"

इस पंक्ति में पुष्प और कुसुम शब्दों को निकाल देने से अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता क्योंकि पराग और मकरंद फूलों का ही होता है। पुष्प और कुसुम शब्दों फूलों के पर्यायवाची शब्द हैं।

8.अक्रमत्व दोष- जब काव्य में शब्दों का प्रयोग उचित क्रम से ना हो तो वहां **'अक्रमत्व दोष'** होता है।

जैसे- **अब तो मिलते नहीं वीर जन अर्जुन-भीम सामान के।**

यहां शब्दों का उचित क्रम 'अर्जुन भीम के समान' होना चाहिए परंतु इस पंक्ति में ऐसा नहीं है इसीलिए इस पंक्ति में **अक्रमत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण

थी करुणा प्रभु ने जब-जब की तभी पतित उद्धार हुआ।

यहां शब्दों का क्रम जब जब प्रभु ने करुणा की थी होना चाहिए था लेकिन ऐसा न होने के कारण इस पंक्ति में भी '**अक्रमत्व दोष**' है।

अर्थ दोष- श्रोता अथवा पाठक को काव्य का आनंद शब्दों का अर्थ समझने पर ही मिलता है। परंतु यहां श्रोता या पाठकों को अर्थ को समझने में कठिनाई पड़े वहां अर्थ दोष माना जाता है। प्रमुख अर्थ दोष निम्नलिखित हैं-

9.दुष्क्रमत्व दोष- जब काव्य में शब्दों का प्रयोग लोक अथवा शास्त्र में प्रसिद्ध क्रम के विरुद्ध किया जाता है वहां **दुष्क्रमत्व दोष** होता है।

मारुत नंदन मारुत को, मन को खगराज को वेग लजायो।

लुक और शास्त्र दोनों के अनुसार सबसे तीव्र वेग मन का है इसीलिए मनु को प्रथम स्थान पर रखना चाहिए था इस कारण यहां पर **दुष्क्रमत्व दोष** है।

अन्य उदाहरण

नृप मोको हय दीजिए अथ्वा मत्त गजेन्द्र।

इस उदाहरण में भी दुष्क्रमत्व दोष है क्योंकि हय(घोडा) की अपेक्षा गज अधिक मूल्यवान होता है जो व्यक्ति घोड़ा नहीं दे सकता वह गज अर्थात हाथी कैसे दे सकता है? यहां लोग प्रसिद्ध क्रम के अनुसार 'गजेंद्र' शब्द का प्रयोग 'हय' से पहले होना चाहिए। यह क्रम में ना होने के कारण **दुष्क्रमत्व दोष** है।

10.पुनरुक्ति काव्य दोष-जब काव्य में किसी शब्द अथवा बाग के द्वारा वांछित अर्थ की प्राप्ति हो जाती है। वही उसी अर्थ वाले शब्द अथवा वाक्य का पुनः प्रयोग करना **पुनरुक्ति दोष** होता है।

अर्थात एक ही अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द या वाक्य का दो या दो से अधिक बार प्रयोग करना **पुनरुक्ति** दोष कहलाता है। जैसे-

योद्धा रण में विजयी होते, वीर युद्ध में पाते जय।

इस उदाहरण में 'योद्धा रण में विजयी होते' से इच्छित अर्थ स्पष्ट हो रहा है। उसी को प्रकट करने के लिए 'वीर युद्ध में पाते जय' यह वाक्य का प्रयोग होने से **पुनरुक्ति** दोष है।

इसी प्रकार अन्य उदाहरण

मधुमेह वाक्य हृदय हर लेते,

मन को लूटें सरस वचन।

यहां पर भी 'मधुमय वाक्य हृदय हर लेते' काजू अर्थ है उसी अर्थ को प्रकट करने के लिए पुनः 'मन को लुटे सरस वचन' वाक्य का प्रयोग होने से **पुनरुक्ति दोष** है।

CBEO BHIND

पत्रकारीय लेखन

प्रश्न :–1 पत्रकार लेखन का जाना – पहचाना रुप कौन सा लेखन है ?
उत्तर :– समाचार लेखन पत्रकार लेखन का जाना–पहचाना रुप है।
प्रश्न :–2 पत्रकारीय लेखन के लिए सबसे पहले क्या समझना बहुत जरुरी है ?
उत्तरः– पत्रकारीय लेखन के लिए सबसे पहले यह समझना बहुत जरुरी है कि पत्रकारीय लेखन क्या है, समाज में उसकी भूमिका क्या है, और वह अपनी भूमिका को कैसे पूरा करता है।
प्रश्न :–3 पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?
उत्तर :– पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में निम्न अन्तर होते हैः–
पत्रकारीय लेखन :– इसमें तथ्य होते हैं, कल्पना नहीं। यह वास्तविकता और अपने पाठको की रुचियों और आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है।
साहित्यिक लेखन :– इसमें लेखक को सृजनात्मक लेखन में काफी छूट होती है।
प्रश्न :–4 पत्रकारीय साक्षातकार एवं सामान्य बातचीत में क्या अन्तर है ?
उत्तर :– पत्रकारीय साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से विषय विशेष पर तथ्य, उसकी राय और भावनाओं को जानने के लिए प्रश्न करता है जबकि आपसी बातचीत उद्देश्यहीन संवाद है जिसका कोई उद्देश्य और ढाँचा नहीं होता है।
प्रश्न :–5 फीचर और समाचार – लेखन में क्या अन्तर है ?
उत्तर :–1. समाचार– लेखन में तथ्यों पर आधारित विवरण होता है, फीचर लेखन में यह आवश्यक नहीं होता ।
2. समाचार–लेखन में सूचना देना आवश्यक होता है, फीचर लेखन में सूचना के साथ मनोरंजन भी जुड़ जाता है।
3. समाचार लेखन की भाषा सरल और जनता में प्रचलित होती है तथा भाषा शैली विवरणात्मक होती है। फीचर की भाषा तथा शैली साहित्यिक होती है।

पत्रकारीय लेखन

प्र.1 पत्रकारीय लेखन किसे कहते हैं?
उत्तर किसी अखबार या अन्य समाचार माध्यम में काम करने वाले पत्रकार अपने पाठकों दर्शकों या श्रौताओं तक सूचनाएँ पहुँचाने के लिए लेखन के विभिन्न स्वरूपों का प्रयोग करते हैं। इसी को पत्रकारीय लेखन कहते हैं।

प्र.2 उल्टा पिरामिड शैली की किन्हीं दो विशेषताओं को लिखिए।
उत्तर उल्टा पिरामिड शैली की दो विशेषाताएँ निम्नलिखित हैं –
1. सबसे पहले समाचार का सबसे महत्वपूर्ण तथ्य लिखा जाता है।
2. उसके बाद घटते क्रम में अन्य तथ्यों और सूचनाओं को लिखा जाता है।

प्र.3 समाचार लेखन के प्रकार कौन–कौन से हैं?
उत्तर छः ककार निम्नलिखित है–
(1) क्या (2) कौन (3) कहाँ (4) कब (5) कैसे (6) क्यों

प्र.4 छः ककार मुख्यतः किस पर आधारित होते हैं?
उत्तर छः ककारों में पहले चार ककार – क्यो, कौन, कब और कहाँ सूचनात्मक और तथ्यों पर आधारित होते हैं। अन्तिम दो ककार कैसे और क्यों–पहलू पर आधारित होते हैं।

प्र.5 पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं?
उत्तर पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं–
(1) पूर्णकालिक पत्रकार (2) अंशकालीन पत्रकार (3) फ्रीलांसर पत्रकार

प्र.6 फ्रीलांसर पत्रकार किसे कहते हैं?
उत्तर फ्रीलांसर पत्रकार किसी खास अखबार का वेतन भोगी कर्मचारी नहीं होता। वह किसी अखबार से जुड़ा न रहकर स्वतंत्र रूप से अनेक समाचार पत्रों के लिए लिखता रहकर स्वतंत्र रूप से अनेक समाचार पत्रों के लिए लिखता हैं तथा अपनी तयशुदा दरों से भुगतान लेता है।

प्र.7 इंट्रो से आप क्या समझते हैं?
उत्तर समाचार के मुखड़े को ही इंट्रो कहते हैं। समाचार की प्रथम दो या तीन पंक्तियाँ मुख्य रूप से क्या, कौन, कब और कहाँ नामक चार ककारों पर आधारित होती है। ये सभी चारों ककार सृजनात्मक एवं तथ्यों पर आधारित होते हैं।

GEOSHINDER

प्र.8 फीचर किसे कहते हैं तथा इसका उद्देश्य क्या हैं?

उत्तर फीचर एक सुव्यवस्थित, सृजनात्मक और आत्मनिष्ठ लेखन है जो सामाजिक विषयों से लेकर गम्भीर विषयों और मुद्दों पर भी लिखा जा सकता है। फीचर का उद्देश्य पाठकों को सूचना देने, शिक्षित करने के साथ मुख्य रूप से उनका मनोरंजन करना भी होता है।

प्र.9 फीचर लिखते समय किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?

उत्तर फीचर लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए–

1. फीचर को सजीव बनाने के लिए उसमें उस विषय से जुड़े लोगों यानी पात्रों की मौजूदगी जरूरी है।
2. पात्रों के माध्यम से उस विषय या कहानी के विभिन्न पहलुओं को सामने लाना चाहिए।
3. फीचर या कहानी को कहने का ढंग सजीव होना चाहिए जिससे पाठक महसूस करें कि वह खुद सब देख या सुन रहे हैं।
4. फीचर तथ्यों, सूचनाओं और विचारों पर आधारित होना चाहिए।
5. फीचर मनोरंजक होने के साथ सूचनापरक होना चाहिए।

प्र.10 अच्छा लेख लिखते समय ध्यान रखने योग्य कोई चार शर्ते लिखिए।

उत्तर

1. लेखक के विचार तथ्यों एवं सूचनाओं पर आधारित हों।
2. लेख लिखने के लिए विषय की पूरी जानकारी आवश्यक है।
3. किसी भी विषय पर लेख लिखने से पहले उसकी पृष्ठभूमि सामग्री जुटानी चाहिए।
4. लेख लिखने की शुरूआत ऐसे विषय से करनी चाहिए जिस पर अच्छी पकड़ और जानकारी हो।

प्र.11 विशेष रिपोर्ट क्या होती हैं?

उत्तर जब कोई रिपोर्ट (संवाददाता) किसी विशेष घटना, समस्या या मुद्दे से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्यों को इकट्ठा करके, उनके विश्लेषण के माध्यम से परिणाम प्रभाव और कारणों को स्पष्ट करता है तब उस लेखन को विशेष रिपोर्ट कहते है।

प्र.12 इनडेप्थ रिपोर्ट क्या हैं?

उत्तर इनडेप्थ रिपोर्ट में सार्वजनिक रूप से उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं और आँकड़ों की बहुत ही गहराई से छान बीन की जाती है। छानबीन के आधार पर किसी घटना समस्या अथवा मुद्दे से संबंधित अत्यंत महत्वपूर्ण बातों को सामने लाया जाता है।

प्र.13 संपादकीय लेखन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर संपादकीय पृष्ठ पर जो आलेख छपता है वह वास्तव में उस अखबार की अपनी आवाज माना जाता है। संपादकीय किसी घटना या समस्या के प्रति अपनी राय प्रकट करता है। संपादकीय लिखने का दायित्व पत्र के संपादक और उसके सहयोगियों का होता है। सम्पादकीय को सम्पादक का मत नहीं माना जाता बल्कि वह समाचार पत्र का विचार होता है।

प्र.14 स्तम्भ लेखन से क्या आशय है? इसका क्या महत्व हैं?

उत्तर विचारपरक लेखन का एक प्रमुख रूप स्तम्भ लेखन भी है। कुछ विशेष विषयों को लेकर कई लेखक प्रसिद्ध हो जाते है। उनकी एक खास लेखन शैली भी विकसित हो जाती है। अतः ऐसे लोकप्रिय लेखकों से अखबार में नियमित स्तम्भ लिखवाने की परम्परा है। स्तम्भ में लेखक अपने विचार स्वतन्त्र रूप से अभिव्यक्त कर सकता है। कुछ अखबार अपने स्तम्भ विशेष के कारण लोकप्रिय हो जाते है। कुछ लेखक अपने स्तम्भ के कारण लोकप्रिय हो जाते है।

प्र.15 अच्छे साक्षात्कार के लिए क्या गुण अपेक्षित हैं?

उत्तर एक अच्छे व सफल साक्षात्कार के लिए साक्षात्कारकर्ता को अपने साक्षात्कार के विषय और साक्षात्कार किए जाने वाले व्यक्ति के बारे में सम्यक और पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए। इसके साथ ही साक्षात्कार कर्ता को अपने उद्देश्य का भी भली भाँति ज्ञान होना चाहिए। उसे ऐसे प्रश्न पूछने चाहिए जो किसी अखबार के सामान्य पाठक के मन में होने सम्भावित हो।

प्रश्न :–1 पत्रकार लेखन का जाना – पहचाना रुप कौन सा लेखन है ?

उत्तर :– समाचार लेखन पत्रकार लेखन का जाना–पहचाना रुप है।

प्रश्न :–2 पत्रकारिय लेखन के लिए सबसे पहले क्या समझना बहुत जरुरी है ?

उत्तरः– पत्रकारिय लेखन के लिए सबसे पहले यह समझना बहुत जरुरी है कि पत्रकारिय लेखन क्या है, समाज में उसकी भूमिका क्या है, और वह अपनी भूमिका को कैसे पूरा करता है।

GURU BHINDER

प्रश्न :–3 पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में अन्तर स्पष्ट कीजिए ?
उत्तर :– पत्रकारीय लेखन एवं साहित्यिक लेखन में निम्न अन्तर होते है:–
पत्रकारीय लेखन :– इसमें तथ्य होते हैं, कल्पना नहीं। यह वास्तविकता और अपने पाठको की रुचियों और आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखकर किया जाने वाला लेखन है।
साहित्यिक लेखन :– इसमें लेखक को सृजनात्मक लेखन में काफी छूट होती है।
प्रश्न :–4 पत्रकारीय साक्षातकार एवं सामान्य बातचीत में क्या अन्तर है ?
उत्तर :– पत्रकारीय साक्षात्कार में एक पत्रकार किसी अन्य व्यक्ति से विषय विशेष पर तथ्य, उसकी राय और भावनाओं को जानने के लिए प्रश्न करता है जबकि आपसी बातचीत उद्देश्यहीन संवाद है जिसका कोई उद्देश्य और ढाँचा नहीं होता है।
प्रश्न :–5 फीचर और समाचार – लेखन में क्या अन्तर है ?
उत्तर :– 1. समाचार– लेखन में तथ्यों पर आधारित विवरण होता है, फीचर लेखन में यह आवश्यक नहीं होता ।
2. समाचार–लेखन में सूचना देना आवश्यक होता है, फीचर लेखन में सूचना के साथ मनोरंजन भी जुड़ जाता है।
3. समाचार लेखन की भाषा सरल और जनता में प्रचलित होती है तथा भाषा शैली विवरणात्मक होती है। फीचर की भाषा तथा शैली साहित्यिक होती है।

विशेष लेखन – स्वरूप और प्रकार

प्रश्न–1. विशेष लेखन से क्या तात्पर्य है ?
उत्तर– किसी खास विषय पर सामान्य लेखन से हटकर किया गया लेखन ही विशेष लेखन है। अधिकतर समाचार पत्रो, पत्रिकाओ, टी.वी. और रेडियो चैनलो में विशेष लेखन के लिए अलग डेस्क होता है।
प्रश्न–2. विशेष लेखन की भाषा शैली के दो महत्वपूर्ण बिन्दु लिखिए ?
उत्तर– विशेष लेखन की भाषा शैली के दो महत्वपूर्ण बिन्दु–
1. विशेष लेखन की भाषा सरल व समझ में आने वाली हो।
2. विशेष लेखन के अधिकांश विषय और क्षेत्र तकनीकी रूप से जटिल होते हैं। इस तकनीकी शब्दावली को भी सरल करके या प्रचलित शब्दों में ही लिखना चाहिए।
प्रश्न–3. समाचार–पत्रों में किन विषयों पर विशेष लेख लिखे जा रहे है ?
उत्तर– समाचार–पत्रों में खेल, कारोबार, सिनेमा, मनोरंजन, फैशन, स्वास्थ्य, विज्ञान, पर्यावरण, शिक्षा, रक्षा, विदेश नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे विषयों पर विशेष लेख लिखें जाते है।
प्रश्न–4. समाचार–पत्र की सबसे बड़ी विशेषता क्या है ?
उत्तर– एक समाचार–पत्र या पत्रिका तभी सम्पूर्ण लगती है जब उसमें विभिन्न विषयो और क्षैत्रों, घटित घटनाओं, समस्याओं और मुद्दों आदि के बारे में नियमित रूप से जानकारी दी जाए।
प्रश्न–5. विशेष लेखन की जरूरत किन क्षेत्रों में अधिक पड़ती है ?
उत्तर– तकनीकी रूप से जटिल क्षैत्र और उनसे जुड़ी घटनाओं और मुद्दों को समझाने के लिए विशेष लेखन की जरूरत पड़ती है।
प्रश्न–6. खेल कैसा क्षेत्र हैं ?
उत्तर– खेल एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें अधिकांश लोगो की रुचि होती है। प्रत्येक व्यक्ति अच्छा खिलाड़ी नही होता परन्तु किसी खेल आयोजन का देखकर लोगो को ऊर्जा मिलती है तथा उनकी सोई हुई रुचि जाग जाती है।

CBEO BHINDER

प्रश्न–7. किसी भी लेखन को विशिष्टता प्रदान करने वाली बातें कौन–सी हैं ?
उत्तर– जब कोई लेखक किसी विशेष विषय पर लिखता है तो उसे दो बातों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है कि उसकी बात पाठक की समझ में आ रही है या नहीं। उसके लिखे तथ्य और तर्क में एकरूपता है या नहीं।

प्रश्न–8. मीडिया की भाषा में विशेष लेखन क्या कहलाता हैं ?
उत्तर– विषय विशेष में लेखन का दायित्व सौंपा जाता है। मीडिया की भाषा में विशेष लेखन को बीट कहा जाता है।

प्रश्न–9. बीट रिपोर्टिंग हेतु दो आवश्यक बातें बताइये ?
उत्तर– बीट रिपोर्टिंग हेतु दो आवश्यक बातें –
(1) बीट रिपोर्टर को प्रायः अपनी बीट से जुड़ी सामान्य खबरें ही लिखनी होती हैं।
(2) बीट के बारे में जानकारी और दिलचस्पी होनी चाहिए।

प्रश्न–10. कोई भी समाचार पत्र या पत्रिका कब संपूर्ण लगती है ?
उत्तर– जब समाचार पत्र या पत्रिका में विभिन्न विषयों और क्षेत्रों में घटने वाली घटनाओ, समस्याओं और मुद्दों के बारे में नियमित जानकारी हो।

प्रश्न–11. विशेषीकृत रिपोर्टिंग के लिए क्या आवश्यक हैं ?
उत्तर– (1) सम्बंधित विषय की गहरी जानकारी होना।
(2) रिपोर्टिंग से सम्बंधित भाषा और शैली पर पूरा अधिकार होना।

प्रश्न–12. पत्र–पत्रिकाओं में खेलो के बारे में लिखने वालो के लिए क्या आवश्यक है ?
उत्तर– पत्र–पत्रिकाओं में खेलो के बारे में लिखने वालो के लिए यह आवश्यक है कि वे खेल की तकनीकियों को, उसके नियमों को, उसकी बारीकियो को तथा उससे संबंधित सभी बातों को भली–भांति जानतें हों।

प्रश्न–13. विशेष रिपोर्ट कितने प्रकार की होती है ? संक्षेप में लिखिए।
उत्तर– विशेष रिपोर्ट अनेक प्रकार की होती है, जैसे– खोजी रिपोर्ट, इन डैप्थ रिपोर्ट, विश्लेषणात्मक रिपोर्ट और विवरणात्मक रिपोर्ट।

प्रश्न–14. 'इन डैप्थ रिपोर्ट' में क्या होता है ?
उत्तर– किसी सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्य को, उससे सम्बंधित आंकडों, घटनाओं आदि की गहराई से जांच पड़ताल के बाद सामने लाने का काम 'इन डैप्थ रिपोर्ट' करती है।

प्रश्न–15. अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं में किसी विशेष विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले पत्रकार कैसे होते है ?
उत्तर– अखबारों और पत्र–पत्रिकाओं में किसी विशेष विषय पर लेख या स्तंभ लिखने वाले पत्रकार पेशेवर न होकर उस विषय के विशेषज्ञ होते हैं।

CBEO BHINDER

कविता, कहानी व नाटक

प्रश्न 1 कविता क्या है ?
उत्तर : कविता हमारी संवेदनाओं के बहुत निकट होती है व हमारे मन को छू लेती है एवं कभी कभी वह हमें झकझोर देती है। कविता के मूल में संवेदना है, राग तत्व है व संवेदना सम्पूर्ण सृष्टि से जुड़ने व अपना बना लेने का बोध है।
प्रश्न 2 एक अच्छी कविता की संरचना किस प्रकार होती है ?
उत्तर : कविता की संरचना के लिए आवश्यक है वैयक्तिक सोच, दृष्टि और दुनिया को देखने का उसका अपना नजरिया।
प्रश्न 3 कविता लेखन एक कला है। कैसे ?
उत्तर : कविता लेखन एक ऐसी कला है जिसमे किसी बाह्य उपकरण की मदद नहीं ली जा सकती है। कविता कवि के आंतरिक भावो की वह अभिव्यक्ति है जिसे वह शब्दों में पिरोता है। कविता में शब्दों की तुकबंदी, रिदम, लय और व्यवस्था को पूरा ध्यान में रखकर कविता की रचना की जाती है।

प्रश्न 4 कविता के प्रमुख घटकों को संक्षेप में बताइये।
उत्तर : 1 -कविता में भाषा का पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है।

2 -कविता की संरचना ऐसी हो जो पाठक को नई लगे।

3 -कविता में बिम्ब और छंदों की बुनयादी जानकारी होनी चाहिये।

4 -कविता का स्वरूप समय के साथ बदलता रहता है अतः उस समय की प्रचलित प्रवृतियों को ज्ञान हो।

5 -कम से कम शब्दों में अपनी बात कह देना।

6 -कविता रचने के लिए नवीन दृष्टिकोण होना भी जरुरी है।

प्रश्न 5 कविता कोने में घात लगाए बैठी है, यह हमारे जीवन में किसी भी क्षण बसंत की तरह आ सकती हैं। इन पंक्तियों से क्या तात्पर्य हैं ?
उत्तर : ये पंक्तियाँ जार्जलुईस बोर्गेस की है। उनका मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति के मन में रचना करने की प्रवृति होती है एवं प्रत्येक व्यक्ति के मन में भाव होते हैं जो किसी भी समय शब्दों के रूप में फुटकर कविता की रचना कर सकते हैं। उनका कोई निश्चित समय नहीं होता, निश्चित काल नहीं होता है। कभी भी वे मानव मन से स्फुटित हो सकती हैं।
प्रश्न 6 नाटक साहित्य की अन्य विधाओ से अलग है। कैसे ? स्पष्ट करे।
उत्तर : क्योकि जहाँ साहित्य की अन्य विधाएँ अपने लिखित रूप में एक निश्चित ओर अंतिम रूप को प्राप्त कर लेती है वही नाटक अपने लिखित रूप में सिर्फ एक आयामी ही होता है जब उस नाटक का मंचन होता है तब वह पूर्ण रूप प्राप्त करता है। जहाँ साहित्य की दूसरी विधाएँ पढ़ने या सुनने तक सीमित होती है वहीँ नाटक पढने सुनने के साथ देखा भी जाता है।
प्रश्न 7 नाटक में भाषा किस प्रकार की होनी चाहिए ?
उत्तर : नाटक में भाषा सहज, स्वाभाविक, प्रसंग के अनुकूल होनी चाहिए। नाटक में काल, समय, परिवेश के अनुरूप भाषा का प्रयोग करना चाहिए व ध्यान रखना चाहिए कि भाषा क्लिष्ट न हो। नाटक का मंचन सदैव वर्तमान काल में ही होता है।
प्रश्न 8 'समय का बन्धन' नाटक की एक मूल विशेषता है समझाइए।
उत्तर : समय का बंधन एक अच्छे नाटक के लिए आवश्यक तत्व है, नाटक लिखते समय नाटककार को नाटक की मूल विशेषताओं को सदैव याद रखना होता है। वह है समय का बन्धन, एक नाटक को शुरू से अन्त तक तय समय सीमा के भीतर पूरा होना होता है। एक नाटक में यदि समय सीमा का ध्यान नहीं रखा गया तो वह बहुत छोटा या बहुत बड़ा बन जायेगा। नाटक के प्रत्येक अंक की अवधि कम से कम 48 मिनट होनी चाहिए।
प्रश्न 9 कहानी क्या है ?
उत्तर : साधारण भाषा में हम कह सकते है कि किसी घटना, पात्र या समस्या का क्रमबध्द ब्यौरा जिसमे परिवेश हो, कथा का क्रमिक विकास हो, चरम उत्कर्ष का बिंदु हो उसे कहानी कहा जाता है।
प्रश्न 10 नई कहानी किसे कहा गया है ?
उत्तर : मार्कण्डेय के अनुसार "नई कहानी का अर्थ उन कहानियो से है जो सच्चे अर्थो में कलात्मक निर्माण है, जो जीवन के लिए उपयोगी है।
प्रश्न 11 हिंदी कहानी के आरंभिक लेखक कौन कौन थे ?
उत्तर : किशोरी लाल गोस्वामी, माधव प्रसाद मिश्र, बंग महिला, राम चन्द्र शुक्ल, जय शंकर प्रसाद, वंदावन लाल वर्मा आदि।

CBSEBHINDER

प्रश्न 12 हिन्दी कहानी का जन्म कब हुआ ?
उत्तर : हिन्दी कहानी का जन्म 1900 के आस पास हुआ और 1918 तक वह पुर्णतः प्रतिष्ठित हो गई।
प्रश्न 13 कहानियां किन किन विषयों पर लिखी जा सकती है ?
उत्तर : कहानियां लिखने के अनेक विषय है जिन पर लेखक कहानी लिख सकता है ये वास्तविक घटनाए या किस्से भी हो सकते है और काल्पनिक घटनाएँ भी हो सकती हैं जिसका हमारे वास्तविक जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। सामान्यतः कहानी किसी घटना, युद्ध, प्रतिशोध के किस्से अथवा पौराणिक और ऐतिहासिक घटनाएँ भी हो सकती हैं।
प्रश्न 14 लेखक कहानी का उद्धेश्य किस प्रकार निर्धारित करता है ?
उत्तर : लेखक को एक समस्या की जानकारी का सूत्र मिलने पर लेखक का ध्यान उसके पात्र, परिवेश, व्यवस्थाओं पर केन्द्रित हो जाता है। तत्पश्चात वह सोचता है कि कहानी उसे समस्या ग्रस्त पर लिखनी है, परिवेश पर लिखनी हैं या व्यवस्था पर लिखनी है। इस प्रकार कहानीकार कहानी का उद्देश्य तय करता है।
प्रश्न 15 कहानी को किस प्रकार प्रामाणिक बनाया जाता है ?
उत्तर : कहानी को प्रमाणिक बनाने के लिए कहानीकार को समसामयिक समस्या, जानकारी व घटना का चयन करना होता है तथा चयनित घटना को रोचक बनाने के लिए घटना से संबंधित उपघटनाएँ, चरित्र व पात्र, परिवेश का विकास करना होता है। जैसे 'बूढी काकी' कहानी में गाँव का परिवेश लेना होगा, बूढी औरत का किरदार होगा। इसमें कहानी अपनी प्रमाणिकता सिद्ध करती है।

कविता

प्र.1 निम्न मे ं से नई कविता की विशेषता हैं –

(अ) जीवन के प्रति आस्था

(ब) अनुभूति की सच्चाई

(स) लाके –सम्पृक्ति

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.2 सन् 1960 के बाद की कविता को किस नाम से जाना जाता हैं?

(अ) प्रगतिवादी

(ब) छायावादी

(स) प्रयोगवादी

(द) समकालीन कविता/साठोतरी कविता

प्र.3 नई कविता की आरम्भिक अवस्था को किस नाम से जाना जाता हैं?

(अ) प्रयोगवाद

(ब) छायावाद

(स) रीतिकाल

(द) कोई नही (अ)

प्र.4 नई कविता के प्रमुख कवि कौन हैं?

(अ) सच्चिदानन्द हिरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय

(ब) गिरिजा कुमार माथुर

(स) गजानन माधव मुक्ति बोध

CBEO BHINDER

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.5 नई कविता की प्रमुख विशेषता क्या हैं?

(अ) नई कविता में नवीनता

(ब) बौद्धिकता

(स) आधुनिक युग बोध

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.1 कविता किसे कहते हैं?

उत्तर कविता भावो या संवेदनाओ ं की भाषिक अभिव्यक्ति है जिससे शब्दो के साथ–साथ आंतरिक लय विद्यमान होती है।

प्र.2 कविता के प्रमुख तत्व लिखिए।

उत्तर 1. भाव या संवेदना 2. रस 3. छंद 4. भाषा 5. शब्द 6. बिंब 7. अलकं ार 8. कल्पना इसके प्रमुख तत्व है।

प्र.3 कविता का महत्व लिखिए।

उत्तर कविता का महत्व (1) अधिक असरदार एव ं प्रभावोत्पादक (2) अधिक समय तक याद रहने वाली

(3) मनोरंजक गीत, गज़ल, फिल्मी धुन, नज़्म, शेर आदि कविता के ही रूप है।

प्र.4 नई कविता का प्रारम्भ कब हुआ?
उत्तर नई कविता का प्रारम्भ 1953 मे ं हुआ।
प्र.5 नई कविता (पत्रिका) का प्रकाश किसके द्वारा हुआ?
उत्तर नई कविता पत्रिका का प्रकाशन :– धर्मवीर भारती, डॉ. रघुवश, ब्रजेश्वर वर्मा विजयदेव नारायण साही के द्वारा हआु।

नाटक

प्र.1 नाटक का दुसरा अगं क्या हैं?

(अ) भाषा

(ब) शब्द

(स) व्याकरण

(द) मोखिक (ब)

प्र.2 नाटक का सबसे जरूरी और सशक्त माध्यम हैं?

(अ) संवाद

(ब) लखे ान

(स) सम्पादक

(द) उपर्युक्त मे ं से कोई नही (अ)

CBEO BHINDER

प्र.3 नाटक मे ं भाषा किस प्रकार की होनी चाहिए?

(अ) सहज

(ब) स्वाभाविक

(स) प्रसंग के अनुकूल

(द) उपर्युक्त (द)

प्र.4 नाटक की मलू विशेषता क्या हैं?

(अ) समय का बन्धन

(ब) समय का उपयोग

(स) समय का सदुपयोग

(द) उपर्युक्त मे ं से कोई नही (अ)

प्र.5 हिन्दी नाटको ं का आरम्भ किस युग से माना जाता हैं?

(अ) भारतेन्दु युग

(ब) तुलसीदास युग

(स) केशवदास युग

(द) जयशंकर प्रसाद युग (अ)

प्र.1 नाटक क्या हैं?

उत्तर जिस काव्य या कथा को अभिनय के साथ मंच पर देख व सुन सके ं और जिसे पढ़ा भी जा सकता है नाटक कहलाता है।

प्र.2 नाटक के प्रमुख तत्व कौन–कोनसे हैं?
उत्तर 1. अभिनय 2. कथानक 3. संवाद 4. अभिनेता 5. देशकाल वातावरण
6. पात्र का चरित्र चित्रण 7. उद्दे श्य
प्र.3 भौतिक नाटक की शुरूआत सर्वप्रथम किसने की थी?
उत्तर नाटक की शुरूआत सर्वप्रथम नहषु (गोपाल चन्द्र गिरिधरदास) है।
प्र.4 नाटक की शुरूआत किस सन् में हुई थी?
उत्तर नाटक की शुरूआत 1339 सन् में हुई थी।
प्र.5 नाटक और कहानी में अतंर लिखिए।
उत्तर

कहानी – कहानी को पाठक पढक़ र आनन्द लते ा है। कहानी का आकार छोटा होता है।	नाटक – नाटक अभिनय के द्वार प्रस्तुत होता ह ै। नाटक का आकार बड़ा होता है।

CBEO BHINDER

विशेष **लेखन**

प्र.1 विशेष लखेन की भाषा शेली कैसी होनी चाहिए?

(अ) सरल

(ब) संवादपूर्ण

(स) सहज

(द) भावपूर्ण (अ)

प्र.2 विशेष लखेन के क्षेत्र कौन–कौनसे हैं?

(अ) खेल

(ब) कारोबार

(स) पर्यावरण

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.3 विशेष लखेन के अन्तर्गत कोनसे लेखन आते हैं?

(अ) रिपोटिंग

(ब) फीचर

(स) टिप्पणी

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.4 विशेष लखेन हेतु सुचनाओ के प्रमुख स्त्रोत निम्न हैं?

(अ) मंत्रालय के सूत्र

(ब) प्रेस काफ्रेंस और विज्ञप्तियाँ

(स) साक्षात्कार

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.5 समाचार लेखन मे ं कितने ककार होते हैं?

(अ) 5

(ब) 6

(स) 7

(द) 8 (ब)

प्र.1 लेखन क्या हैं?

उत्तर लेखन का शाब्दिक अर्थ है– लिखना। भाषायी कोशल मुबोपलि का चोथा क्रम लिखना है। ''जो कुद भी हम बोलते है।

CBEO BHINDER

प्र.2 शुद्ध लेखन के कौन – कौन से तत्व है? उनके नाम लिखिए। शुद्ध लेखन के तत्व

(1) अक्षर की बनावट
(2) शिरो रेखाएं लगाना
(3) अक्षर लिखने की गति
(4) लिखने मे ं स्वच्छता
(4) लिखने मे ं स्पष्टता।

प्र.3 लेखन का महत्व लिखिए।

उत्तर (1) लखेन से बच्चो ं मे ं बोद्धिक विकास होता हैं। (2) लखेन से बच्चो ं के शब्द भण्डार मे ं वृद्धि होती हैं। (3) लखेन से बच्चो की भाषा में एकरूपता आती हैं। (4) लखेन से बच्चो ं की अक्षर बनावट मे ं सुधार होता है, जिससे बच्चे सुन्दर इस्तलिपि मे ं लिखना सीख जाते हैं।

प्र.4 लेखन की विशेषताएं लिखिए।

उत्तर (1) लखेन एक महत्वपूर्ण कोशल हो। (2) यह एक प्रक्रिया भी है और परिणाम भी हो। (3) साथ ही साथ यह विचार स्पष्टीकरण की प्राविधि भी है। (4) चार भाग कोशलो में इसे जटिल प्रक्रिया और उच्चतर स्तर की क्षमता कहा जा सकता ह।

प्र.5 लेखन के प्रकार कौन – कौनसे हैं?

उत्तर (1) वर्णनात्मक लखेन
(2) विवरणात्मक लखेन
(3) न्यायिक लखेन (4) कथा लखेन

कहानी

प्र.1 हिन्दी कहानी का जन्म कब हुआ?

(अ) 1900

(ब) 1924

(स) 1920

(द) 1940 (अ)

प्र.2 हिन्दी कहानी का विकास किस युग मे ं हुआ?

(अ) वृन्दावन युग

(ब) द्विवेदी युग

(स) रामचन्द्र युग

(द) किशोरी युग (ब)

प्र.3 हिन्दी कहानी के विकास का प्रकाशन कौनसी पत्रिका मे ं हुआ?

(अ) सरस्वती पत्रिका

(ब) परमेश्वर पत्रिका

(स) ईश्वरीय पत्रिका

(द) दुर्गा पत्रिका (अ)

CBEO BHINDER

प्र.4 हिन्दी कहानी मे ं सरस्वती पत्रिका का सम्पादन किसने किया।

(अ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

(ब) महादेवी वर्मा

(स) सुर्यकांत त्रिपाठी निराला

(द) जयशंकर प्रसाद (अ)

प्र.5 कहानी कहने या लिखने के लिए मनुष्य मे ं क्या मूल भाव होता है?

(अ) प्रत्येक मनुष्य मे ं अपने अनुभव बांटने

(ब) दुसरे के अनुभवो ं को जानने की प्राकृतिक इच्छा

(स) हम सब अपनी बाते ं किसी को सुनाना

(द) उपर्युक्त सभी (द)

प्र.1 कहानी की परिभाषा लिखिए?

उत्तर कहानी वह साहित्यक गध विधा है जिसमे ं जीवन के किसी एक पक्ष का मिश्रित मार्मिक एवं रोचक चित्रण हाता ह ै।

प्र.2 कहानी का अर्थ बताइए। उत्तर कहानी का शाब्दिक अर्थ ''कथा'' होता ह ै। इसे हिन्दी में ''लघु कथा'' कहा जाता है और अंग्रेजी मे ं शॉर्ट स्टोरी कहा जाता है।

प्र.3 कहानी के तत्व लिखिए? उत्तर कहानी के निम्न तत्व –

(1) कथावस्तु (2) पात्र एवं चरित्र चित्रण (3) कथोपकथन (4) भाषा शैली (5) देशकाल वातावरण (6) उद्देश्य

प्र.4 प्रथम कहानी लेखिका कौन थी?

उत्तर लेखिका – बंग महिला (राजेन्द्र वाला घोष) थी।

प्र.5 कहानी के गुण बताइए।

उत्तर गुण :– 1. वास्तविका भरपूर हो।

2- वार्तालाप और संवाद दोनो सही हो।

3- सरल वाक्य और सरल शब्द हो।

4- चरित्र निर्माण मे ं सहायक हो।

CBEO BHINDER

स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत

अथवा

स्वच्छ भारत अभियान

प्रस्तावना

भारत देश किसी जमाने में सोने की चिड़िया कहा जाता था अपने वैभव और संस्कृति के लिए जाना जाता था। लेकिन समय के बदलाव के चलते हमारे देश पर कई बाहरी ताकतों ने राज कियाए जिससे हमारी देश की हालत खराब हो गई।

हमारे देश में स्वच्छता पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जाता है। आपने देखा होगा कि हमारे देश का कोई भी बड़ा राज्य हो या शहर हो या फिर गांव हो या फिर कोई गली या मोहल्ला हो वहां पर भी आपको कूड़ा करकट मिलेगा।

हमारे देश के विकास में बाधा पहुंचाने वाली समस्याओं में एक मुख्य कारण गंदगी है क्योंकि इसके कारण लोग हमारे देश में आना पसंद नहीं करते हैं और जिससे हमारे देश को इतनी ख्याति नहीं मिलती है। हमारा देश भी पूर्णतया स्वच्छ होए इसके लिए कई महापुरुषों ने सपने देखे थे और उन्हें साकार करने की भी कोशिश की थी लेकिन वह किसी कारण सफल नहीं हो पाए।

आज भी हमारे देश के कुछ ही घरों में शौचालय की सुविधा हैए गाँवो में तो लोग आज भी शौच करने बाहर ही जाते हैंए जिसके कारण गाँवो में गंदगी फैल जाती है और शहरों की बात करें तो शहरों में शौचालय तो है लेकिन वहां पर अन्य गंदगी बहुत ज्यादा हैए जैसे कि फैक्ट्रियों का अपशिष्ट कूड़ा.करकटए गंदे नाले और घरेलू अपशिष्ट जो सड़कों पर इतनी ज्यादा मात्रा में पाया जाता है कि हमारे देश की सड़कें दिखाई ही नहीं देती सिर्फ और सिर्फ कूड़ा.करकट दिखाई देता है।

स्वच्छ भारत अभियान का परिचय

हमारे देश को स्वच्छ बनाने के लिए भारत सरकार ने एक नई योजना निकाली हैए जिसका नाम ष्स्वच्छ भारत अभियानष रखा गया है। इस अभियान के तहत सभी देशवासियों को इसमें शामिल होने के लिए कहा गया है। यह अभियान आधिकारिक रूप से 1999 से चला रहा है पहले इसका नाम ग्रामीण स्वच्छता अभियान थाए लेकिन 1 अप्रैल 2012 को प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने इस योजना में बदलाव करते हुए इस योजना का नाम निर्मल भारत अभियान रख दिया और बाद में सरकार ने इसका पुनर्गठन करते हुए इसका नाम पूर्ण स्वच्छता अभियान कर दिया था। स्वच्छ भारत अभियान के रूप में 24 सितंबर 2014 को केंद्रीय मंत्रिमंडल से इस को मंजूरी मिल गई।

स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत

स्वच्छ भारत अभियान का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गाँधी जी की 145 वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर 2014 को किया। उन्होंने राजपथ पर जनसमूहों को संबोधित करते हुए राष्ट्रवादियों से स्वच्छ भारत अभियान में भाग लेने और इसे सफल बनाने को कहा। साफ.सफाई के संदर्भ में यह सबसे बड़ा अभियान है। क्योंकि गाँधी जी का सपना था कि हमारा देश भी विदेशों की तरह पूर्ण स्वस्थ और निर्मल दिखाई दे। इस बात को मध्य नजर रखते हुए प्रधानमंत्री जी ने उन्हीं के जन्मदिवस पर इस अभियान की शुरुआत दिल्ली के राजघाट से की थी।

CBEO BINDER

देश की सफाई एकमात्र सफाई.कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है।

क्या इस में नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है।हमें इस मानसिकता को बदलना होगा।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए दिल्ली कि वाल्मीकि बस्ती में सड़कों पर झाड़ू लगाई थी। जिससे देश के लोगों में यह जागरुकता आए कि अगर हमारे देश का प्रधानमंत्री देश को स्वच्छ करने के लिए सड़क पर झाड़ू लगा सकता हैए तो हमें भी अपने देश को स्वच्छ रखने के लिए अपने आसपास सफाई रखनी होगी।

स्वच्छ भारत अभियान का कारण या इसकी आवश्यकता

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। भौतिकए मानसिकए सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरु किया जा सकता है। यहाँ कुछ बिंदु दिए जा रहे हैं जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को दिखाते हैं–

1हमारे देश में कोई भी ऐसी जगह नहीं है जहां पर कूड़ा करकट नहीं फैला हो। हमारे भारत देश के हर शहरए हर गांव हर एक मोहल्लाए हर एक गली कूड़े.करकट और गंदगी से भरी पड़ी है।

2 हमारे देश के गाँवो में शौचालय नहीं होने के कारण के लोग आज भी खुले में शौच करने जाते हैं जिसके कारण हर जगह गंदगी फैलती है और यह गंदगी नई बीमारियों को आमंत्रण देती है।

3हमारे आसपास के सभी नदी.नाले भी कचरे से इस तरह से रहते हैं जैसे कि पानी की जगह कचरा बह रहा हो।

4 इस कूड़ा करकट और गंदगी के कारण विदेश से लोग हमारे देश में आना कम ही पसंद करते हैंए जिसके कारण हमारे देश को आर्थिक नुकसान होता है।

5इस कचरे के कारण हमारे साथ.साथ अन्य जीव जंतुओं को भी नुकसान होता है और साथ ही हमारी पृथ्वी भी

प्रदूषित होती है।

6ये बेहद जरुरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो साथ ही खुले में शौच की प्रवृति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।

7नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमालए सुरक्षित समापनए वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।

8 ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में वैश्विक जागरुकता का निर्माण करने के लिये और सामान्य लोगों को स्वास्थ्य से जोड़ने के लिये।

9पूरे भारत में साफ.सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।

10 भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।

11 ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।

12 स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों को निरंतर साफ.सफाई के प्रति जागरुक करना।

इस गंदगी और कूड़े.करकट के जिम्मेदार भी हम और आप ही हैंए क्योंकि हम लोग भी कभी जानबूझकर और कभी अनजाने में कहीं भी कचरा फेंक देते हैं। जिसके कारण हमारे देश में हर तरफ कचरा फैल जाता है और इसके साथ ही हमारा पूरा वातावरण प्रदूषित हो जाता है। यह गंदगी और कूड़ा.करकट दिन.ब.दिन बढ़ते ही जा रहे है। जिसके कारण

CBEO BHINDER

अनेकों परेशानियां खड़ी हो रही हैंए इसलिए स्वच्छ भारत अभियान की जरूरत पड़ी जिसके तहत हमारा पूरा भारत स्वच्छ और साफ दिखाई दें।

देश को स्वच्छ रखने के उपाय

हमारे भारत देश को स्वच्छ और साफ सुथरा रखने के लिए हमें आज ही अपने से शुरुआत करनी होगी क्योंकि जब तक लोग खुद जागरुक नहीं होंगे तब तक हमारे देश में साफ सफाई का होना नामुमकिन है।

;1हमें देश के हर घर में शौचालय बनवाने होंगे।

;2हर शहर हर गांव की सार्वजनिक स्थलों पर सार्वजनिक शौचालय बनवाने होंगे।

;3 लोगों में साफ सफाई और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलानी होगी।

;4हमें जगह.जगह कचरा पात्रों का निर्माण करना होगा।

;5शिक्षा के प्रचार.प्रसार को बढ़ावा देना होगा।

;6 लोगों की मानसिकता बदलने के लिए साफ सफाई के संदेश गांव.गांव तक पहुंचाना होगा।

;7लोगों को गंदगी के गंभीर परिणामों के बारे में बताना होगाए जिससे की उनको पता चले कि उनके गंदगी फैलाने से उनके साथ.साथ पूरे वातावरण को कितना नुकसान होता है।

;8हमें बढ़ती हुई जनसंख्या को कम करना होगा।

;9 हमें कचरे के निस्तारण की सही विधि का पता लगाकर उस को अमल में लाना होगा जैसे कि पहाड़ जैसे कचरे के ढेरों को हटाया जा सके।

;10 हमें उद्योग धंधे चलाने वाले लोगों में जागरूकता फैलाने होगी कि उनके छोटे से स्वार्थ के कारण हमारा पूरा वातावरण कितना प्रदूषित हो रहा है।

;11 हमें नए कानूनों का निर्माण करना होगाए जिससे कि लोग कहीं भी गंदगी ना फैलाएं।

उपसंहार–

जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैंए वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें–महात्मा गाँधी

महात्मा गाँधी द्वारा कहे गए यह कथन जोकि स्वच्छता पर ही आधारित है। उनके अनुसार स्वच्छता की जागरूकता की मशाल सभी में पैदा होने चाहिए। इसके तहत स्कूलों में भी स्वच्छ भारत अभियान के कार्य होने लगे हैं। स्वच्छता से ना केवल हमारा तन साफ रहता है बल्कि हमारा मन भी साफ़ रहता है।

हमारे भारत में ृ जहां स्वच्छता होती हैए वहां पर ईश्वर निवास करते हैंए इस प्रथा को माना जाता हैए इसलिए हमें भी स्वच्छता को अपनाना चाहिए। इसकी शुरुआत हमें और आपको मिलकर करनी होगी। जिससे कि हमारा पूरा देश साफ सुथरा हो जाए। स्वच्छ भारत अभियान भारत को स्वच्छ करने के लिए एक कड़ी का काम कर रहा है। लोग इसके उद्देश्य से उत्साहित होकर स्वच्छता के प्रति सचेत हो रहे हैं। यह भारत सरकार द्वारा उठाया गया एक सराहनीय कदम है।

स्वच्छ भारत अभियान में आप भी भागीदार बनें। लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरुक बनाएँ। इसी को मध्य रखते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भी सरकारी भवनों की सफाई और स्वच्छता को ध्यान में रखकर तंबाकू गुटका पान आदि उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है। जिसकी जरूरत उत्तर प्रदेश में ही नहीं बल्कि पूरे भारत देश में आवश्यक है। जिससे स्वच्छ रहे भारत स्वस्थ रहे हम।

स्वच्छ भारत अभियान से हमारा आने वाला कल बहुत ही सुंदर एवं अकल्पनीय होगा। अगर आप और हम मिलकर

स्वच्छ भारत अभियान के लक्ष्य को पूरा करने में लग जाए तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा पूरा देशए विदेशों की तरह पूरी तरह से साफ सुथरा दिखाई देगा। एक स्वस्थ्य देश और स्वस्थ्य समाज को जरुरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ्य रहें तथा हर व्यवसाय में स्वच्छ हो। और इस नेक काम के लिए हम सब को मिल कर आगे आना होगा और साथ.साथ काम कर के इस मिशन को पूरा करना होगा।

खुले में शौच मुक्त गाँव

प्रस्तावना–खुला में शौच मुक्त का आशय व अर्थ. खुला शौच मुक्त को सरल भाषा में कहे तो खुले में शौच क्रिया से मुक्त होना इसका आशय हैं। ऐसा गाँव जहा लोग बाहर खेतों में या जंगलों में शौच के लिए न जाते हो घरों में ही शौचालय हो खुला शौच मुक्त गाँव कहा जा सकता हैं।

खुले में शौच करने से मुक्त ग्राम अभियान

गाँवों में खुले शौच के लिए जाने की प्रथा सदियों पुरानी हैं।जनसंख्या सिमित होने तथा सामाजिक मर्यादाओं का सम्मान किये जाने के कारण इस प्रथा से कई लाभ भी जुड़े हुए थे।गाँव से दूर शौच किये जाने की क्रिया से मैला ढ़ोने के काम से मुक्ति तथा स्वच्छता दोनों का साधन होता था।मल स्वतः विकृत होकर खेतों में खाद की तरह काम करता था।

पर आज की परिस्थतियाँ में खुले में शौच। रोगों को खुला आमंत्रण बन गया हैं। साथ ही इससे उत्पन्न महिलाओं की असुरक्षा ने इसे विकट समस्या बना दिया हैं।अतः इस परम्परा का यथाशीघ्र समाधान।स्वच्छता स्वास्थ्य एवं महिला सुरक्षा की द्रष्टि से परम आवश्यक हो गया हैं

खुले में शौच मुक्त भारत बनाने के लिए जन जागरण

किसी प्राचीन कुप्रथा से मुक्त होने में भारतीय ग्रामीण समुदाय को बहुत हिचक होती हैं। उन पर सरकारी प्रयासों की उपेक्षा।अपने बीच प्रभावशाली व्यक्तियों तथा धर्माचार्यों तथा मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओं का प्रभाव अधिक पड़ता हैं। अतः खुले में शौच की समाप्ति के लिए जन जागरण परम आवश्यक हैं।

इसके लिए कुछ स्वयंसेवी संस्थाएं भी कार्य कर रही हैं।इसके साथ ही धार्मिक आयोजनों में प्रयोक्ताओं द्वारा इस प्रथा के परिणाम की प्रेरणा दी जानी चाहिए।शिक्षक छात्र छात्राओं के द्वारा प्रदर्शन का सहारा लेना चाहिए।गाँव के शिक्षित युवाओं को इस प्रयास में हाथ बटाना चाहिए।

भारत को खुले में शौच से मुक्त बनाने में हमारा योगदान

हमारा छात्राओं शिक्षक राजनेता व्यवसायीयोंए जागरूक नागरिकों आदि सभी लोग सम्मिलित हैं। सभी के सामूहिक प्रयास से इस बुराई को समाप्त किया जा सकता हैं।ग्रामीण जनता को खुले में शौच से होने वाली हानियों के बारे में समझाना होगा।उन्हें यह बताया जाना चाहिए कि इससे रोग फैलते है।

और धन व समय की बर्बादी होती हैं।साथ ही यह एक अशोभनीय आदत हैं। यह महिलाओं के लिए अनेक समस्याएं और संकट खड़े कर देता हैं। घरों में छात्र छात्राएं अपने माता पिता आदि को इससे छुटकारा पाने के लिए प्रेरित करे।

CBEO BHINDER

उपसंहार.

खुले में शौच मुक्त गाँवों की संख्या निरंतर बढ़ रही हैं।सरकारी प्रयासों के अतिरिक्त ग्राम प्रधानों तथा स्थानीय प्रबुद्ध और प्रभावशाली लोगों को आगे आकर इस अभियान में रूचि लेनी चाहिए।इससे न केवल ग्रामीण भारत को रोगों बीमारियों पर होने वाले व्यय से मुक्ति मिलेगी बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देश की छवि भी सुधरेगी।

डिजिटल इंडिया

प्रस्तावना–डिजिटल भारत प्रोग्राम भारत को समृध्द करने की दिशा में भारत सरकार की नई पहल है। इसका प्रमुख उद्देश्य देश को विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नये कीर्तिमान गढ़ना है। इसके द्वारा देश को डिजिटली रुप से सशक्त करना एकमेव लक्ष्य है। वर्तमान युग में आज वही देश आगे है जिसने विज्ञान और तकनीकी को अपने देश की तरक्की का माध्यम बना लिया है। भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान नाम से शुरू किया गया। यह अभियान इंटरनेट के माध्यम से देश में क्रांति लाना हैए साथ ही इंटरनेट को सशक्त करके भारत के तकनीकी पक्ष को मजबूत करना है। यह अभियान भारत सरकार द्वारा डिजिटल इंडिया अभियान नाम से शुरू किया गया है।

डिजिटल भारत की शुरुआत

एक कार्यक्रम दिल्ली के इंदिरा गांधी इंडोर स्टेडियम में टाटा ग्रुप के चेयरमैन साइरस मिस्त्री आरआईएल के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक मुकेश अंबानी विप्रो के चेयरमैन अजीम प्रेमजी आदि जैसे दिग्गज उद्योगपतियों की उपस्थिति में 1 जुलाई 2015 को डिजिटल इंडिया अभियान के नाम से शुरू किया गया।

देश को डिजिटल रूप से विकसित करने और देश के आईटी संस्थान में सुधार करने के लिए डिजिटल इंडिया महत्वपूर्ण पहल है। डिजिटल इंडिया अभियान की विभिन्न योजनाओं जैसे डिजिटल लॉकर राष्ट्रीय छात्रवृत्ति पोर्टल ई.स्वास्थ्य ई. शिक्षा ई.साइन आदि को शुरु करके इस कार्यक्रम का अनावरण किया गया है।

2015 में भारत सरकार द्वारा आयोजित एक विशाल संकलन जिसे डिजिटल इंडिया के रूप में जाना जाता है इसने देश के विभिन्न क्षेत्रों में सरकारी सेवाओं तक आसानी से पहुंचने के लिए लागू किया। देश भर में लोग इस कार्यक्रम के तहत प्रौद्योगिकी पहुंच में सुधार करते हैं। डिजिटल इंडिया का उद्देश्य देश को डिजिटल.सक्षम समाज में परिवर्तित करना है। यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी सुविधाएं इलेक्ट्रॉनिक रूप से निवासियों को उपलब्ध हों।

उपसंहार

1 जुलाई 2015 को शुरू किया गया।यह ग्रामीण लोगों को हाई स्पीड इंटरनेट नेटवर्क से जोड़ने के लिए आवश्यक देशव्यापि कार्यक्रम है। डिजिटल इंडिया का समाज के हर हिस्से के लोगों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। इसका समाज की प्रगति और व्यक्तिगत जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इस कार्यक्रम के तहत देश भर में 28000 बीपीओ नौकरियों के सृजन का अवसर है। इसने प्रत्येक ग्राम पंचायत में एक कॉमन सर्विस सेंटर की भी व्यवस्था की है।

CBEO BHINDER

कन्या भ्रूण हत्या एक अभिशाप
अथवा बेटी बचाओ बेटी पढ़ओ

प्रस्तावना–**भारतीय संस्कृति दुनिया के सबसे प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। हमारी पवित्र संस्कृति में स्त्रियों को देवी का दर्जा दिया गया है।**

यही नहीं मां सरस्वती लक्ष्मी माता सीता मां काली आदि जैसे **ईश्वर के** अनेकों रूप एक नारी के रूप में हमेशा से ही पूजनीय है।

लेकिन आज के समय में परिस्थितियां पूरी तरह बदल गई हैं। समय बीतने के साथ ही लोगों के विचार धाराओं में भी परिवर्तन आयाए लेकिन यह परिवर्तन नकारात्मक है। हमारी पवित्र संस्कृति पर कलंक लगाने वाले लोगों की ऐसी विचारधारा हमेशा से ही समाज के विकास में बाधा डालती आई है।

आधुनिक समय में लोग लड़की और लड़के में इस हद तक भेदभाव करने पर उतर आते हैं कि वे **मानवता** की सारी हदें पार कर देते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या क्या है– अल्ट्रासाउंड स्कैन जैसे उपकरणों का सहारा लेकर लिंग परीक्षण करने के पश्चात जब मां के गर्भ में कन्या शिशु के होने की पुष्टि कर ली जाती हैए तो कन्या भ्रूण को ही समाप्त कर दिया जाता है। इस अमानवीय प्रक्रिया को कन्या भ्रूण हत्या कहते है।

इतने विकसित समय में भी लोग अपनी पिछड़ी और शर्मसार कर देने वाली विचारधारा का प्रदर्शन करने से बाज नहीं आते हैं। यह हमारे समाज के लिए एक कलंक स्वरूप है कि आज भी हमारे समाज में केवल और केवल पुरुष सत्तात्मक विचारधारा को ही बढ़ावा दिया जाता है।

कन्या भ्रूण हत्या करवाने में सबसे अहम दोष **माता.पिता** का होता है। हमारे समाज में आज भी लोग केवल बालक शिशु की ही चाहत रखते हैं और कन्या को एक बोझ समझते है इसीलिए उसे जन्म के पहले ही मार डालते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या के कारण .

हमारे समाज में जब बेटी पैदा होती हैए तो उसके **पढ़ाई लिखाई** और भविष्य निर्माण के बारे में सोचने से पहले माता पिता को उसके विवाह और दहेज की चिंता सताने लगती है।कन्या भ्रूण हत्या करने के बाद भी लोगों को अपनी गलती का एहसास नहीं होता और वे पूरी बेशर्मी से ऐसा करने का कारण भी बताते हैं।

दहेज प्रथा हमारे समाज में एक ऐसा दानव है जो दिन.ब.दिन अपना विस्तार बढ़ाए जा रहा है और हर रोज कई नवविवाहित स्त्रियों को अपनी चपेट में ले रहा है।

स्त्री कोई खरीदने और बेचने वाली वस्तु नहीं होती जिसे दहेज के बदले में लिया और दिया जा सके। दहेज के कारण न जाने कितने ही ऐसे मामले देखे जाते हैंए जिसमें बहुत क्रूरता से ससुराल वालों की तरफ से नववधुओं को पैसों के लिए ताड़ना दी जाती है और कभी.कभी तो मौत के घाट उतार दिया जाता है।

हमारे समाज में ऐसे भी लोग रहते हैं जो सामाजिक असुरक्षा अथवा महिलाओं के साथ घट रहे अत्याचारों और अपराधों के कारण कन्या शिशु को जन्म नहीं देना चाहते हैं।

रूढ़िवादी विचारधारा से प्रभावित लोग कभी भी घर में बेटी के जन्म **होने पर खुशियां** नहीं मनाते हैं बल्कि वे इसे एक अभिशाप की तरह देखते हैं।

CBEO BINDER

मानव ने विज्ञान की सहायता से आज कई नई नई खोजें की है। यह कहना गलत नहीं होगा कि विज्ञान हमारे सुख सुविधाओं के लिए एक वरदान स्वरुप है। लेकिन जीवन बचाने वाले **आधुनिक तकनीको** का दुरुपयोग हमें ही नुकसान पहुंचाते हैं।

आज के समय में कई ऐसे अत्याधुनिक उपकरण खोजे जा चुके हैं जिनकी सहायता से लिंग परीक्षण किया जाता है। लेकिन पहले के समय में तो ऐसा कोई उपकरण नहीं था। यह आश्चर्य की बात हैए कि कन्या भ्रूण हत्या की शुरुआत बहुत पहले से ही हो गई थी।गर्भपात की जगह पहले भ्रूण हत्या के लिए दूध पीती प्रथा प्रचलित थी जिसमें छोटी बच्चियों को एक बड़े से पात्र में रखकर उन्हें दूध में डुबो दिया जाता था। कुछ मिनटों में ही सांस न लेने के कारण उनकी मृत्यु हो जाती थी। आज भी हमारे आसपास ऐसे लोग मौजूद हैं जो ऐसे वीभत्स अपराध को बढ़ावा देते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या के प्रभाव .

कन्या भ्रूण हत्या रुकने के बजाय हर साल बढ़ती ही जा रही है। समाज पर इसका बहुत विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। भारत में लिंग अनुपात बिगड़ने का सबसे मुख्य कारण कन्या भ्रूण हत्या ही है।

1901 के जनगणना के अनुसारए हमारे देश में प्रति एक हजार पुरुषों पर केवल 972 स्त्रियों की संख्या हैए जो अनुपात में बेहद कम है।

यदि 2001 के बात करें तोए जनगणना के पश्चात आंकड़ों के आधार पर प्रति 1000 पुरुषों पर केवल 933 स्त्रियों की संख्या है। इस कलंकित परंपरा के वाहक केवल **अशिक्षित लोग** ही नहीं बल्कि उच्च और शिक्षित समाज भी शामिल है।

देश के समृद्ध राज्यों में भी कन्या भ्रूण हत्या के मामले बढ़ते ही जा रहे हैं। यदि समय रहते हुए इस अमानवीय अपराध पर तंज नहीं कसा गयाए तो यह हमारी संस्कृति पर एक दाग लगा देगी जिसे मिटा पाना बहुत मुश्किल होगा।

यदि दुनिया के दूसरे देशों से तुलना की जाए तो वहां **महिलाएं** अधिक कामयाब होती हैं। क्योंकि वहां लोगों की मानसिकता विकसित है और वे लड़की और लड़कों में भेदभाव नहीं करते हैंए और ना ही कन्या भ्रूण हत्या जैसे अपराधों को बढ़ावा देते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के उपाय .

समाज के रूढ़िवादी कुरीतियां आज के समय में लोगों के दिमाग में इस तरह घर कर गई हैं उन्हें जड़ से खत्म कर पाना थोड़ा मुश्किल है। किसी भी दुराचारी प्रथा को नष्ट करने के लिए सबसे पहले हमें पहल करना आवश्यक है।

कहने को तो कन्या भ्रूण हत्या पर सरकार ने प्रतिबंध लगाया है लेकिन यह हम सभी जानते हैं कि आज भी लोग किस प्रकार खुलेआम ऐसे अमानवीय कृत्य करते हैं।

इस पर रोक लगाने के लिए सबसे पहले डॉक्टर्स को आगे आना होगा। यदि वे गर्भ में पल रहे शिशु का लिंग परीक्षण करने से इंकार कर दे तो बहुत हद तक कन्या भ्रूण हत्या पर रोक लगाया जा सकता है।

निष्कर्ष .

समाज में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए सबसे पहले हमें अपने अपने अंदर बदलाव करने होंगे। क्योंकि हर बड़े काम की शुरुआत एक पहल से होती है।

CBEO BINDER

कोरोना वायरस.एक वैश्विक महामारी

प्रस्तावना–विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा कोरोनावायरस को महामारी घोषित किया गया है। इस वायरस ने पिछले साल पूरी दुनिया को अपने चपेट में ले लिया था और अब तक करोड़ों लोगों की जान ले चुका है। यह बीमारी सबसे पहले 2019 में चीन में देखी गई थी। इसके बाद यह संक्रमण धीरे.धीरे पूरी दुनिया में फैल गया। इससे ना केवल लोगों की जान गईए साथ ही कई लोगों की आर्थिक स्थिति को भी बहुत नुकसान पहुंचा। ऐसे में कोरोना की दूसरी लहरके चलते इस वायरस का संक्रमण 2021 में और भी बढ़ गया है और साथ ही कोरोना के लक्षण भी बदल गए हैं। वायरस के संक्रमण फैलने से रोकने के लिए सभी देश में कई सारे नियम लागू किए हैं जिसके मद्देनजर लॉकडाउन लगाया गया और भीड़ भाड़ करने की इजाजत नहीं दी गई। इसके अलावा लोगों को स्वच्छता और सामाजिक दूरी का महत्व सिखाया गया और इम्यूनिटी मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

क्या है कोरोना वायरस के लक्षण–पिछले साल के अनुसार कोरोना वायरस की आम लक्षणों में खांसी सर्दीजैसे लक्षण शामिल है। इसके अलावा कई लोगों में पेट के संक्रमण भी देखे गए। हालांकि कई नए लक्षण देखे गए जिसमें सिर दर्द आंखों का लाल होना आंखों में सूजन दस्त त्वचा पर संक्रमण शरीर में दर्द आदि देखा गया।

कोरोना वायरस से कैसे बचें–कोरोनावायरस के संक्रमण से बचने के लिए सरकार द्वारा लागू किए गए नियमों का सख्ती से पालन करना और खुद भी स्वच्छता बनाए रखना बहुत जरूरी है।

नीचे दिए गए चीजों को ध्यान में रखें और खुद को संक्रमण से बचाएं–

मास्क पहनना । कोरोना संक्रमित क्षेत्रों से बचना। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करना। किसी भी अनजान वस्तु को हाथ ना लगाना। हाथों को साबुन या हैंडवाश से साफ रखना। सैनिटाइजर का उपयोग करना। जितना हो सके घर में रहना। बाहर का खाना खाने से बचना। पौष्टिक आहार खाना। घर में अगर किसी को फांसी या बुखार है तो उनसे दूरी बनाए रखना। खांसते या छीकते समय मुंह पर रुमाल या टिशू पेपर रखना।

इन सारी बातों का ध्यान रखने से कोरोना वायरस के संक्रमण से बचा जा सकता है। इसके अलावा अगर आप कोरोनावायरस के लक्षण देखते हैं तो अपना टेस्ट जरूर करवाएं और डॉक्टर के निर्देशों के मुताबिक घर पर सावधानी बरतें।

उपसंहार–कोरोना एक भयंकर महामारी है जिसका सामना सिर्फ सावधानी के साथ ही किया जा सकता है अतः हमें सावधानी के साथ सामाजिक दुरी का पालन एवं अपनी रोग प्रतिरोधकता मजबुत करके ही इससे जीता जा सकता है।

CBEO BINDER

मेक इन इंडिया पर निबंध

प्रस्तावना

मेक इन इंडिया यह भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा दिया नारा है।जो अपने आप में एक योजना को समेटे हुए है । इसका तात्पर्य है आवश्यकतानुरुप उत्तम से उत्तम वस्तुओं का निर्माण भारत में ही हो । जिसका लाभ हर दृष्टिकोण से और वास्तव में देशवासियों को ही मिले।

उद्देश्य

मोदी जी का यह आइडिया जो अब एक स्कीम का रूप ले रहा है इसका प्रमुख उद्देश्य भारत में रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाना है और कौशल क्षमता को विकसित करने से है । कौशल क्षमता विकसित होने के साथ अर्थव्यवस्था के लगभग 25 क्षेत्रों पर ध्यान केन्द्रित करना है जिनमें से प्रमुख है. ऑटोमोबाइल रसायन आईटी बंदरगाह विमानन चमड़ा पर्यटन और आतिथ्य . कल्याण रेल्वे डिजाइन अक्षय ऊर्जा खनन जैव प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स । इन 25 क्षेत्रों में से अंतरिक्ष रक्षा समाचार . मीडिया : को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में निवेश की अनुमति दी गई है । इस कार्यक्रम से देश की विकास दर और राजस्व कर में वृद्धि की उम्मीद है ।

योजना से लाभ

इस योजना का सबसे बड़ा फायदा तो यह होगा कि देश में बनी वस्तु की कीमत कम होगी और उत्पादित वस्तु का निर्यात कर राजकीय कोष में वृद्धि होगी ।

इस स्कीम के लिए 930 करोड़ रुपए का प्रावधान दिया गया है । सरकार योजना के लिए 581 करोड़ रुपए देगी । पूरी योजना पर 20000 करोड़ रुपए का खर्च हो सकता है ऐसा अनुमान है ।

योजना को सफल बनाने में चुनौती

इस योजना को सफल बनाने में जिन चुनौतियों का सामना करना है वह प्रमुख रूप से इस प्रकार है।

- औद्योगिक संस्थान व सरकार के मध्य टूटते विश्वास को कायम रखना।
- विकास के लिए सही जमीन व वातावरण बनानाइसमें यह ध्यान रखना होगा कि किसानों की जमीन न हड़पी जाए ।

  इन प्रमुख चुनौतियों को ध्यान में रखते आगे बढ़े तो निसंदेह सफलता हाथ लगेगी । माना कि चीन के जैसे हमारे पास बहुत अधिक निर्माण की सुविधाएँ उपलब्ध नहीं है लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण है कि क्या विश्व दूसरे चीन के लिए तैयार है यदि हाँ तो शायद वह दूसरा चीन भारत ही है ।

उपसंहार –

हमारे आर्थिक विकास की दर के लिए यह बहुत ही महत्वाकांक्षी परियोजना है । यदि इसके महत्व और दूरगामी परिणामों को देखें और एक ईमानदार कोशिश करें तो निश्चित ही हम इस योजना के द्वारा भारत को विश्व का ए निर्माण के क्षेत्र में एक शक्ति केन्द्र बना सकने में सक्षम होंगे ।

CBEO BHINDER

भारत में खेलों का भविष्य

प्रस्तावना–

खेल मनुष्य की जन्मजात प्रकृति है। बच्चे बचपन से ही किसी न किसी खेल का आनन्द उठाते हैं। विद्यालयों में भी उनको खेलने का अवसर मिलता है। किन्तु खेलों के प्रति जिस प्रोत्साहन की जरूरत हैए उस ओर समाज और सरकार को ही गम्भीरता से आत्मनिरीक्षण करने की आवश्यकता बनी हुई है।

खेलों के प्रति उदासीनता और उपेक्षा

हमारे देश में खेलों को शिक्षा में बाधक माना जाता है। परिवार के बड़े बच्चों को खेलकूद के प्रति हतोत्साहित करते हैं। उनका मानना है कि दूसरे बच्चों का ध्यान पढ़ाईदृलिखाई से हट जाता है और वे जीवन में पिछड़ जाते हैं। कहावत प्रचलित है पढ़ोगे लिखोगे बनोगे नवाब खेलोगे कूदोगे होगे खराब।

यद्यपि यह कहावत आधारहीन है। खेल जीवन को सँभालने के लिए जरूरी हैं और शिक्षा के समान ही आवश्यक हैं। इस मनोवृत्ति का परिणाम यह है कि खेलों के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए हमारे यहाँ कोई व्यवस्था ही नहीं है। सरकार की खेलों को बढ़ावा देने की सुनिश्चित नीति न होने के कारणए खेलने के मैदानों में बस्तियाँ बस गई हैं। स्कूलों के पास कोई प्ले ग्राउण्ड बचा ही नहीं है। न खेलने का सामान है और न खेलों के लिए धन की कोई व्यवस्था है।

कारण और परिणाम–

खेलों के प्रति इस उपेक्षा का कारण निर्धनता भी है। हम अपने बच्चों को पढ़ादृलिखाकर किसी धनोपार्जन के काम में लगाना अच्छा समझते हैं। उन्हें खेलकूद का प्रशिक्षण दिलाने की बजाय किसी व्यावसायिक शिक्षा केन्द्र में भरती कराना वे उचित समझते हैं। सरकार की ओर से भी इस विषय में किसी प्रोत्साहन की व्यापक व्यवस्था नहीं है।

परिणाम बहुत स्पष्ट है कि देश खेलकूद के क्षेत्र में अपेक्षित गति से आगे नहीं बढ़ा है। खेलों के आयोजनों में भारतीय खिलाड़ियों की सफलता का प्रतिशत ही कम ही रहा है। पदक प्राप्त करने वालों में छोटेदृछोटे देश भी हमसे आगे रहते हैं।अब भारत में वैश्विक आयोजन हो रहे हैं ओलम्पिक खेल वर्ल्ड कप अनेक प्रतियोगिताओं के

साथ क्रिकेट का आईपीएल संस्करण तो विश्वभर में लोकप्रिय बन चुका है। फुटबाल के क्षेत्र में भी लीग खेल आयोजित होते हैं।

स्थिति में सुधार की आवश्यकता–

भारत को यदि खेल जगत में चीन की तरह आगे बढ़ना है तो उसे इस स्थिति पर नियंत्रण रखना ही होगा। खेलों को खेल मानकर उनके प्रोत्साहन की व्यवस्था करना जरूरी है।

इसके लिए उचित प्रशिक्षण केन्द्र तथा आवश्यक धनराशि की व्यवस्था करना भी जरूरी है। विद्यालय स्तर से ही इसमें सुधार की आवश्यकता है। खेलों से राजनीति के लोगों तथा व्यापारियों को दूर रखना जरूरी है। खेलों का नियंत्रण खेलों के प्रति समर्पित लोगों को ही दिया जाना चाहिए।

उपसंहार–

भारत विभिन्न क्षेत्रों में विकास के पथ पर आगे बढ़ रहा है। खेलों की उपेक्षा करके वह अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता। खेलों को विकास का एक अंग मानकर ही वह विश्व के अन्य विकसित देशों के साथ खड़ा हो सकता है।

CBEO BHINDER

दहेज प्रथाः सामाजिक कलंक अथवा दहेजः नारी शक्ति का अपमान

प्रस्तावना दहेज प्रथाए जिसमें दुल्हन के परिवार को दूल्हे के परिवार के लिए नकदी के रूप में उपहार देने और कीमती चीजें देना भी शामिल हैए की काफी हद तक समाज द्वारा निंदा की जाती है लेकिन कुछ लोगों का तर्क यह भी है कि इसका अपना महत्व है और लोग अभी भी इसका अनुसरण कर रहे हैं तथा यह दुल्हन को कई तरीकों से लाभ पहुँचा रही है।

दहेज सोसायटी के लिए एक अभिशाप है

दहेज दुल्हन के परिवार द्वारा दूल्हे और उसके परिवार को नकद संपत्ति और अन्य संपत्तियों के रूप में उपहार देने की प्रथा है जिसे वास्तव में महिलाओं विशेष रूप से दुल्हनों के लिए शाप कहा जा सकता है। दहेज ने महिलाओं के खिलाफ कई अपराधों को जन्म दिया है। यहाँ विभिन्न समस्याओं पर एक नजर है जो इस प्रथा से दुल्हन और उसके परिवार के सदस्यों के लिए उत्पन्न होती हैरू

1. **परिवार पर वित्तीय बोझ**

हर लड़की के माता.पिता उसके जन्म के बाद से उसकी शादी के लिए बचत करना शुरू कर देते हैं। वे कई साल शादी के लिए बचत करते हैं क्योंकि शादी के मामले में सजावट से लेकर खानपान तक की पूरी जिम्मेदारी उनके ही कंधों पर होती है। इसके अलावा उन्हें दूल्हेए उसके परिवार और उसके रिश्तेदारों को भारी मात्रा में उपहार देने की आवश्यकता होती है। कुछ लोग अपने रिश्तेदारों और मित्रों से पैसे उधार लेते हैं जबकि अन्य इन मांगों को पूरा करने के लिए बैंक से ऋण लेते हैं।

2. **जीवन स्तर को कम करना**

दुल्हन के माता.पिता अपनी बेटी की शादी पर इतना खर्च करते हैं कि वे अक्सर अपने जीवन स्तर को कम करते हैं। कई लोग बैंक ऋण के चक्कर में फंसकर अपना पूरा जीवन इसे चुकाने में खर्च कर देते हैं।

3. **भ्रष्टाचार को सहारा देना**

जिस व्यक्ति के घर में बेटी ने जन्म लिया है उसके पास दहेज देने और एक सभ्य विवाह समारोह का आयोजन करने से बचने का कोई विकल्प नहीं है। उन्हें अपनी लड़की की शादी के लिए पैसा जमा करना होता है और इसके लिए लोग कई भ्रष्ट तरीकों जैसे कि रिश्वत लेनेए टैक्स चोरी करने या अनुचित साधनों के जरिए कुछ व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन करना शुरू कर देते हैं।

4. **लड़की के लिए भावनात्मक तनाव**

5. **शारीरिक शोषण**

जहाँ कुछ ससुराल वालों ने अपनी बहू के साथ बदसलूकी करने की आदत बना रखी है और कभी भी उसे अपमानित करने का मौका नहीं छोड़ते वहीँ कुछ ससुराल वाले अपनी बहू का शारीरिक शोषण करने में पीछे नहीं रहते। कई मामले दहेज की भारी मांग को पूरा करने में अपनी अक्षमता के कारण महिलाओं को मारने और जलाने के समय.समय पर उजागर होते रहते हैं।

6. **कन्या भ्रूण हत्या**

एक लड़की को हमेशा परिवार के लिए बोझ के रूप में देखा जाता है। यह दहेज प्रणाली ही है जिसने कन्या भ्रूण हत्या को जन्म दिया है। कई दम्पतियों ने कन्या भ्रूण हत्या का विरोध भी किया है। भारत में नवजात कन्या को लावारिस छोड़ने के मामले भी सामान्य रूप से उजागर होते रहे हैं।

CBEO BINDER

निष्कर्ष

दहेज प्रथा की जोरदार निंदा की जाती है। सरकार ने दहेज को एक दंडनीय अपराध बनाते हुए कानून पारित किया है लेकिन देश के ज्यादातर हिस्सों में अभी भी इसका पालन किया जा रहा है जिससे लड़कियों और उनके परिवारों का जीना मुश्किल हो रहा है।

अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश वे काव्यांश हैं जिनका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है। इन काव्यांशों के अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों की भावग्रहण क्षमता को विकसित करना है।

अपठित काव्यांश हल करने की विधि

सर्वप्रथम काव्यांश का दो–तीन बार अध्ययन करें ताकि उसका अर्थ व भाव समझ में आ सके।
तत्पश्चात् काव्यांश से संबंधित प्रश्नों को ध्यान से पढ़िए।
प्रश्नों के पढ़ने के बाद काव्यांश का पुनः अध्ययन कीजिए ताकि प्रश्नों के उत्तर से संबंधित पंक्तियाँ पहचानी जा सकें।
प्रश्नों के उत्तर काव्यांश के आधार पर ही दीजिए।
प्रश्नों के उत्तर स्पष्ट होने चाहिए।
उत्तरों की भाषा सहज व सरल होनी चाहिए।
गत वर्षों के पूछे गए प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख–भाग न सबका सम हो।
नही किसी को बहुत अधिक हो
नही किसी को कम हो।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिए या कि मिट जाएँ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि खुद मर के।
किसने कहा पाप है? अनुचित
स्वत्व–प्राप्ति–हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना–मरना?

प्रश्नः
(क) कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है?

CBEO BHINDER

(ख) तेजस्वी किस प्रकार समय को छीन लेते हैं ?
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए?
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ?
उत्तरः
(क) कवि के अनुसार, शांति के लिए आवश्यक है कि संसार में संसाधनों का वितरण समान हो।
(ख) अपने अनुकूल समय को तेजस्वी जीतकर छीन लेते हैं।
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को संघर्ष करना पड़ता है। अपना हक माँगना पाप नहीं है।
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए इसलिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि वे अपने हक को पा सकें, अपने प्रति अन्याय को खत्म कर सकें।

2. नीड़ का निर्माण फिर–फिर
नेह का आह्वान फिर–फिर
वह उठी आँधी कि नभ में
छा गया सहसा अँधेरा
धूलि–धूसर बादलों ने
भूमि को इस भाँति घेरा,
श्रात–सा दिन हो गया फिर
श्रात आई और काली,
ल्ग रहा था अब न होगा,
ठस निशा का फिर सवेरा,
श्रात के उत्पात–भय से
भीत जन–जन, भीत कण–कण
किन्तु प्राची से उषा की
मेहिनी मुसकान फिर–फिर
नीड़ का निर्माण फिर–फिर
नेह का आह्वान फिर–फिर
प्रश्नः
(क) आँधी तथा बादल किसके प्रतीक हैं ? इनके क्या परिणाम होते हैं ?
(ख) कवि निर्माण का आह्वान क्यों करता है?
(ग) कवि किस बात से भयभीत है और क्यों?
(घ) उषा की मुसकान मानव–मन को क्या प्रेरणा देती है?
उत्तरः
(क) आँधी और बादल विपदाओं के प्रतीक हैं। जब विपदाएँ आती ह तो उससे जनजीवन अस्तव्यस्त हो जाता है। मानव मन का उत्साह नष्ट हो जाता है।
(ख) कवि निर्माण का आह्वान इसलिए करता है ताकि सृष्टि का चक्र चलता रहे। निर्माण ही जीवन की गति है।
(ग) विपदाओं के कारण चारों तरफ निराशा का माहौल था। कवि को लगता था कि निराशा के कारण निर्माण कार्य रुक जाएगा।
(घ) उषा की मुसकान मानव में कार्य करने की इच्छा जगाती है। वह मानव को निराशा के अंधकार से बाहर निकालती है।

3. यह लघु सरिता का बहता जल
कितना शीतल, कितना निर्मल
हिमगिरि के हिम से निकल–निकल,
यह विमल दूध–सा हिम का जल,
कर–कर निनाद कल–कल, छल–छल,
तन का चंचल मन का विह्वल
यह लघु सरिता का बहता जल।
ऊँचे शिखरों से उतर–उतर

CBSE BHINDER

गिर–गिर, गिरि की चट्टानों पर,
कंकड़–कंकड़ पैदल चलकर
दिनभर, रजनी–भर, जीवन–भर
धोता वसुधा का अंतस्तल
यह लघु सरिता का बहता जल।
हिम के पत्थर वो पिघल–पिघल,
बन गए धरा का वारि विमल,
सुख पाता जिससे पथिक विकल
पी–पी कर अंजलि भर मृदुजल
नित जलकर भी कितना शीतल
यह लघु सरिता का बहता जल।
कितना कोमल कितना वत्सल
श्री जननी का वह अंतस्तल,
जिसका यह शीतल करुणाजल
बहता रहता युग–युग अविरल
गंगा, यमुना, सरयू निर्मल
यह लघु सरिता का बहता जल।

प्रश्न
(क) वसुधा का अंतस्तल धोने में जल को क्या–क्या करना पडता है?
(ख) जल की तुलना दूध से क्यों की गई है?
(ग) आशय स्पष्ट कीजिए–'तन का चंचल मन का विह्वल'
(घ) 'रे जननी का वह अंतस्तल' में जननी किसे कहा गया है?

उत्तरः
(क) वसुधा का अंतस्तल धोने के लिए जल ऊँचे पर्वतों से उतरकर पर्वतों की चट्टानों पर गिरकर कंकड़–कंकड़ों पर पैदल चलते हुए दिन–रात जीवन पर्यंत कार्य करता है।
(ख) हिम के पिघलने से जल बनता है जो शुद्ध व पवित्र होता है। दूध को भी पवित्र व शुद्ध माना जाता है। अतः जल की तुलना दूध से की गई है।
(ग) इसका मतलब है कि जिस प्रकार शरीर में मन चंचल अपने भावों के कारण हर वक्त गतिशील रहता है, उसी तरह छोटी नदी का जल भी हर समय गतिमान रहता है।
(घ) इसमें भारत माता को जननी कहा गया है।

4. तरुणाई है नाम सिंधु की उठती लहरों के गर्जन का,
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का।
विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता,
जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरंतर नाता।
पर्वत के विशाल शिखरों–सा यौवन उसका ही है अक्षय,
जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।
अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफानों में,
सहनशीलता दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।
प्रश्नः
(क) कवि ने किसका आह्वान किया है और क्यों?
(ख) तरुणाई की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है?
(ग) मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ते हैं और कैसे?
(घ) आशय स्पष्ट कीजिए–'जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।'

CBSE BINDER

उत्तरः
(क) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है क्योंकि उनमें उत्साह होता है और वे संघर्ष क्षमता से युक्त होते हैं।
(ख) तरुणाई की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है–उत्साह, कठिन परिस्थितियों का सामना करना, हार से निराश न होना, दृढ़ता, सहनशीलता आदि।
(ग) माग की रुकावटों को युवा शक्ति तोड़ती है। जिस प्रकार झरने चट्टानों को तोड़ते हैं, उसी प्रकार युवा शक्ति अपने पंथ की रुकावटों को खत्म कर देती है।
(घ) इसका अर्थ है कि युवा शक्ति जनसामान्य में उत्साह का संचार कर देती है।

5. खुल कर चलते डर लगता है
बाते करते डर लगता है
क्योंकि शहर बेहद छोटा है।
ऊँचे हैं, लेकिन खजूर से
मंह है इसीलिए कहते हैं,
जहाँ बुराई फूले–पनपे–
वहाँ तटस्थ बने रहते हैं,
नियम और सिद्धांत बहुत
छंगों से परिभाषित होते हैं–
जो कहने की बात नहीं है,
वही यहाँ दुहराई जाती,
जिनके उजले हाथ नहीं हैं,
इनकी महिमा गाई जाती
यहाँ ज्ञान पर, प्रतिभा पर,
अवसर का अंकुश बहुत कड़ा है–
सब अपने धंधे में रत हैं
यहाँ न्याय की बात गलत है
क्योंकि शहर बेहद छोटा है।
बुद्धि यहाँ पानी भरती है,
सिधापन भूखों मरता है–
उसकी बड़ी प्रतिष्ठा है,
जो सारे काम गलत करता है।
यहाँ मान के नाप–तौल की,
इकाई कंचन है, धन है–
कोई सच के नहीं साथ है
यहाँ भलाई बुरी बात है।
क्योंकि शहर बेहद छोटा है।

प्रश्नः
(क) कवि शहर को छोटा कहकर किस 'छोटेपन' को अभिव्यक्त करना चाहता है ?
(ख) इस शहर के लोगों की मुख्य विशेषताएँ क्या हैं ?
(ग) आशय समझाइए
'बुद्धि यहाँ पानी भरती है,
सीधापन भूखों मरता है'
(घ) इस शहर में असामाजिक तत्व और धनिक क्या–क्या प्राप्त करते हैं ?
उत्तरः
(क) कवि ने शहर को छोटा कहा है क्योंकि यहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता नहीं है। व्यक्तियों के स्वार्थ में डूबे होने के कारण हर जगह अन्याय स्थापित हो रहा है।
(ख) इस शहर के लोग संवेदनहीन, स्वार्थी, डरपोक, अन्यायी का गुणगान करने वाले व निरर्थक प्रलाप करने वाले हैं।
(ग) इस पंक्ति का आशय है कि यहाँ विद्वान व समझदार लोगों को महत्त्व नहीं दिया जाता। सरल स्वभाव का व्यक्ति अपना जीवन निर्वाह भी नहीं कर सकता।

CBEO BHINDER

(घ) इस शहर में असामाजिक तत्व दंगों से अपना शासन स्थापित करते हैं तथा नियम बनाते हैं। धनिक अवैध कार्य करके धन कमाते हैं।

6. जग रहे हम वीर जवान,
जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान!
हम प्रभात की नई किरण हैं, हम दिन के आलोक नवल,
हम नवीन भारत के सैनिक, धीर, वीर, गंभीर, अचल।
हम प्रहरी ऊँचे हिमाद्रि के, सुरभि स्वर्ग की लेते हैं,
हम हैं शांति–दूत धरणी के, छाँह सभी को देते हैं।
वीरप्रसू माँ की आँखों के, हम नवीन उजियाले हैं,
गंगा, यमुना, हिंद महासागर के हम ही रखवाले हैं।
तन, मन, धन, तुम पर कुर्बान,
जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान!
हम सपूत उनके, जो नर थे, अनल और मधु के मिश्रण,
जिनमें नर का तेज प्रखर था, भीतर था नारी का मन।
एक नयन संजीवन जिनका, एक नयन था हालाहल,
जितना कठिन खड्ग था कर में, उतना ही अंतर कोमल।
थर–थर तीनों लोक काँपते थे जिनकी ललकारों पर,
स्वर्ग नाचता था रण में जिनकी पवित्र तलवारों पर।
हम उन वीरों की संतान,
जियो, जियो ऐ हिंदुस्तान!
प्रश्नः
(क) 'नवीन भारत' से क्या तात्पर्य है?
(ख) उस पंक्ति को उद्धृत कीजिए जिसका आशय है कि भारतीय बाहर से चाहे कठोर दिखाई पड़ें, उनका हृदय कोमल होता है।
(ग) 'हम उन वीरों की संतान'–उन पूर्वज वीरों की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
(घ) 'वीरप्रसू माँ' किसे कहा गया है? क्यों?
उत्तरः
(क) 'नवीन भारत' से तात्पर्य है–आजादी के पश्चात् निरंतर विकसित होता भारत।
(ख) उक्त भाव को व्यक्त करने वाली पंक्ति है–जितना कठिन खड्ग था कर में, उतना ही अंतर कोमल।
(ग) कवि ने पूर्वज वीरों की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई हैं
इनकी वीरता से संसार भयभीत था।
वीरों में आग व मधु का मेल था।
वीरों में तेज था, परंतु वे कोमल भावनाओं से युक्त थे।
(घ) 'वीरप्रसू माँ' से तात्पर्य भारतमाता से ह। भारतमाता ने देश का मान बढ़ाने वाले अनेक वीर दिए हैं।

7. 'सर! पहचाना मुझे ?'
बारिश में भीगता आया कोई
कपड़े कीचड़–सने और बालों में पानी।
बैठा। छन–भर सुस्ताया। बोला, नभ की ओर देख–
'गंगा मैया पाहुन बनकर आई थीं'
झोंपड़ी में रहकर लौट गईं–
नैहर आई बेटी की भाँति
चार दीवारों में कुदकती–फुदकती रहीं
खाली हाथ वापस कैसे जातीं!
घरवाली तो बच गई–
दीवारें ढहीं, चूल्हा बुझा, बरतन–भाँडे–
जे भी था सब चला गया।
सिंाद–रूप में बचा है नैनों में थोड़ा खारा पानी

CBSE BHINDER

पत्नी को साथ ले, सर, अब लड़ रहा हूं
ढही दीवार खड़ी कर रहा हूँ
कादा–कीचड़ निकाल फेंक रहा हूँ।'
मेरा हाथ जेब की ओर जाते देख
वह उठा, बोला–'सर पैसे नहीं चाहिए।
जरा अकेलापन महसूस हुआ तो चला आया
घर–गृहस्थी चौपट हो गई पर
रोढ़ की हड्डी मजबूत है सर!
पीठ पर हाथ थपकी देखकर
आशीर्वाद दीजिए–
लड़ते रहो।'

प्रश्नः

(क) बाढ़ की तुलना मायके आई हुई बेटी से क्यों की गई है?
(ख) 'सर' का हाथ जेब की ओर क्यों गया होगा?
(ग) आगंतुक 'सर' के घर क्यों आया था?
(घ) कैसे कह सकते हैं कि आगंतुक स्वाभिमानी और संघर्षशील व्यक्ति है?

उत्तरः

(क) बाढ़ की तुलना मायके आई हुई बेटी से इसलिए की है क्योंकि शादी के बाद बेटी अचानक आकर मायके से बहुत कुछ सामान लेकर चली जाती है। इसी तरह बाढ़ भी अचानक आकर लोगों की जमापूँजी लेकर ही जाती है।
(ख) 'सर' का हाथ जेब की ओर इसलिए गया होगा ताकि वह बाढ़ में अपना सब कुछ गँवाए हुए व्यक्ति की कुछ आर्थिक सहायता कर सके।
(ग) आगंतुक 'सर' के घर आर्थिक मदद माँगने नहीं आया था। वह अपने अकेलेपन को दूर करने आया था। वह 'सर' से संघर्ष करने की क्षमता का आशीर्वाद लेने आया था।

(घ) आगंतुक के घर का सामान बाढ़ में बह गया। इसके बावजूद वह निराश नहीं था। उसने मकान दोबारा बनाना शुरू किया। उसने 'सर' से आर्थिक सहायता लेने के लिए भी इनकार कर दिया। अतः हम कह सकते हैं कि आगंतुक स्वाभिमानी और संघर्षशील व्यक्ति है।

8. स्नायु तुम्हारे हों इस्पाती।

दह तुम्हारी लोहे की हो, स्नायु तम्हारे हों इस्पाती,
युवको, सुनो जवानी तुममें आए आँधी–सी अर्राती।
जब तुम चलो चलो ऐसे
जैसे गति में तूफान समेटे।
हो संकल्प तुम्हारे मन में।
युग–युग के अरमान समेटे।
अतर हिंद महासागर–सा, हिमगिरि जैसी चौड़ी छाती।
जग जीवन के आसमान में
तम मध्याह्न सूर्य–से चमको
तम अपने पावन चरित्र से
उज्ज्वल दर्पण जैसे दमको।
साँस–साँस हो झंझा जैसी रहे कर्म ज्वाला भड़काती।
जनमंगल की नई दिशा में '
तुम जीवन की धार मोड़ दो
यदि व्यवधान चुनौती दे तो
तम उसकी गरदन मरोड़ दो।
ऐसे सबक सिखाओ जिसको याद करे युग–युग संघाती।
स्नायु तुम्हारे हों इस्पाती।

प्रश्नः
(क) युवकों के लिए फौलादी शरीर की कामना क्यों की गई है?
(ख) किसकी गरदन मरोड़ने को कहा गया है और क्यों?
(ग) बलिष्ठ युवकों की चाल–ढाल के बारे में क्या कहा गया है?
(घ) युवकों की तेजस्विता के बारे में क्या कल्पना की गई है?
उत्तरः
(क) युवकों के लिए फौलादी शरीर की कामना इसलिए की गई है ताकि उनमें उत्साह का संचार रहे। उनकी गति में तूफान व संकल्पों में युग–युग के अरमान समा जाएँ।
(ख) कवि ने व्यवधान की गरदन मरोड़ने को कहा है क्योंकि उसे सबक सिखाने की जरूरत है। उसे ऐसे सबक को लंबे समय तक याद रखना होगा।
(ग) बलिष्ठ युवकों की चाल–ढाल के बारे में कवि कहता है कि उन्हें तूफान की गति के समान चलना चाहिए। उनका मन हिंद महासागर के समान गहरा व सीना हिमालय जैसा चौड़ा होना चाहिए।
(घ) युवकों की तेजस्विता के बारे में कवि कल्पना करता है कि वे संसार के आसमान में दोपहर के सूर्य के समान चमकें। वे अपने पवित्र चरित्र से उज्ज्वल दर्पण के समान दमकने चाहिए।
9
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।
है अनिष्चित, किस जगह पर
सरित,गिरि, गह्वर मिलेगें,
है अनिष्चित, किस जगह पर
बाग,वन सुन्दर मिलेगें। किस जगह यात्रा खतम हो,
जायगी, यह भी अनिष्चित,
है अनिष्चित,कब सुमन, कब
कंटकों के षर मिलेगें।
प्रश्न (अ) "बाट की पहचान कर ले"– इस पक्ति में 'बाट' से क्या आषय है?
(ब) यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व पथिक को क्या सोच लेना चाहिए ?
(स) है अनिष्चित.....यात्रा–मार्ग में क्या अनिष्चित है ?
(द) प्रस्तुत काव्यांस में कौनसी षब्द–षक्ति का प्रयोग हुआ है ?
(र) प्रस्तुत काव्यांष का उपयुक्त षीर्षक है ।
उत्तर – (अ) इसमें 'बाट से आषय जीवन का लक्ष्य–प्राप्ति की वह दृढ़ेच्छा है, जिससे जीवन में सफलता मिलती है।
(ब) यात्रा प्रारम्भ करने से पूर्व पथिक को यह सोच लेना चाहिए कि इसमें कितना कष्ट मिलेगा, कितनी बाधाएँ आयेंगी और कितनी सफलता मिल सकेगी।
(स) मनुष्य के जीवन–मार्ग में कहाँ पर सुख मिलेगा, कहाँ पर बाधाएँ और कष्ट झेलने पड़ेंगे सब कुछ अनिष्चित है।
(द) यह सन्देष व्यक्त हुआ है कि मनुष्य को जीवन लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अनुकूल और प्रतिकूल सभी परिस्थितियों का सामना करने के लिए सावधान रहना चाहिए।
(घ) प्रस्तुत काव्यांष में लक्षणा षब्दषक्ति का प्रयोग हुआ है।
(र) शीर्षक–पथ की पहचान
10
हाय रे मावन, नियति के दास।
हाय रे मनुपुत्र, अपना ही उपहास
प्रकृति की प्रच्छन्नता को जीत,
सिन्धु से आकाष तक सबको किये भयभीत,
सृष्टि को निज बुद्धि से करना हुआ परिमेय,
चीरता परमाणुकी सत्ता असीम, अजेय,
बुद्धि के पवमान में उड़ता हुआ असहाय,
जा रहा तु किस दिषा की ओर हो निरूपाय?
लक्ष्य क्या है? उद्देष्य क्या? क्या अर्थ?
यह नही यदि ज्ञात तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ।

प्रश्नः

(अ) "जा रहा तु हसि दिषा की ओर" – इस पंक्ति में कवि का क्या आषय है?
(ब) "यह नहीं यदि ज्ञात"– आधुनिक मावन को कौन–सी बात ज्ञात नही है?
(स) प्रस्तुत काव्यांष का केन्द्रीय भाव क्या है? लिखिए।
(द) "प्रकृति की प्रच्छत्रता को जीत" – इस पंक्ति में 'प्रच्छत्रता' से क्या आषय है?
(य) 'सिन्धु से आकाष तक सबको किये भयभीत' इस पंक्ति का मतलब क्या है?
(र) कवि ने विज्ञान का श्रम कब व्यर्थ बनाया है?

उत्तर– (अ) आधुनिक काल में मानव ने विज्ञान द्वारा नये–नये आविष्कार कर भौतिकता की ओर जा रहा है, जिससे वह अपने ही विनाष का सामान तैयार कर रहा है।
(ब) आधुनिक मानव को यह बात ज्ञात नहीं है कि जीवन का उद्देष्य मानवता का कल्याण करना है।
(स) वर्तमान काल में अतिषय भौतिकवादी प्रवृति के कारण, सुख–भोग के नये–नये साधनों के आविष्कार के कारण मानव–सभ्यता का पतन हो रहा है।
(द) 'प्रच्छत्रता' का आषय है–गोपनीय या रहस्यमय। धरती पर आँधी–तूफान या विनाष या खुषहाली आदि का रहस्य विज्ञान ने जान लिया है।
(य) मनुष्य ने समुद्र से आकाष तक सब जगह विज्ञान से नये–नये आविष्कार करके सबको भयभीत कर दिया।
(र) विज्ञान के द्वारा नयी–नयी खोज करते हुए मनुष्य को अपना लक्ष्य, उद्देष्य अर्थात मानवता का कल्याण करना ही ज्ञात नही है तो विज्ञान का श्रम व्यर्थ है।

11

अब भी कुछ लोगों के दिल में, नफरत अधिक, प्यार है कम
हम सब होगें घृणा का, नाम मिटाकर लेंगे दम।
हिंसा के विषमय प्रवाह में, कब तक और बहेगा देष।
जब हम होंगे बड़े देखना, नहीं रहेगा यह परिवेष।
भ्रष्टाचार जमाखोरी की आदत बहुत पुरानी है,
ये कुरीतियाँ मिटा हमें तो नई चेतना लानी है।
एक घरौंदे जैसा आखिर कितना और ढहेगा देष,
जब हम होंगे बड़े देखना, ऐसा नही रहेगा देष।
इसकी बागडोर हाथों में, जरा हमारे आने दो,
थोड़ा सा बस पाँव हमारा, जीवन में टिक जाने दो।
हम खाते है षपथ, दुर्दषा कोई नही सहेगा देष,
घोर अभावों की ज्वाला में, कल से नही जलेगा देष।

प्रष्न–(क) समाज में अभी तक लोगों के मन की क्या दषा है ?
(ख) बच्चे बड़े होकर क्या करना चाहते है ?
(ग) भारत के लोगों में क्या बुराई बहुत समय से फैली हुई है ?
(घ) देष की तुलना किससे की गई है तथा क्यों ?
(ड.) बच्चे बड़े होने और सषक्त होने पर क्या करने की षपथ लेते है ?
(च) वर्तमान भारतीय समाज के सामने कौन–कौन सी भीषण समस्यायें है ?
(छ) 'घोर अभावों की ज्वाला' में कौन–सा अलंकार है ?

उत्तर – (क) समाज में अभी तक लोगों के मन में सच्चा प्रेम उत्पन्न नही हुआ है। उनके मन में अभी तक प्रेम की अपेक्षा घृणा की भावना की ही प्रधानता है।
(ख) बच्चे देष को घृणा की भावना से दूर रखना चाहता हैं। वे देष के लोगों के मन में घृणा का नामोनिषान मिटा देना चाहते हैं।
(ग) भारत में लोगों में भृष्टाचार और जमाखोरी की बुराइयाँ बहुत समय से फैली हुई हैं। ये कुरीतियाँ बहुत पुराने समय से लोगों में व्याप्त हैं।
(घ) देष की तुलना मिट्टी से बने घरौंदे से की गई है। मिट्टी से बना घरौंदा हवा और पानी के प्रहार से जल्दी ढह जाता है। ये कुरीतियाँ भी देष को कमजोर बना रही है और नष्ट कर रही हैं।
(ड.) बच्चे बड़े और षक्तिषाली होने पर देष को दुर्दषा से मुक्त करने की षपथ लेते है। वे कसम खाते है कि जब वे बड़े हो जायेंगे तो देष को निर्बलता और अक्षमता से मुक्त कराएँगे।

CBSE BHINDER

(च) वर्तमान भारतीय समाज के सामने अनेक भीषण समस्यायें हैं। मन में एक दुसरे के प्रति घृणा,हिंसा,भष्ट्राचार जमाखोरी और गरीबी तथा अभाव आदि समस्यायें भारत में व्याप्त हैं।
(छ) ' घोर अभावों की ज्वाला में । ' में रूपक अलंकार है।

12

आज का बचपन का कोमल गात
जरा का पीला पात !
चार दिन सुखद चाँदनी रात
और फिर अंधकार, अज्ञात!
शिशिर–सा झर नयनों का नीर
झुलस देता गालों के फूल !
प्रणय का चुम्बन छोड़ अधीर
अधर जाते अंधरों को भूल !
मृदंल होंठों का हिमजल हास
उड़ा जाता निःश्वास समीर,
सरल भौंहों का शरदाकाश
घेर लेते घन, घिर गम्भीर !
शून्य साँसों का विधुर वियोग
छुड़ाता अधर मधुर संयोग,
मिलन के पल केवल दोचार,
विरह के कल्प अपार !
अरे वे अपलक चार नयन
आठ आँसु रोते निरूपाय,
उठे रोंओं के आलिंगन
कसक उठते काँटों– से हाय !

प्रश्न– (क) बचपन में शरीर कैसा होता है ? वह वृद्धावस्था में कैसा हो जाता है ?
(ख) संसार में सुख और दुःख में किसकी बहुलता है ?
(ग) आँखो से गिरते आँसुओं की तुलना किससे की गई है ?
(घ) कोमल होठों की हँसी किसमें बदल जाती है ?
(ड.) मिलन के समय को 'पल' तथा विरह के समय को 'कल्प' क्यों कहा गया है ?
(च) चार नयन किनके हैं ? उनके अपलक होने का क्या तात्पर्य है ?
(छ) प्रस्तुत पद्यांस में कवि ने प्रकृति के किस स्वरूप का वर्णन किया है ?
उत्तर– (क) बचपन में शरीर कोमल होता है। वह वृद्धावस्था में पीला पड़ जाता है।
(ख) संसार में सुख कम तथा दुःख अधिक समय तक रहने वाला है।
(ग) आँखों से गिरने वाले आँसुओं को शिशिर ऋतु में गिरने वाले के समान बताया गया है।
(घ) कोमल होठों की हँसी निराशाभरी गहरी साँसों में बदल जाती है। अर्थात् हँसते हुए मनुष्य के जीवन में भी निराशा आकर उसे उदास कर देती है।
(ड.) 'पल' समय की एक लधुतम माप है तथा 'कल्प' एक बहुत बड़ी माप है। मिलन के पल दो–चार हैं अर्थात् जीवन में मिलन का समय बहुत छोटा है। विरह के कल्प अपार हैं अर्थात् का समय बहुत लम्बा है।
(च) चार नयन हैं–अर्थात् दो नेत्र नायक हैं तथा दो नायिका के। अपलक का अर्थ है–टकटकी लगाकर देखना, बिना पलक झपकाये देखना नायक–नायिका संयोगके समय एक–दुसरों के नेत्राों में टकटकी लगाकर देख रहे हैं।
(छ) प्रस्तुत पद्यांस में कवि ने प्रकृति के कठोर एवं रौद्र स्वरूप का दर्शन किया है।

13

साची है इतिहास, हमी पहले जागे हैं,
जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं।

CBSE BHINDER

शत्रु हमारे कहाँ नहीं भय से भागे हैं ?
कायरता से कहाँ प्राण हमने त्यागें हैं ?
हैं हर्मी प्रकम्पित कर चुके, सुरपति तक का भी हृदय।
फिर एक बार हे विश्व !
तुम, गाओं भारत की विजय।।
कहाँ प्रकाशित नहीं रहा है तेज हमारा,
दलित कर चुके शत्रु सदा हम पैरों द्वारा।
तुम्ही बताओ कौन नहीं जो हमसे हारा,
पर शरणागत हुआ कहाँ, कब हमें न प्यारा ?
बस युद्ध मात्र को छोड़कर कहाँ नहीं हैं हम सदय।
फिर एक बार हे विश्व ! तुम गाओ भारत की विजय।
प्रश्न– (क) 'हमी पहले जागे हैं' – पंक्ति में ' हमी ' शब्द का अर्थ क्या है तथा जागने का क्या तात्पर्य है ?
(ख) 'जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं'– में निहित भाव को प्रकट कीजिए।
(ग) "शत्रु हमारे.....त्यागे हैं" – पंक्तियों में भारतीयों के किस गुण का उल्लेख हुआ है ?
(घ) ' शत्रु हमारे कहाँ नही भय से भागे हैं ' में अलंकार बताइए।
(ड.) इस काव्यांश में कौन–सा काव्य–गुण है ?
उत्तर– (क) 'हमी पहले जागे हैं' में 'हमी' अर्थात् हम ही सर्वनाम है जो भारतवासियों के लिए प्रयुक्त हुआ है। जागने का तात्पर्य है– शिक्षित तथा ज्ञानसम्पन्न होना। संसार में भारत के रहने वाले ही सर्वप्रथम सुशिक्षित, ज्ञानवान् और सभ्य बने थे।
(ख) 'जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं' – का भाव यह कि ज्ञान और सभ्यता पहले भात में उदित हुई। सर्वप्रथम भारतीय सभ्य बने, तदुपरान्त उन्होंने शेष विश्व को सभ्यता का पाठ पढ़ाया।
(ग) 'शत्रु हमारे.....त्यागे हैं, '– इन पंक्तियों में भारतीयों की वीरता, निर्भीकता तथा पराक्रम आदि गुणों का वर्णन है। भारतीय कायर नहीं हैं।
(घ) 'शत्रु हमारे कहाँ नहीं भय से भागे हैं '– में ' भ ' वर्ण की आवृति होने से अनुप्रास अलंकार है।
(ड.) इस काव्यांश में वीर रस का वर्णन है। इस रस का स्थायीभाव ' उत्साह ' है।
(च) प्रस्तुत पंक्तियों मे ' ओज ' नामक काव्य–गुण है।

अपठित गद्यांश

गद्यांश जिसका अध्ययन हिंदी की पाठ्यपुस्तक में नहीं किया गया है अपठित गद्यांश कहलाता है। परीक्षा में इन गद्यांशों से विद्यार्थी की भावग्रहण क्षमता का मूल्यांकन किया जाता है।
अपठित गद्यांश को हल करने संबंधी आवश्यक बिंदु
विद्यार्थी को गद्यांश ध्यान से पढ़ना चाहिए ताकि उसका अर्थ स्पष्ट हो सके।
तत्पश्चात् गद्यांश से संबंधित प्रश्नों का अध्ययन करें।
फिर इन प्रश्नों के संभावित उत्तर गद्यांश में खोजें।
प्रश्नों के उत्तर गद्यांश पर आधारित होने चाहिए।
उत्तरों की भाषा सहज, सरल व स्पष्ट होनी चाहिए।
(गत वर्षों में पूछे गए प्रश्न)
निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए

1. **संवाद में दोनों पक्ष बोलें यह आवश्यक नहीं। प्रायः एक व्यक्ति की संवाद में मौन भागीदारी अधिक लाभकर होती है। यह स्थिति संवादहीनता से भिन्न है। मन से हारे दुखी व्यक्ति के लिए दूसरा पक्ष अच्छे वक्ता के रूप में नहीं अच्छे श्रोता के रूप में अधिक लाभकर होता है। बोलने वाले के हावभाव और उसका सलीका, उसकी प्रकृति और सांस्कृतिक–सामाजिक पृष्ठभूमि को पल भर में बता देते हैं। संवाद से संबंध बेहतर भी होते हैं और अशिष्ट संवाद संबंध बिगाड़ने का कारण भी बनता है। बात करने से बड़े–बड़े मसले, अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ तक हल हो जाती हैं।संवाद की सबसे बड़ी शर्त है एक–दूसरे की बातें पूरे मनोयोग**

से, संपूर्ण धैर्य से सुनी जाएँ। श्रोता उन्हें कान से सुनें और मन से अनुभव करें तभी उनका लाभ है, तभी समस्याएँ सुलझने की संभावना बढ़ती है और कम–से–कम यह समझ में आता है कि अगले के मन की परतों के भीतर है क्या? सच तो यह है कि सुनना एक कौशल है जिसमें हम प्रायः अकुशल होते हैं। दूसरे की बात काटने के लिए, उसे समाधान सुझाने के लिए हम उतावले होते हैं और यह उतावलापन संवाद की आत्मा तक हमें पहुँचने नहीं देता। ळम तो बस अपना झंडा गाड़ना चाहते हैं। तब दूसरे पक्ष को झुंझलाहट होती है। वह सोचता है व्यर्थ ही इसके सामने मुँह खोला। रहीम ने ठीक ही कहा था–"सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय।" ध्यान और धैर्य से सुनना पवित्र आध्यात्मिक कार्य है और संवाद की सफलता का मूल मंत्र है। लोग तो पेड़–पौधों से, नदी–पर्वतों से, पशु–पक्षियों तक से संवाद करते हैं। राम ने इन सबसे पूछा था क्या आपने सीता को देखा?' और उन्हें एक पक्षी ने ही पहली सूचना दी थी। इसलिए संवाद की अनंत संभावनाओं को समझा जाना चाहिए।

प्रश्नः1.उपर्युक्त गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–संवाद रूप एक कौशल।
प्रश्नः2.'संवादहीनता' से क्या तात्पर्य है ? यह स्थिति मौन भागीदारी से कैसे भिन्न है?
उत्तरःसंवादहीनता से तात्पर्य है–बातचीत न होना। यह स्थिति मौन भागीदारी से बिलकुल अलग है। मौन भागीदारी में एक बोलने वाला होता है। संवादहीनता में कोई भी पक्ष अपनी बात नहीं कहता।
प्रश्नः 3. भाव स्पष्ट कीजिए– "यह उतावलापन हमें संवाद की आत्मा तक नहीं पहुँचने देता।"
उत्तरःइसका भाव यह है कि बातचीत के समय हम दूसरे की बात नहीं सुनते। हम अपने सुझाव उस पर थोपने की कोशिश करते हैं। इससे दूसरा पक्ष अपनी बात को समझा नहीं पाता और हम संवाद की मूल भावना को खत्म कर देते हैं।
प्रश्नः 4.दुखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष कब अधिक लाभकर होता है? क्यों?
उत्तरःदुखी व्यक्ति से संवाद में दूसरा पक्ष तब अधिक लाभकर होता है जब वह अच्छा श्रोता बने। दुखी व्यक्ति अपने मन की बात कहकर अपने दुख को कम करना चाहता है। वह दूसरे की नहीं सुनना चाहता।
प्रश्नः 5. सुनना कौशल की कुछ विशेषताएँ लिखिए।
उत्तरः सुनना कौशल की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–
(क) एक–दूसरे की बात पूरे मनोयोग से सुननी चाहिए।
(ख) श्रोता उन्हें सुनकर मनन करें।
(ग) सही ढंग से सुनने से ही समस्या सुलझ सकती है।
प्रश्नः6 हम संवाद की आत्मा तक प्रायः क्यों नहीं पहुँच पाते?
उत्तरः हम संवाद की आत्मा तक प्रायः इसलिए पहुँच नहीं पाते क्योंकि हम अपने समाधान देने के लिए उतावले होते हैं। इससे हम दूसरे की बात को समझ नहीं पाते।
प्रश्नः 7. रहीम के कथन का आशय समझाइए।
उत्तरः रहीम का कहना है कि लोग बात सुन लेते हैं, पर उन्हें बाँटता कोई नहीं। कहने का तात्पर्य है कि आम व्यक्ति अपनी ही बात कहना चाहता है।

2. जब समाचार–पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको विज्ञापन कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता पाकर भी भंडाफोड़ होने पर बहुत दिनों तक टिक नहीं पाएँगी, परंतु लोगों कि यह सोच गलत हो आज के युग में मानव का प्रचार–प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। अतरू विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है। किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो हमारी जरूरत की वस्तुएँ प्रस्तुत करता है, उनकी माँग बढ़ाता है और अंततः हम उन्हें जुटाने चल पड़ते हैं। यदि कोई व्यक्ति या कंपनी किसी वस्तु का निर्माण करती है, उसे उत्पादक कहा जाता है। उन वस्तओं और सेवाओं को खरीदने वाला उपभोक्ता कहलाता है। इन दोनों को जोड़ने का कार्य विज्ञापन करता है। व्ह उत्पादक को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित

करने का प्रयत्न करता है। पुराने जमाने में किसी वस्तु की अच्छाई का विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था। काबुल का मेवा, कश्मीर की जरी का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि वस्तुओं की प्रसिद्धि मौखिक रूप से होती थी। उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेजी का है। संचार–क्रांति ने जिंदगी को गति दे दी है। मनुष्य की. आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं। इसलिए विज्ञापन मानव–जीवन की अनिवार्यता बन गया है।

प्रश्नः 1.गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरः शीर्षक–विज्ञापन का महत्त्व।
प्रश्नः 2.विज्ञापन किसे कहते हैं ? वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग क्यों माना जाता है?
उत्तरःसमाचार पत्रों में सर्वसाधारण के लिए प्रकाशित सूचना विज्ञापन कहलाती है। विज्ञापन के जरिए लोगों की आवश्यकताएँ पूरी होती हैं तथा मानव का प्रचार–प्रसार का दायरा व्यापक हो चुका है। इसलिए वह मानव जीवन का अनिवार्य अंग माना जाता है।
प्रश्नः 3.उत्पादक किसे कहते हैं ? उत्पादक–उपभोक्ता संबंधों को विज्ञापन कैसे प्रभावित करता है?
उत्तरःवस्तु का निर्माण करने वाला व्यक्ति या कंपनी को उत्पादक कहा जाता है। विज्ञापन उत्पादक व उपभोक्ता को संपर्क में लाकर माँग व पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का कार्य करता है।
प्रश्नः 4.किसी विज्ञापन का उद्देश्य क्या होता है? जीवन में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
उत्तरःविज्ञापन का उद्देश्य वस्तुओं को प्रस्तुत करके माँग बढ़ाना है। इसके कारण ही हम खरीददारी करते हैं।
प्रश्नः 5.पुराने समय में विज्ञापन का तरीका क्या था? वर्तमान तकनीकी युग ने इसे किस प्रकार प्रभावित किया है?
उत्तरःपुराने जमाने में विज्ञापन का तरीका मौखिक था। उस समय आवश्यकता कम होती थी तथा वस्तु के अभाव की तीव्रता भी कम थी। आज तेज संचार का युग है। इसने मानव की जरूरत बढ़ा दी है।
प्रश्नः 6.विज्ञापन के आलोचकों के विज्ञापन के संदर्भ में क्या विचार हैं?
उत्तरःविज्ञापन के आलोचक इसे निरर्थक मानते हैं। उनका कहना है कि अच्छी चीज स्वयं ही लोकप्रिय हो जाती हैं जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन का सहारा पाकर भी लंबे समय नहीं चलती।

प्रश्नः 7.आज की भाग–दौड़ की जिन्दगी में विज्ञापन का महत्त्व उदाहरण देकर समझाइए।
उत्तरःआज मानव का दायरा व्यापक हो गया है। उसके पास अधिक संसाधन है। विज्ञापन ही अपनी जरूरत पूरी कर सकता है।

3. राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत होती है जो हमें अपने पूर्वजों से परंपरा के रूप में प्राप्त होती है। जिसमें हम बड़े होते हैं, शिक्षा पाते हैं और साँस लेते हैं–हमारा अपना राष्ट्र कहलाता है और उसकी पराधीनता व्यक्ति की परतंत्रता की पहली सोढ़ी होती है। ऐसे ही स्वतंत्र राष्ट्र की सीमाओं में जन्म लेने वाले व्यक्ति का धर्म, जाति, भाषा या संप्रदाय कुछ भी हो, आपस में स्नेह होना स्वाभाविक है। राष्ट्र के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता तथा विकास के लिए काम करने की भावना राष्ट्रीयता कहलाती है।ज्ब व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति से धर्म, जाति, कुल आदि के आधार पर व्यवहार करता है तो उसकी दृष्टि संकुचित हो जाती है। राष्ट्रीयता की अनिवार्य शर्त है–देश को प्राथमिकता, भले ही हमें 'स्व' को मिटाना पड़े। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से पता चलता है कि राष्ट्रीयता की भावना के कारण उन्हें अनगिनत कष्ट उठाने पड़े किंतु वे अपने निश्चय में अटल रहे। व्यक्ति को निजी अस्तित्व कायम रखने के लिए पारस्परिक सभी सीमाओं की बाधाओं को भुलाकर कार्य करना चाहिए तभी उसकी नीतियाँ–रीतियाँ राष्ट्रीय कही जा सकती हैं। ज्ब–जब भारत में फूट पड़ी, तब–तब विदेशियों ने शासन किया। चाहे जातिगत भेदभाव हो या भाषागत–तीसरा व्यक्ति उससे लाभ उठाने का अवश्य यत्न करेगा। आज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे हैं। कहीं भाषा को लेकर संघर्ष हो रहा है तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर लोगों को निकाला जा रहा है जिसका परिणाम हमारे सामने है। आदमी अपने अहं में सिमटता जा रहा है। फलस्वरूप राष्ट्रीय बोध का अभाव परिलक्षित हो रहा है।

प्रश्नः: 1. गद्यांश का उचित शीर्षक लिखिए।
उत्तरःशीर्षक–राष्ट्र और राष्ट्रीयता।
प्रश्नः 2.'स्व' से क्या तात्पर्य है, उसे मिटाना क्यों आवश्यक है?
उत्तरः'स्व' से तात्पर्य है–अपना। केवल अपने बारे में सोचने वाले व्यक्ति की दृष्टि संकुचित होती है। वह राष्ट्र का विकास नहीं कर सकता। अतः 'स्व' को मिटाना आवश्यक है

प्रश्नः3 आशय स्पष्ट कीजिए–"राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा ही नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक विरासत भी है।"
उत्तरःइसका अर्थ है कि राष्ट्र केवल जमीन का टुकड़ा नहीं है। वह व्यक्तियों से बसा हुआ क्षेत्र है जहाँ पर संस्कृति है, विचार है। वहाँ जीवनमूल्य स्थापित हो चुके होते हैं।
प्रश्नः 4.राष्ट्रीयता से लेखक का क्या आशय है ? गद्यांश में चर्चित दो राष्ट्रभक्तों के नाम लिखिए।
उत्तरःराष्ट्रीयता से लेखक का आशय है कि देश के लिए जीना और काम करना, उसकी स्वतंत्रता व विकास के लिए काम करने की भवना होना। लेखक ने महात्मा गांधी व सुभाषचन्द्र बोस का नाम लिया है।
प्रश्नः 5.राष्ट्रीय बोध को अभाव किन–किन रूपों में दिखाई देता ह?
उत्तरःआज देश में अनेक प्रकार के आंदोलन चल रहे हैं, कहीं भाषा के नाम पर तो कहीं धर्म या क्षेत्र के नाम पर। इसके कारण व्यक्ति अपने अहं में सिमटता जा रहा है। अतः राष्ट्रीय बोध का अभाव दिखाई दे रहा है।
प्रश्नः 6.राष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का क्या स्थान है? उदाहरण सहित लिखिए।
उत्तरःराष्ट्र के उत्थान में व्यक्ति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। जब व्यक्ति अपने अहं को त्याग कर देश के विकास के लिए कार्य करता है तो देश की प्रगति होती है। महात्मा गांधी, तिलक, सुभाषचन्द्र बोस आदि के कार्यों से देश आजाद हुआ।
प्रश्नः 7.व्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्व हैं। कैसे? तर्क सहित उत्तर लिखिए।
उत्तरःव्यक्तिगत स्वार्थ एवं राष्ट्रीय भावना परस्पर विरोधी तत्व हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ के कारण मनुष्य अपनी जाति, धर्म, क्षेत्र आदि के बारे में सोचता है, देश के बारे में नहीं। राष्ट्रीय भावना में 'स्व' का त्याग करना पड़ता है। ये दोनों प्रवत्तियाँ एक साथ नहीं हो सकतीं।

4. भारत प्राचीनतम संस्कृति का देश है। यहाँ दान पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है। जब दान देने को धार्मिक कृत्य मान लिया गया तो निश्चित तौर पर दान लेने वाले भी होंगे। हमारे समाज मे भिक्षावृत्ति की जिम्मेदारी समाज के धर्मात्मा, दयालु व सज्जन लोगों की है। भारतीय समाज में दान लेना व दान देना–दोनों धर्म के अंग माने गए हैं। कुछ भिखारी खानदानी होते हैं क्योंकि पुश्तों से उनके पूर्वज धर्म स्थानों पर अपना अड्डा जमाए हुए हैं।कुछ भिखारी अंतर्राष्ट्रीय स्तर के हैं जो देश में छोटी–सी विपत्ति आ जाने पर भीख का कटोरा लेकर भ्रमण के लिए निकल जाते हैं। इसके अलावा अनेक श्रेणी के और भी भिखारी होते हैं। कुछ भिखारी परिस्थिति से बनते हैं तो कुछ बना दिए जाते हैं। कुछ शौकिया भी। इस व्यवसाय में आ गए हैं। जन्मजात भिखारी अपने स्थान निश्चित रखते हैं। कुछ भिखारी अपनी आमदनी वाली जगह दूसरे भिखारी को किराए पर देते हैं। आधुनिकता के कारण अनेक वृद्ध मजबूरीवश भिखारी बनते हैं।गरीबी के कारण बेसहारा लोग भीख माँगने लगते हैं। काम न मिलना भी भिक्षावृत्ति को जन्म देता है। कुछ अपराधी बच्चों को उठा ले जाते हैं तथा उनसे भीख मँगवाते हैं। वे इतने हैवान हैं कि भीख माँगने के लिए बच्चों का अंग–भंग भी कर देते हैं। भारत में भिक्षा का इतिहास बहुत पुराना है। देवराज इंद्र व विष्णु श्रेष्ठ भिक्षुकों में थे। इंद्र ने कर्ण से अर्जुन की रक्षा के लिए उनके कवच व कुंडल ही भीख में माँग लिए। विष्णु ने वामन अवतार लेकर भीख माँगी।धर्मशास्त्रों ने दान की महिमा का बढ़ा–चढ़ाकर वर्णन किया जिसके कारण भिक्षावृत्ति को भी धार्मिक मान्यता मिल गई। पूजा–स्थल, तीर्थ, रेलवे स्टेशन, बसस्टैंड, गली–मुहल्ले आदि हर जगह भिखारी दिखाई देते हैं। इस कार्य में हर आयु का व्यक्ति शामिल है। साल–दो साल के दुध मुँहे बच्चे से लेकर अस्सी–नब्बे वर्ष के बूढ़े तक को भीख माँगते देखा जा सकता है। भीख माँगना भी एक कला है, जो अभ्यास या सूक्ष्म निरोक्षण से सीखी जा सकती है।टपराधी बाकायदा इस काम की ट्रेनिंग देते हैं। भीख रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर भी माँगी जाती है। भीख माँगने के लिए इतना आवश्यक है कि दाता के मन में करुणा जगे। अपंगता, कुरूपता, अशक्तता, वृद्धावस्था आदि देखकर दाता करुणामय होकर परंपरानिर्वाह कर पुण्य प्राप्त करता है।

प्रश्नः 1.गद्यांश का समुचित शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–भिक्षावृत्ति एक व्यवसाय।
प्रश्नः 2."भारत में भिक्षा का इतिहास प्राचीन है"–सप्रमाण सिद्ध कीजिए।
उत्तरः भारत में भिक्षावृत्ति का इतिहास पुराना है। देवराज इंद्र व विष्णु श्रेष्ठ भिक्षुकों में हैं। इंद्र ने अर्जुन की रक्षा के लिए कर्ण से कवच व कुंडल की भिक्षा माँगी जबकि विष्णु ने वामन अवतार में भीख माँगी। धर्मशास्त्रों से भिक्षावृत्ति को धार्मिक मान्यता मिली।
प्रश्नः 3."भीख माँगना एक कला है"–इस कला के विविध रूपों का उल्लेख कीजिए।
उत्तरः भीख माँगना एक कला है जो अभ्यास व सूक्ष्म निरीक्षण से सीखी जाती है। रोकर, गाकर, आँखें दिखाकर या हँसकर, अपंगता, अशक्तता आदि के जरिए दूसरे के मन में करुणा जगाकर भीख माँगी जाती है।

प्रश्नः 4.स्माज में भिक्षावृत्ति बढ़ाने में हमारी मान्यताएँ किस प्रकार सहायक हाती हैं ?
उत्तरःभिक्षावृत्ति बढ़ाने में हमारी धार्मिक मान्यताएँ सहायक हैं। भारत में दान देना व लेना दोनों धर्म के अंग माने गए हैं। दान–पुण्य को जीवनमुक्ति का अनिवार्य अंग माना गया है। अतः भिक्षुकों का होना लाजिमी है।
प्रश्नः 5.भिखारी व्यवसाय के विभिन्न स्वरूपों का उल्लेख कीजिए।
उत्तरःभिखारी व्यवसाय में कुछ भिखारी खानदानी हैं जो कई पीढियों से धर्मस्थानों पर अपना अड्डा जमाए हुए हैं। कुछ अंतर्राष्ट्रीय भिखारी हैं जो देश में छोटी–सी विपत्ति आने पर भीख माँगने विदेश चले जाते हैं। कुछ परिस्थितिवश तथा कुछ अपराधियों द्वारा बना दिए जाते हैं। कुछ शौकिया भिखारी भी होते हैं।
प्रश्नः 6.भिखारी दाता के मन में किस भाव को जगाते हैं और क्यों?
उत्तरःभिखारी अपनी अशक्तता, कुरूपता, अपंगता, वृद्धावस्था आदि के जरिए दाता के मन में करुणाभाव जगाते हैं ताकि वे दान देकर अपनी परंपरा का निर्वाह कर सकें।
प्रश्नः 7.आपके विचार से भिक्षावृत्ति से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है?
उत्तरःमेरे विचार से भिक्षावृत्ति से छुटकारा तभी मिल सकता है जब उसे धर्म के प्रभाव से अलग किया जाएगा। कानून व सामाजिक आंदोलन भी सहायक हो सकते हैं।

5. सभी मनुष्य स्वभाव से ही साहित्य–स्रष्टा नहीं होते, पर साहित्य–प्रेमी होते हैं। मनुष्य का स्वभाव ही है सुंदर देखने का। घी का लड्डू टेढ़ा भी मीठा ही होता है, पर मनुष्य गोल बनाकर उसे सुंदर कर लेता है। मूर्ख–से–मूर्ख हलवाई के यहाँ भी गोल लड्डू ही प्राप्त होता हैय लेकिन सुंदरता को सदा–सर्वदा तलाश करने की शक्ति साधना के द्वारा प्राप्त होती है। उच्छृखलता और सौंदर्य–बोध में अंतर है। बिगड़े दिमाग का युवक परायी बहू–बेटियों के घूरने को भी सौंदर्य–प्रेम कहा करता है, हालाँकि यह संसार की सर्वाधिक असुंदर बात है।जैसा कि पहले ही बताया गया है, सुंदरता सामंजस्य में होती है और सामंजस्य का अर्थ होता है, किसी चीज का बहुत अधिक और किसी का बहुत कम न होना। इसमें संयम की बड़ी जरूरत है। इसलिए सौंदर्य–प्रेम में संयम होता है, उच्छृखलता नहीं। इस विषय में भी साहित्य ही हमारा मार्ग–दर्शक हो सकता है। जो आदमी दूसरों के भावों का आदर करना नहीं जानता उसे दूसरे से भी सद्भावना की आशा नहीं करनी चाहिए। मनुष्य कुछ ऐसी जटिलताओं में आ फँसा है कि उसके भावों को ठीक–ठीक पहचानना हर समय सुकर नहीं होता।ऐसी अवस्था में हमें मनीषियों के चिंतन का सहारा लेना पड़ता है। इस दिशा में साहित्य के अलावा दूसरा उपाय नहीं है। मनुष्य की सर्वोत्तम कृति साहित्य है और उसे मनुष्य पद का अधिकारी बने रहने के लिए साहित्य ही एकमात्र सहारा है। यहाँ साहित्य से हमारा मतलब उसकी सब तरह ही सात्त्विक चिंतन–धारा से है।

प्रश्नः 1. गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–साहित्य और सौंदर्य–बोध। दृ
प्रश्नः2.साहित्य स्रष्टा और साहित्य प्रेमी से क्या तात्पर्य है?
उत्तरःसाहित्य स्रष्टा वे व्यक्ति होते हैं जो साहित्य का सृजन करते हैं। साहित्य प्रेमी साहित्य का आस्वादन करते हैं।
प्रश्नः 3.लड्डू का उदाहरण क्यों दिया गया है?
उत्तरःलेखक ने लड्डू का उदाहरण मनुष्य के सौंदर्य प्रेम के संदर्भ में दिया है। लड्डू की तासीर मीठी होती है चाहे वह गोल हो या टेढ़ा–मेढ़ा परंतु मनुष्य उन्हें गोल बनाकर उसके सौंदर्य को बढ़ा देता है।
प्रश्नः 4.उच्छृखलता और सौंदर्य–बोध में क्या अंतर है?
उत्तरःउच्छंखलता में नियमों का पालन नहीं होता, जबकि सौंदर्य बोध में संयम होता है।
प्रश्नः 5.लेखक ने संसार की सबसे बुरी बात किसे माना है और क्यों?
उत्तरःलेखक ने संसार की सबसे बुरी बात परायी बहू–बेटियों को घूरना बताया है क्योंकि यह सौंदर्य बोध के नाम पर उच्छृखलता है।
प्रश्नः 6.जीवन में संयम की जरूरत क्यों है?
उत्तरः जीवन में संयम की जरूरत है क्योंकि संयम से ही सामंजस्य का भाव उत्पन्न होता है जिससे मनुष्य दूसरों की भावना का आदर कर सकता है।

प्रश्नः 7.हमें विद्वानों के चिंतन की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
उत्तरःहमें विद्वानों के चिंतन की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि जीवन की जटिलताओं में फँसने के कारण हम दूसरे के भावों को सही से नहीं समझ पाते। साहित्य ही इस समस्या का समाधान है।

6. बड़ी कठिन समस्या है। झूठी बातों को सुनकर चुप हो कर रहना ही भले आदमी की चाल है, परंतु इस स्वार्थ और लिप्सा के जगत में जिन लोगों ने करोड़ों के जीवन–मरण का भार कंधे पर लिया है वे उपेक्षा भी नहीं कर सकते। जरा सी गफलत हुई कि सारे संसार में आपके विरुद्ध जहरीला वातावरण तैयार हो जाएगा। आधुनिक युग का यह एक बड़ा भारी अभिशाप है कि गलत बातं बड़ी तेजी से फैल जाती हैं।समाचारों के शीघ्र आदान–प्रदान के साधन इस युग में बड़े प्रबल हैं, जबकि धैर्य और शांति से मनुष्य की भलाई के लिए सोचने के साधन अब भी बहुत दुर्बल हैं। सो, जहाँ हमें चुप होना चाहिए, वहाँ चुप रह जाना खतरनाक हो गया है। हमारा सारा साहित्य नीति और सच्चाई का साहित्य है। भारतवर्ष की आत्मा कभी दंगा–फसाद और टंटे को पसंद नहीं करती परंतु इतनी तेजी से कूटनीति और मिथ्या का चक्र चलाया जा रहा है कि हम चुप नहीं बैठ सकते।अगर लाखों–करोड़ों की हत्या से बचना है तो हमें टंटे में पड़ना ही होगा। हम किसी को मारना नहीं चाहते पर कोई हम पर अन्याय से टूट पड़े तो हमें जरूर कुछ करना पड़ेगा। हमारे अंदर हया है और अन्याय करके पछताने की जो आदत है उसे कोई हमारी दुर्बलता समझे और हमें सारी दुनिया के सामने बदनाम करे यह हमसे नहीं सहा जाएगा। सहा जाना भी नहीं चाहिए। सो, हालत यह है कि हम सच्चाई और भद्रता पर दृढ़ रहते हैं और ओछे वाद–विवाद और दंगे–फसादों में नहीं पड़ते। राजनीति कोई अजपा–जाप तो है नहीं।यह स्वार्थों का संघर्ष है। करोड़ों मनुष्यों की इज्जत और जीवन–मरण का भार जिन्होंने उठाया है वे समाधि नहीं लगा सकते। उन्हें स्वार्थों के संघर्ष में पड़ना ही पड़ेगा और फिर भी हमें स्वार्थी नहीं बनना है।

प्रश्नः 1.गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–अन्याय का प्रतिकार।
प्रश्नः2. लखक ने किसे कठिन समस्या माना है और क्यों?
उत्तरः लेखक ने बताया है कि अफवाहों के दौर में शांत रहना बहुत कठिन है क्योंकि राजनीति अफवाहों के जरिए दंगे करवाती है। ऐसी स्थिति में संघर्ष अनिवार्य है।
प्रश्नः 3. आधुनिक युग का अभिशाप किसे माना गया है और क्यों?
उत्तरः आधुनिक युग का अभिशाप गलत बातों का तेजी से फैलना है क्योंकि गलत बात का प्रचार संचार साधन तेजी से करते हैं और भलाई के साधन सीमित है।
प्रश्नः 4.चुप रहना कब खतरनाक होता है, कैसे?
उत्तरःलेखक का मानना है कि गलत प्रचार पर चुप रहना खतरनाक होता है क्योंकि दंगा–फसाद आदि से लाखों की हत्या हो सकती है। अतः उनका विरोध करना अनिवार्य हो जाता है।
प्रश्नः 5.भारतवर्ष की कोई एक विशेषता गद्यांश के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
उत्तरःभारतवर्ष की विशेषता है कि वह दंगा–फसाद व टंटे को पसंद नहीं करता। वह स्वार्थ को दूर रखता है, परंतु अन्यायी को नष्ट करता है।
प्रश्नः 6लखक ने संघर्ष करना क्यों आवश्यक माना है?
उत्तरः लेखक ने संघर्ष को आवश्यक माना है, क्योंकि जन की हानि से बचने के लिए दुष्टों का अंत करना अनिवार्य है।
प्रश्नः 7.आशय स्पष्ट कीजिए
'राजनीति कोई अजपा–जाप तो है नहीं।'
उत्तरः इसका अर्थ है कि राजनीति सब कुछ नहीं है। यह स्वार्थों का संघर्ष है।

7. विषमता शोषण की जननी है। समाज में जितनी विषमता होगी, सामान्यतया शोषण उतना ही अधिक होगा। चूँकि हमारे देश में सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक व सांस्कृतिक असमानताएँ अधिक हैं जिसकी वजह से एक व्यक्ति एक स्थान पर शोषक तथा वही दूसरे स्थान पर शोषित होता है चूँकि जब बात उपभोक्ता संरक्षण की हो तब पहला प्रश्न यह उठता है कि उपभोकता किसे कहते हैं? या उपभोक्ता की परिभाषा क्या

है? सामान्यतः उस व्यक्ति या व्यक्ति समूह को उपभोक्ता कहा जाता है जो सीधे तौर पर किन्हीं भी वस्तुओं अथवा सेवाओं का उपयोग करते हैं। इस प्रकार सभी व्यक्ति किसी–न–किसी रूप में शोषण का शिकार अवश्य होते हैं।हमारे देश में ऐसे अशिक्षित, सामाजिक एवं आर्थिक रूप से दुर्बल अशक्त लोगों की भीड है जो शहर की मलिन बस्तियों में, फुटपाथ पर, सड़क तथा रेलवे लाइन के किनारे, गंदे नालों के किनारे झोंपड़ी डालकर अथवा किसी भी अन्य तरह से अपना जीवन–यापन कर रहे हैं। वे दुनिया के सबसे बड़े प्रजातांत्रिक देशों की समाजोपायोगी उर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित हैं, जिन्हें आधुनिक सफेदपोशों, व्यापारियों, नौकरशाहों एवं तथाकथित बुद्धिजीवी वर्ग ने मिलकर बाँट लिया है। सही मायने में शोषण इन्हीं की देन है।उपभोक्ता शोषण का तात्पर्य केवल उत्पादकता व व्यापारियों द्वारा किए गए शोषण से ही लिया जाता है जबकि इसके क्षेत्र में वस्तुएँ एवं सेवाएँ दोनों ही सम्मिलित हैं, जिनके अंतर्गत डॉक्टर, शिक्षक, प्रशासनिक अधिकारी, वकील सभी आते हैं। इन सबने शोषण के क्षेत्र में जो कीर्तिमान बनाए हैं वे वास्तव में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज कराने लायक हैं।

प्रश्नः 1. गद्यांश का समुचित शीर्षक लिखिए।
उत्तरःशीर्षक–उपभोक्ता शोषण।
प्रश्नः 2.'ऊर्ध्वमुखी योजनाओं से वंचित है'–वाक्य का आशय समझाइए।उत्तरः
इस वाक्य का आशय है कि भारत में गरीब व अधिकारहीन लोग अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं है। अतरू वे शोषण के शिकार होते हैं। इस कारण वे देश के विकास के लिए बनी योजनाओं के लाभों से वंचित रहते है।
प्रश्नः 3.विषमता शोषण की जननी है'–कैसे? स्पष्ट कीजिए
उत्तरःविषमता के कारण शोषण का जन्म होता है। समाज में धन, सत्ता, धर्म आदि के आधार पर लोग बँटे हुए है। समर्थ व्यक्ति दूसरे का शोषण कर स्वयं को बड़ा दर्शाता है। हर व्यक्ति एक जगह शोषक है दूसरी जगह शोषित।
प्रश्नः 4.उपभोक्ता शोषण से क्या आशय है? इसकी सीमाएँ कहाँ तक हैं ?
उत्तरःवस्तुओं और सेवाओं का उपभोग करने वाला उपभोक्ता होता है। व्यापारी, उत्पादक, सेवा प्रदाता वर्ग उपभोक्ता को गुमराह कर ठगते है। इस शोषण में डॉक्टर, अफसर, दुकानदार, कंपनियाँ, वकील आदि सभी शामिल है।
प्रश्नः 5.देश की समाजोपयोगी योजनाओं से कौन–सा वर्ग वंचित रह जाता है और क्यों?
उत्तरःदेश की समाजोपयोगी योजनाओं से अशिक्षित, सामाजिक व आर्थिक रूप से पिछड़ा वर्ग वंचित रह जाता है क्योंकि वे सिर्फ जीवनयापन तक ही सोचते हैं। योजनाओं के लाभ अफसर, व्यवसायी व नेता लोग मिलकर खा जाते हैं।
प्रश्नः 6.उपभोक्ता किसे कहते हैं ? उपभोक्ता शोषण का मुख्य कारण क्या है?
उत्तरःजो वस्तुओं व सेवाओं का उपभोग करें, उसे उपभोक्ता कहते है। अज्ञानता, अशक्तता आदि के कारण उपभोक्ता शोषित होता है।
प्रश्नः 7.सामान्यतः शोषण का दोषी किसे कहा जाता है और क्यों?
उत्तरःसामान्यतः शोषण का दोषी सफेदपोश राजनीतिज्ञों, नौकरशाहों, व्यापारियों व तथाकथित बुद्धिजीवियों को माना जाता है क्योंक वे अपने सामर्थ्य के बल पर सरकारी याजनाओं के लाभ स्वयं ले लेते हैं।

8. लोकतंत्र के तीनों पायों–विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का अपना–अपना महत्त्व है, किंतु जब प्रथम दो अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होती हैं या संविधान के दिशा–निर्देशों की अवहेलना होती है, तो न्यायपालिका का विशेष महत्त्व हो जाता है। न्यायपालिका ही है जो हमें आईना दिखाती है, किंतु आईना तभी उपयोगी होता है, जब उसमें दिखाई देने वाले चेहरे की विद्रूपता को सुधारने का प्रयास हो। सर्वोच्च न्यायालय के अनेक जनहितकारी निर्णयों को कुछ लोगों ने न्यायपालिका की अतिसक्रियता माना, पर जनता को लगा कि न्यायालय सही है। राजनीतिक चश्मे से देखने पर भ्रम की स्थिति हो सकती है।प्रश्न यह है कि जब संविधान की सत्ता सर्वोपरि है, तो उसके अनुपालन में शिथिलता क्यों होती है। राजनीतिक–दलगत स्वार्थ या निजी हित आड़े आ जाता है और यही भ्रष्टाचार को जन्म देता है। हम कसमें खाते हैं जनकल्याण की और कदम उठाते हैं आत्मकल्याण के। ऐसे तत्वों से देश को, समाज को सदा खतरा रहेगा। अतः जब कभी कोई न्यायालय ऐसे फैसले देता है, जो समाज कल्याण के हों और राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हों, तो जनता को उसमें आशा की किरण दिखाई देती है। अन्यथा तो वह अंधकार में जीने को विवश है ही।

प्रश्नः 1.गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–लोकतंत्र और न्यायपालिका।
प्रश्नः2 लोकतंत्र में न्यायपालिका कब विशेष महत्त्वपूर्ण हो जाती है? क्यों?
उत्तरःलोकतंत्र में न्यायपालिका तब महत्त्वपूर्ण हो जाती है जब विधायिका और कार्यपालिका अपने मार्ग या उद्देश्य के प्रति शिथिल होती है या संविधान के दिशानिर्देशों की अवहेलना होती है।
प्रश्नः 3.आईना दिखाने का तात्पर्य क्या है? और न्यायपालिका कैसे आईना दिखाती है?
उत्तरः'आईना दिखाने' से तात्पर्य है–असलियत बताना। न्यायपालिका अपने निर्णयों से कार्यपालिका व विधायिका को उनकी सीमाओं व कर्तव्यों का स्मरण कराती है।
प्रश्नः4.'चेहरे की विद्रूपता' से क्या तात्पर्य है और यह संकेत किनके प्रति किया गया है?
उत्तरःइसका तात्पर्य है कि चेहरे पर ओढ़ा हुआ कुटिल उपहास। कार्यपालिका व विधायिका जनकल्याण के नाम कार्य करके अपने हित साधती हैं।
प्रश्नः 5.भ्रष्टाचार का जन्म कब और कैसे होता है?
उत्तरःभ्रष्टाचार का जन्म तब होता है जब राजनीतिक दल स्वार्थ या निजी हित के चक्कर में जनकल्याण के नाम पर आत्मकल्याण के कार्य करते हैं।
प्रश्नः6 जनता को आशा की किरण कहाँ और क्यों दिखाई देती है ?
उत्तरःजनता को आशा की किरण न्यायपालिका से दिखाई देती है क्योंकि न्यायालय ही समाज कल्याण के फैसले लेकर राजनीतिक ठेकेदारों को उनकी औकात बताते हैं।
प्रश्नः 7.आशय स्पष्ट कीजिए 'अन्यथा तो वह अंधकार में जीने को विवश है ही।'
उत्तरःइसका अर्थ है कि जनता न्यायालय के निर्णयों से ही कुछ लाभ ले पाती है अन्यथा भ्रष्टाचार के कारण उन्हें सदैव हानि ही होती है।

9 बड़ी चीजें संकटों में विकास पाती हैं, बड़ी हस्तियाँ बड़ी मुसीबतों मं पलकर दुनिया पर कब्जा करती हैं। अकबर ने तेरह साल की उम्र में अपने पिता के दुश्मन को परास्त कर दिया था, जिसका एकमात्र कारण यह था कि अकबर का जन्म रेगिस्तान में हुआ था और वह भी उस समय, जब उसके पिता के पास एक कस्तूरी को छोड़कर और कोई दौलत नहीं थी। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे, मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई, क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी, क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। विंस्टन चर्चिल ने कहा है कि जिंदगी की सबसे बड़ी सिफत हिम्मत है। आदमी के और सारे गुण उसके हिम्मती होने से पैदा होते हैं। जिंदगी की दो ही सूरतें हैं। एक तो आदमी बड़े–से–बड़े मकसद के लिए कोशिश करे, जगमगाती हुई जीत पर पंजा डालने के लिए हाथ बढ़ाए और अगर असफलताएँ कदम–कदम पर जोश की रोशनी के साथ अँधियाली या जाल बुन रही हों, तब भी वह पीछे को पाँव न हटाए–दूसरी सूरत यह है कि उन गरीब आत्माओं का हमजोली बन जाए, जो न तो बहुत अधिक सुख पाती हैं और न जिन्हें बहुत अधिक दुख पाने का ही संयोग है, क्योंकि वे आत्माएँ ऐसी गोधूलि में बसती हैं, जहाँ न तो जीत हँसती है और न कभी हार के रोने की आवाज सुनाई देती है।ठस गोधूलि वाली दुनिया के लोग बँधे हुए घाट का पानी पीते हैं वे जिंदगी के साथ जुआ नहीं खेल सकते। और कौन कहता है कि पूरी जिंदगी को दाँव पर लगा देने में कोई आनंद नहीं है? अगर रास्ता आगे ही निकल रहा हो, तो फिर असली मजा तो पाँव बढ़ाते जाने में ही है। साहस की जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है। ऐसी जिंदगी की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य की पहली पहचान यह है कि वह इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं।ज्नमत की उपेक्षा करके जीने वाला आदमी दुनिया की असली ताकत होता है और मनुष्यता को प्रकाश भी उसी आदमी से मिलता है। अड़ोस–पड़ोस को देखकर चलना, यह साधारण जीव का काम है। क्रांति करने वाले लोग अपने उद्दश्य की तुलना न तो पड़ोसी के उद्देश्य से करते हैं और न अपनी चाल को ही पड़ोसी की चाल देखकर मद्धिम बनाते हैं।

प्रश्नः1 गद्यांश में अकबर का उदाहरण क्यों दिया गया है?
उत्तरःगद्यांश में लेखक अकबर के उदाहरण के माध्यम से बताना चाहता है कि अकबर ने छोटी उम्र में दुश्मनों को परास्त किया क्योंकि उसने संकटों को झेला था।
प्रश्नः 2.पांडवों की विजय का क्या कारण था?
उत्तरःपांडवों की विजय का कारण था क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था।
प्रश्नः 3.साहस की जिंदगी को सबसे बड़ी जिंदगी क्यों कहा गया है?
उत्तरःसाहस को जिंदगी सबसे बड़ी जिंदगी होती है क्योंकि वह बिलकुल निडर व बेखौफ होती है। साहसी मनुष्य कभी तमाशे की परवाह नहीं करते।
प्रश्नः 4.दुनिया की असली ताकत किसे कहा गया है और क्यों ?
उत्तरःदुनिया की असली ताकत वे आदमी हैं जो जनमत की उपेक्षा करके जीते हैं। ऐसे लोग नए रास्तों पर चलकर मनुष्यता को प्रकाश देते हैं।
प्रश्नः 5.क्रांतिकारियों के क्या लक्षण हैं ?
उत्तरःक्रांतिकारी अपने अड़ोस–पड़ोस के अनुसार कार्य नहीं करते। वे उनसे अपनी तुलना भी नहीं करते।
प्रश्नः6 जिंदगी की कौन–सी सूरत आपको अच्छी लगती है और क्यों?
उत्तरःहमें जिंदगी की वह सूरत अच्छी लगती है जिसमें हम मकसद के लिए कोशिश करें और विपरीत स्थिति में भी पीछे न हो।
प्रश्नः 7.गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक लिखिए।
उत्तरःशीर्षक–साहस और जिंदगी।

10. वैज्ञानिक अनुसंधानों एवं औद्योगिक प्रगति के पूर्व के मनोरंजन एवं आज के युग में उपलब्ध मनोरंजन में तथा इससे संबंधित हमारी आवश्यकताओं एवं अभिरुचि में बहुत अधिक अंतर आ गया है। पहले मनोरंजन का उद्देश्य मात्र मनोरंजन होता था और यह प्रक्रिया धार्मिक एवं सामाजिक भावों से संलग्न थी। ऐसा मनोरंजन व्यक्तित्व के गठन एवं स्वस्थ दृष्टिकोण के उन्नयन में सहायक होता था किंतु आज इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य 'अर्थप्राप्ति' हो गया है।संभवतः इसी कारण मनोरंजन का स्वरूप पूर्णतः बदल गया है। आधुनिक परिवेश में मनोरंजन का जो भी रूप उपलब्ध है, वह हमारे व्यक्तित्व के गठन पर कुठाराघात करता है, आदर्शों को झुठलाता है, अस्वस्थ अभिरुचि एवं दृष्टिकोण को प्रोत्साहन देता है या जीवन के सब्जबाग दिखाता है जो जीने योग्य नहीं है। यह रूप व्यक्ति, समाज और विशेषकर हमारी भावी पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है।मनोरंजन से संबद्ध विभिन्न संस्थाएँदृअभद्र सिनेमा नृत्यशालाएँ, फैशन परेड आदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति एवं समाज के जीवन को विकृत कर रहे हैं। बड़े–बड़े नगरों की नृत्यशालाओं एवं नाइट क्लबों में मनोरंजन के नाम पर जो गतिविधियाँ संपन्न होती हैं वे तथाकथित आधुनिक एवं प्रगतिशील विचारधारा से भले ही समर्थित हों, किंतु स्वस्थ भारतीय दृष्टिकोण के अनुसार तो वे पश्चिमी देशों की अंधी नकल ही हैं।इनके समर्थक यह भूल जाते हैं कि उनका मानसिक गठन, संस्कार, रीति–रिवाज तथा जीवन–पद्धति पश्चिमी देशों से एकदम भिन्न है। इस प्रकार देश में मनोरंजन के नाम पर जो भी भौंडापन उपलब्ध है–वह विघटन का स्रोत है, विकारों का जनक है एवं क्षयग्रस्त जीवन का पर्याय है।

प्रश्नः 1.वैज्ञानिक प्रगति से पूर्व और बाद के मनोरंजन के स्वरूप और हमारी सोच में मूल अंतर क्या है?
उत्तरःवैज्ञानिक प्रगति से पूर्व और बाद के मनोरंजन के स्वरूप और हमारी सोच में यह मूल परिवर्तन आया है कि पहले मनोरंजन का उद्देश्य केवल मनोरंजन था, परंतु आज इसका उद्देश्य धन कमाना भी हो गया है।
प्रश्नः 2.वैज्ञानिक युग से पहले और बाद के मनोरंजन के रूप–परिवर्तन का क्या कारण है ?
उत्तरःवैज्ञानिक युग से पहले और बाद के मनोरंजन के साथ परिवर्तन का कारण यह है कि पहले मनोरंजन की प्रक्रिया धार्मिक व सामाजिक भावों से युक्त होती थी, परंतु आज धन का प्रभाव बढ़ गया है।
प्रश्नः 3.आधुनिक मनोरंजन जीवन को कैसे प्रभावित कर रहा है ?
उत्तरःआधुनिक मनोरंजन आदर्शों को झुठलाकर अस्वस्थ अभिरुचि व दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है। यह ऐसे जीवन के सब्जबाग दिखाता है जो जीने योग्य नहीं है।
प्रश्नः 4.कैसे कहा जा सकता है कि मनोरंजन का एक विशेष स्वरूप भावी पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है?.
उत्तरःआज मनोरंजन से संबद्ध अनेक संस्थाएँ जैसेय अभद्र सिनेमा, नृत्यशालाएँ, फैशन परेड आदि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप स व्यक्ति व समाज के जीवन को विकृत कर रहे हैं। अस्वस्थ अभिरुचि व दृष्टिकोण को बढ़ाने वाला यह मनोरंजन भावी पीढ़ी को भ्रमित कर रहा है।

प्रश्नः 5.पश्चिमी देशों का अंधानुकरण किसे कहा है और क्यों?
उत्तरःलेखक कहता है कि महानगरों की नृत्यशालाएँ, नाइटक्लब, पश्चिमी देशों का अंधानुकरण है। इनमें मनोरंजन के नाम गलत गतिविधियाँ संपन्न होती हैं।
प्रश्नः 6.मनोरंजन के नाम पर 'भौंडापन' किसे कहा गया है? उसके क्या परिणाम हुए हैं?
उत्तरः मनोरंजन के नाम पर भौंडापन अभद्र सिनेमा, फैशन परेड, नाइटक्लब, नृत्यशालाओं द्वारा प्रस्तुत गतिविधियों में दिखता है। इनका गठन, संस्कार, रीतिरिवाज तथा जीवन पद्धति भारत से अलग है। यह भौंडापन विघटन का स्रोत है, विकारों का जनक है तथा क्षयग्रस्त जीवन का स्रोत है।
प्रश्नः 7.गद्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–मनोरंजन पर पाश्चात्य प्रभाव।

11. भविष्य की दुनिया पर ज्ञान और ज्ञानवानों का अधिकार होगा। इसलिए शैक्षिक नीतियों को उन मूलभूत संरचनात्मक परिवर्तनों का अभिन्न अंग होना चाहिए जिनके बिना नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था सपना मात्र रह जाएगी। इसका लक्ष्य उन भाग्यवादी विचारों का सफाया होना चाहिए जो यह प्रचारित करते हैं कि निर्धनता प्रकृति की देन है और यह कि अभावग्रस्त लोगों को उसी तरह निर्धनता को सहना चाहिए जैसे कि प्राकृतिक आपदाओं को। उन लोगों की बदधि ठीक करनी चाहिए जो निर्धनता की खोखली आध्यात्मिकता में आत्मतोष ढूँढ़ते हैं और उनको भी जा समृद्धि को उपभोक्तावादी संस्कृति में जीवन का अर्थ और उद्देश्य देखते हैं।नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था के निर्माण में शिक्षा को महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। जब तक इन भविष्यवादी प्रतिमानों की इस भयंकर सीमा को दूर नहीं किया जाता, दुनिया दो नहीं, तीन भागों में बँटकर रह जाएगी जिसकी ओर यूनेस्को के एक अध्ययन ने ध्यान दिलाया है रू "सबसे नीचे प्राथमिक (बेसिक) शिक्षा और वंशगत कार्य तथा निर्वाहमूलक श्रमवाले देश होंगेय बीच में व्यावसायिक शिक्षा सहित माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक के, कुछ साधारण छंटाई–सफाई (प्रोसेसिंग) करने वाले देश होंगे तथा सबसे ऊपर वे देश होंगे जहाँ हर व्यक्ति किसी विश्वविद्यालय का स्नातक होगा और विशालकाय वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी आधारवाले अत्यंत शोधमूलक उदयोगों में कार्य कर रहा होगा।"आधुनिक युग की त्रासदी यह है कि तीसरी दुनिया इस समय भी तीसरी और चौथो दुनियाओं में बँटती चली जा रही है और विकासशील देश अल्पविकसित और अल्पतमविकसित देशों में बँट रहे हैं। असमानता को फैलाने की इस प्रक्रिया में दुर्भाग्य से शिक्षाप्रणाली महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

प्रश्नः 1. उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरः शीर्षक–शिक्षा प्रणाली और असमानता।
प्रश्नः
: 2.नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था कब सपना मात्र रह जाएगी?
उत्तरःनई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था तब सपना मात्र रह जाएगी जब तक शैक्षिक नीतियों को मूलभूत संरचनात्मक परिवर्तन का अभिन्न अंग नहीं बना दिया जाएगा।
प्रश्नः 3. शिक्षा के क्षेत्र में भाग्यवादी विचार क्या प्रचारित करते हैं?
उत्तरःशिक्षा के क्षेत्र में भाग्यवादी यह प्रचार करते हैं कि निर्धनता प्रकृति की देन है। गरीब लोगों को निर्धनता उसी तरह सहन करनी चाहिए जैसे कि प्राकृतिक आपदाओं को सहन करते हैं
प्रश्नः 4.लेखक किन लोगों की बुद्धि ठीक करने की बात करता है? क्यों?
उत्तरःलेखक उन लोगों की बुद्धि ठीक करने की बात करता है जो निर्धनता की खोखली आध्यात्मिकता में आत्मतोष ढूँढ़ते हैं और उनको भी जो समृद्धि को उपभोक्तावादी संस्कृति में जीवन का अर्थ और उद्देश्य देखते हैं।
प्रश्नः 5.भविष्यवादी प्रतिमानों को ठीक न करने का मुख्य परिणाम क्या होगा?
उत्तरःभविष्यवादी प्रतिमानों को ठीक न करने का मुख्य परिणाम यह होगा कि दुनिया दो नहीं तीन भागों में बँटकर रह जाएगी।
प्रश्नः6.यूनेस्को ने अपने अध्ययन में क्या आशंका जताई है?
उत्तरःयूनेस्को ने आशंका जताई कि सबसे नीच प्राथमिक शिक्षा और वंशगत कार्य तथा निर्वाहमूलक श्रमवाले देश होंगे, बीच में व्यावसायिक शिक्षा सहित माध्यमिक शिक्षा के स्तर तक के कुछ साधारण छंटाई–सफाई करने वाले देश होंगे तथा सबसे ऊपर वे देश होंगे जहाँ हर व्यक्ति स्नातक होगा तथा विशालकाय वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी आधारवाले शोधमूलक उद्योगों में कार्य कर रहा होगा।

CBSE BINDER

प्रश्नः 7. आधुनिक युग की त्रासदी किसे कहा गया है? क्यों?
उत्तरःआधुनिक युग की त्रासदी यह है कि तीसरी दुनिया भी तीसरी व चौथी दुनिया में बँट रही है क्योंकि शिक्षा प्रणाली को वे अपना नहीं रहे हैं।

12. आज किसी भी व्यक्ति का सबसे अलग एक टापू की तरह जीना संभव नहीं रह गया है। भारत में विभिन्न पंथों और विविध मत–मतांतरों के लोग साथ–साथ रह रहे हैं। ऐसे में यह अधिक जरूरी हो गया है कि लोग एक–दूसरे को जानेंय उनकी जरूरतों को, उनकी इच्छाओं–आकांक्षाओं को समझें उन्हें तरजीह दें और उनके धार्मिक विश्वासों, पद्धतियों, अनुष्ठानों को सम्मान दें। भारत जैसे देश में यह और भी अधिक जरूरी है, क्योंकि यह देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है। स्वामी विवेकानंद इस बात को समझते थे आर अपने आचार–विचार में अपने समय से बहुत आगे थे।डनका दृढ़ मत था कि विभिन्न धर्मों–संप्रदायों के बीच संवाद होना ही चाहिए। वे विभिन्न धर्मों–संप्रदायों की अनेकरूपता को जायज और स्वाभाविक मानते थे। स्वामी जी विभिन्न धार्मिक आस्थाओं के बीच सामंजस्य स्थापित करने के पक्षधर थे और सभी को एक ही धर्म का अनुयायी बनाने के विरुद्ध थे। वे कहा करते थे, "यदि सभी मानव एक ही धर्म को मानने लगें, एक ही पूजा–पद्धति को अपना लें और एक–सी नैतिकता का अनुपालन करने लगें, तो यह सबसे दुर्भाग्यपूर्ण बात होगी, क्योंकि यह सब हमारे धार्मिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्राणघातक होगा तथा हमें हमारी सांस्कृतिक जड़ों से काट देगा।"

प्रश्नः 1.उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरःशीर्षक–भारतीय धर्म और संवाद।
प्रश्नः2.टापू किसे कहते हैं ? 'टापू की तरह' जीने से लेखक का क्या अभिप्राय है?
उत्तरः'टापू' समुद्र के मध्य उभरा भू–स्थल होता है जिसके चारों तरफ जल होता है। वह मुख्य भूमि से अलग होता है। 'टापू की तरह' जीने से लेखक का अभिप्राय है–समाज की मुख्य धारा से कटकर रहना।
प्रश्नः 3.'भारत जैसे देश में यह और भी अधिक जरूरी है।' क्या जरूरी है और क्यों?
उत्तरःभारत में अनेक धर्म, मत व संप्रदाय है। अतः यहाँ एक–दूसरे को जानना, जरूरत समझना तथा इच्छाओं–आकांक्षाओं को समझना होगा। सभी लोगों को दूसरे के धार्मिक विश्वासों, पद्धतियों–अनुष्ठानों को सम्मान देना चाहिए।
प्रश्नः 4.स्वामी विवेकानंद को 'अपने समय से बहुत आगे' क्यों कहा गया है?
उत्तरःस्वामी विवेकानंद को अपने समय से बहुत आगे कहा गया है क्योंकि वे जानते थे कि भारत में एक धर्म, मत या विचारधारा नहीं चल सकती। उनमें संवाद होना अनिवार्य है।
प्रश्नः5.स्वामी जी के मत में सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति क्या होगी और क्यों?
उत्तरःस्वामी जी के मत में सबसे दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति वह होगी जब सभी व्यक्ति एक धर्म, पूजा–पद्धति व नैतिकता का अनुपालन करने लगेंगी। इससे यहाँ धार्मिक व आध्यात्मिक विकास रुक जाएगा।
प्रश्नः6.भारत में साथ–साथ रह रहे किन्हीं चार धर्मों और मतों के नाम लिखिए।
उत्तरःभारत में साथ–साथ रहे चार धर्म है–हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई । चार मत है–शैव, वैश्णव, निम्बार्क व आर्य समाजी मत।
प्रश्नः7.'यह देश किसी एक धर्म, मत या विचारधारा का नहीं है।'–उपर्युक्त वाक्य को संयुक्त वाक्य में बदलिए।
उत्तरःयह देश न किसी एक धर्म का है और न किसी मत या विचारधारा का।

13. साहित्य का जीवन के साथ गहरा संबंध है। साहित्यकार अपनी पैनी दृष्टि से देखता है और संवेदनशील मन से उसको अभिव्यक्त करता है। चारों ओर देखे गए सत्य और भोगे हुए यथार्थ को कभी कल्पना के रंग में रंगकर, तो कभी ज्यों–कात्यों पाठक के सामने प्रस्तुत कर देता है। साहित्यकार में सौंदर्य को देखने और परखने की अदभुत शक्ति होती है। मनोरम दृश्यों के सौंदर्य और मुग्ध कर देने वाले स्वरों की मधुरता से वह अकेले ही आनंदमग्न नहीं होना चाहता। वह दूसरों को भी आनंदमग्न करने के लिए सदा आतुर रहता है। साहित्यकार जब समाज को अपने मन की बात सुनाता है, तो साहित्यकार और समाज का संबंध स्पष्ट दिखाई पड़ता है।स्माज की रूढ़ियों और विद्रूपताओं को उजागर कर वह जनमानस को जागृत करता है। उन्हें बताता है कि जो कुछ पुराना है, वह सोना ही हो–यह आवश्यक नहीं। हमें जकड़ने वाली, पीछे धकेलने वाली रूढ़ियों

से छुटकारा पाना होगा। इस प्रकार साहित्यकार समाज का पथ–प्रदर्शक भी है और पथ–निर्माता भी। वह समाज को परिवर्तन और क्रांति के लिए भी तैयार करता है। यह सत्य है कि अनेक साहित्यिक रचनाएँ क्रांति की आधारशिला रखने में समर्थ हुई हैं। इसलिए साहित्य को केवल मनोरंजन की वस्तु मानना अपनी आँखों पर पट्टी बाँधकर सूर्य को नकारना है।

प्रश्नः1. उपर्युक्त गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तरः शीर्षक–साहित्यकार और समाज।
प्रश्नः 2.साहित्यकार की दृष्टि और मन के लिए प्रयुक्त विशेषणों का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तरःसाहित्यकार की दृष्टि के लिए 'पैनी' व मन के लिए 'संवेदनशील' विशेषण का प्रयोग किया गया है। साहित्यकार समाज की हर घटना का सूक्ष्मता से विश्लेषण करके उसे मानवीय भावनाओं के अनुरूप अभिव्यक्त करता है।
प्रश्नः 3.साहित्यकार सत्य को पाठक के समक्ष कैसे रहता है?
उत्तरःसाहित्यकार अपने आसपास के सत्य को कभी यथार्थ रूप में अभिव्यक्त करता है तो कभी कल्पना के रंग में भरकर प्रस्तुत करता है।
प्रश्नः 4.साहित्यकार और समाज का संबंध कब दिखाई पड़ता है?
उत्तरःजब साहित्यकार घटनाओं से उद्वेलित होकर मन की बात समाज को सुनाता है, तब साहित्यकार और उस समाज का संबंध प्रत्यक्ष हो जाता है।
प्रश्नः 5.साहित्यकार को समाज का पथ–निर्माता और पथ–प्रदर्शक क्यों कहा गया है?
उत्तरः"साहित्यकार समाज का पथ प्रदर्शक व पथ निर्माता है क्योंकि वह समाज की कमियों को उजागर करता है। वह पुरानी रूढ़ियों को गलत बताता है। साथ ही वह नए विचार व सिद्धांत भी समाज के सामने रखता है।
प्रश्नः6 आशय स्पष्ट कीजिए 'अपनी आँख पर पट्टी बाँधकर सूर्य को नकारना।'
उत्तरःइसका अर्थ है–जानबूझकर सत्य को नकारना। लेखक कहता है कि आँख पर पट्टी बाँधने से सूर्य के अस्तित्व को नहीं नकारा जा सकता। इसी तरह साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है। यह समाज को राह दिखलाता है।
प्रश्नः 7.साहित्यकार समाज को परिवर्तन और क्रांति के लिए कैसे तैयार करता है?
उत्तरः साहित्यकार अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के सामने रूढ़ियों का नकारापन साबित करता है। वह जनमानस को संघर्ष के लिए तैयार करता है तथा नए विचार अपनाने की सलाह देता है।

CBSE BINDER

CBEO BHINDER

CBEO BHINDER

CBEO BHINDER